3 राजधानी
खत्म हुआ दुश्वारियों का झंझट

6 अभिमत
हिंदूवाद और हिंसा की अवधारणा

11 विदेश
कीव में रूस का हमला 31 लोगों की जान गई

12 स्पोर्ट्स
जयसूर्या श्रीलंका के अंतरिम कोच नियुक्त

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 256
लखनऊ, मंगलवार, 9 जुलाई, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

सरकार किसान उत्पादक संगठनों की समीक्षा करेगी

राष्ट्रीय-10

आतंकी हमले में जेसीओ, चार जवान बलिदान

● जम्मू-कश्मीर में सेना के वाहन को बनाया निशाना, दहशतगर्दों के खिलाफ गहन अभियान जारी

मोहित कंडारी। जम्मू

कठुआ जिले की बिलावर तहसील के लोहाई मल्हार ब्लॉक के तहत मछेड़ी के बदनोटा गांव के पास सोमवार को सेना के वाहन पर आतंकी हमले में सेना के एक जेसीओ तथा चार जवान बलिदान हो गए और पांच अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। यह क्षेत्र भारतीय सेना की 9वीं कोर के अंतर्गत आता है। यह हमला 9 जून को रियासी जिले में विदेशी आतंकवादियों के एक समूह द्वारा एक तीर्थयात्री बस को निशाना बनाने के एक महीने बाद हुआ था जिसमें नौ नागरिक मारे गए थे और 41 अन्य घायल हो गए थे। रविवार सुबह सीमावर्ती राजौरी जिले में आतंकवादियों के एक अन्य समूह द्वारा सेना की एक चौकी पर इसी तरह के हमले का प्रयास किया गया था। हालाँकि, सतर्क सैनिकों ने उसे खदेड़ दिया था।

प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार, आतंकवादियों के एक समूह ने एक प्रमुख पहाड़ी क्षेत्र पर पहले ग्रेनेड फेंककर और बाद में अंधाधुंध गोलीबारी करके सेना के वाहन को निशाना बनाया। आतंकवादियों ने सेना के वाहन को निशाना बनाने से पहले कोहरे के मौसम और खराब सड़क की स्थिति का भी फायदा उठाया। भारी गोलीबारी के दौरान कई सैनिक बुरी तरह घायल हो गए। आतंकवादियों के बारे में तुरंत पता नहीं चल सका क्योंकि घने जंगली इलाके में आतंकवाद विरोधी अभियान खबर लिखने तक जारी था। गोलीबारी की घटना की पुष्टि करते हुए, जम्मू-कश्मीर पुलिस के एक प्रवक्ता ने एक संक्षिप्त बयान में कहा, कठुआ जिले के माचेडी इलाके में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच गोलीबारी चल रही है। गोलीबारी के शुरुआती दौर में सेना के दो जवान घायल हो गए। बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान शुरू किया गया है।

इस बीच, आतंकवादियों के भागने के रास्ते बंद करने और उन्हें मार गिराने के लिए अतिरिक्त जवानों को घटनास्थल पर भेजा गया है। वरिष्ठ पुलिस और सेना अधिकारी चल रहे ऑपरेशन की निगरानी कर रहे हैं। सेना के अधिकारियों ने क्षेत्र के निवासियों को भारी गोलाबारी में चोटों से बचने के लिए घर के अंदर रहने और बाहर न निकलने की सलाह जारी की है। दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले में लगातार दो मुठभेड़ों में छह आतंकवादियों को मार गिराने के एक दिन बाद 1 सेकंड आरआर के कमांडर ब्रिगेडियर पृथ्वीराज चौहान ने सोमवार को दावा किया कि सुरक्षा बलों ने घाटी में पाकिस्तान समर्थक आतंकवादी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन को बड़ा झटका दिया है। दक्षिण कश्मीर में छह आतंकवादियों का मारा जाना हिज्बुल मुजाहिदीन के लिए एक बड़ा झटका है। सुरक्षा बल आतंकवादियों को अपने घरों में पनाह देने में स्थानीय लोगों की भूमिका की भी जांच कर रहे हैं। नियमित तलाशी के दौरान, सुरक्षा बलों को एक नागरिक आवास में अलमारी के पीछे छिपे एक मजबूत कंक्रीट ठिकाने पर नजर पड़ी।

वरिष्ठ सेना अधिकारी ने उन शहीद सैनिकों को भी श्रद्धांजलि अर्पित की जिन्होंने दोहरी मुठभेड़ों के दौरान कर्तव्य का पालन करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी। ब्रिगेडियर चौहान ने मीडियाकर्मियों को जानकारी देते हुए कहा कि ऑपरेशन के समापन के बाद हमने लगभग 6 किलोग्राम वजनी एक आईईडी को पाया और तत्काल क्षति को ध्यान में रखते हुए नष्ट कर दिया। मोडरगाम मुठभेड़ पर बोलते हुए, दक्षिण कश्मीर के डीआईजी जावेद अहमद माटू ने कहा कि दूसरे ऑपरेशन में दो आतंकवादी मारे गए। आदिल, जिसके खिलाफ विभिन्न पुलिस स्टेशनों में कई एफआईआर थीं, एक ऑपरेशन में मारा गया। दूसरी मुठभेड़ विशिष्ट सूचना के आधार पर चिन्निगम इलाके में हुई, जिसमें चार आतंकवादी मारे गए। इनमें श्रेणी ए का आतंकवादी यावर बशीर डार भी शामिल था। अन्य की पहचान तौहीद अहमद, शकील अहमद वानी और जहीर अहमद डार के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया। दोनों स्थानों पर ऐसे ठिकाने थे जिनका उपयोग आतंकवादी काफी समय से कर रहे थे।

नई दिल्ली में नीट मामले पर सोमवार को हुई सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट परिसर में पुनः परीक्षा की मांग करते विद्यार्थी

परीक्षा की शुचिता यदि नष्ट हुई है तो नीट टेस्ट दोबारा: सुप्रीम कोर्ट

पीटीआई। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि यदि मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी 2024 की शुचिता नष्ट हो गई है तो दोबारा परीक्षा का आदेश देना होगा। शीर्ष अदालत ने साथ ही राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी और सीबीआई से प्रश्नपत्र लीक होने के समय तथा लीक होने और वास्तविक परीक्षा के बीच की अवधि के बारे में जानकारी मांगी। उच्चतम न्यायालय ने पेपर लीक के लिए अपनाई गई कार्यप्रणाली की भी जानकारी मांगी। इसके साथ ही उसने गलत कृत्य करने वालों की संख्या के बारे में भी सवाल किया जिनकी अब तक पहचाने हुई है। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा, 'एक बात स्पष्ट है कि प्रश्नपत्र लीक हुआ है।'

पीठ ने कहा कि प्रश्नपत्र लीक की सीमा और भौगोलिक सीमाओं के पार लाभार्थियों का पता लगाना होगा, उसके बाद ही अदालत पांच मई को आयोजित हुई विवादास्पद मेडिकल प्रवेश परीक्षा में दोबारा परीक्षा कराने का आदेश दे सकती है। नीट-यूजी में अनियमितताओं का आरोप लगाने वाली याचिकाओं पर अगली सुनवाई के लिए 11 जुलाई की तारीख तय करते हुए शीर्ष अदालत ने केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के जांच अधिकारी को जांच की स्थिति को दर्शाने वाली रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया। सीबीआई कदाचार, ओएमआर शीट में हेरफेर, अभ्यर्थी के बदले किसी अन्य के परीक्षा देने और धोखाधड़ी के आरोपों की जांच कर रही है। पुनः परीक्षा के आदेश पर कानूनी स्थिति का उल्लेख करते हुए, शीर्ष अदालत ने कहा कि इसकी जांच करनी होगी कि क्या कथित उल्लंघन प्रणालीगत स्तर पर हुआ है, क्या उल्लंघन ने पूरी परीक्षा प्रक्रिया की शुचिता को प्रभावित किया है और क्या धोखाधड़ी के लाभार्थियों को बेदाग छात्रों से अलग करना संभव है।

पीठ ने कहा, ऐसी स्थिति में जहां उल्लंघन पूरी प्रक्रिया को प्रभावित करता है और लाभार्थियों को दूसरों से अलग करना संभव नहीं है, फिर से परीक्षा का आदेश देना आवश्यक हो सकता है। पीठ ने कहा कि राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) को गलत कृत्यों के लाभार्थियों की पहचान के लिए अब तक उठाए गए कदमों के बारे में खुलासा करना चाहिए। पीठ ने एनटीए से उन केंद्रों और शहरों की पहचान करने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी मांगी, जहां प्रश्नपत्र लीक हुए थे। पीठ ने साथ ही इसके लाभार्थियों की पहचान करने के लिए अपनाए गए तौर-तरीकों और अब (शेष पेज 9)

मास्को में सोमवार को हवाईअड्डे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

मोदी-पुतिन संबंधों को करेंगे मजबूत

पीएनएस/एजेंसियां। मॉस्को/नई दिल्ली

● पुतिन से शिखर वार्ता करने दो दिवसीय यात्रा पर मास्को पहुंचे प्रधानमंत्री

यूक्रेन पर मास्को के आक्रमण की शुरुआत के बाद से अपनी पहली यात्रा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऊर्जा, व्यापार और रक्षा के क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ शिखर वार्ता करने के लिए सोमवार को रूस की दो दिवसीय हाई-प्रोफाइल यात्रा पर मास्को पहुंचे। मोदी ने मॉस्को पहुंचते ही कहा कि वह भविष्य के क्षेत्रों में द्विपक्षीय साझेदारी को गहन बनाने को लेकर आशान्वित हैं और भारत तथा रूस के बीच मजबूत संबंधों से हमारे लोगों को बहुत लाभ मिलेगा। रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री डेनिस मांतुरोव ने वनुकोवो-2 हवाई अड्डे पर मोदी की अगवानी की। वह मोदी को हवाई अड्डे से उनके होटल तक छोड़ने उनके साथ गए। मांतुरोव ने चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग की रूस यात्रा के दौरान उनका भी स्वागत किया था।

मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, मॉस्को पहुंचा। हमारे देशों के बीच, खासतौर पर सहयोग के भविष्योन्मुखी क्षेत्रों में विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करने को लेकर आशान्वित हूं। उन्होंने कहा, हमारे देशों के बीच मजबूत संबंधों का हमारे लोगों को बहुत लाभ मिलेगा। यह पिछले पांच साल में मोदी की रूस की पहली यात्रा है। यह फरवरी 2022 में यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद उनकी पहली मॉस्को यात्रा है। यह मोदी के तीसरे कार्यकाल की पहली द्विपक्षीय विदेश यात्रा भी है। इससे पहले वह 2019 में रूस गए थे जहां उन्होंने सुदूर पूर्वी शहर व्लादिवोस्तक में एक आर्थिक सम्मेलन में भाग लिया था। पुतिन मॉस्को में 22वें भारत-रूस शिखर सम्मेलन के तहत मंगलवार को होने वाली वार्ता से पहले आज रात भारतीय प्रधानमंत्री (शेष पेज 9)

पंचकूला में बस पलटी, 50 स्कूली बच्चों समेत कई यात्री घायल

● हरियाणा के पिंजौर क्षेत्र में हुआ हादसा, दुर्घटना की जांच के आदेश, चालक तथा परिचालक निलंबित

शिखा शर्मा। चंडीगढ़

हादसे में जख्मी छात्रा को एंबुलेंस में लेकर जाते चिकित्साकर्मी।

पंचकूला के पिंजौर क्षेत्र में सोमवार की सुबह बस पलटने से सड़क हादसे में 50 स्कूली बच्चों समेत करीब 60 यात्री घायल हो गए। घायलों को पिंजौर, पंचकूला तथा चंडीगढ़ के अस्पतालों में भर्ती करवाया गया है। प्रारंभिक जांच के अनुसार सड़क की हालत खराब होने तथा ओवर स्पीड के कारण बस पलटी है। सामान्य की भांति हरियाणा रोडवेज की बस यात्रियों व स्कूली बच्चों को लेकर पिंजौर से रवाना हुई। बस पिंजौर के गांव नौलटा के पास पहुंची, यहां सड़क काफी खस्ताहालत में थी जिसके चलते बस पलट गई। बस में सवार दर्जनों स्कूली बच्चे तथा यात्री घायल हो गए। पुलिस ने सभी घायलों को आसपास के ग्रामीणों की मदद से पिंजौर व पंचकूला के अस्पतालों में भर्ती कराया गया। घायलों में एक महिला की हालत गंभीर होने के कारण उसे चंडीगढ़ पीजीआई में रैफर कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार खस्ता हाल सड़ तथा बस की ओवर स्पीड के कारण यह हादसा हुआ है। पंचकूला सीएमओ डॉ.मुक्ता कुमार के अनुसार पंचकूला नागरिक अस्पताल में 22 घायल बच्चों को लाया गया है। इसके अलावा पिंजौर व कालका में भी कुछ बच्चों व यात्रियों को भर्ती करवाया गया है। वहीं एक महिला जोकि बस से बाहर थी और नीचे खड़ी थी तो बस पलटने के बाद महिला उसके नीचे दब गई। उसे पीजीआई रेफर किया गया है। इस बीच हरियाणा के परिवहन मंत्री असीम गोयल ने हादसे की जांच के आदेश जारी करते हुए बस के चालक व परिचालक को निलंबित करने के आदेश जारी किए हैं। असीम गोयल ने बताया कि घटना की जांच के लिए कमेटी का गठन कर दिया गया है। सुबह के समय इस रूट पर दो नई बसें चलाने के आदेश भी जारी किए गए हैं। घायलों का हालचाल जानने अस्पताल पहुंचे पंचकूला के विधायक और विधानसभा स्पीकर ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि हादसे के वक्त बस ओवरलोड और स्पीड में चल रही थी। बस में स्कूली बच्चों के अलावा आईटीआई के छात्र भी थे।

हेमंत सोरेन ने हासिल किया विश्वास मत

पीटीआई। रांची

झारखंड में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन नीत गठबंधन सरकार ने सोमवार को विधानसभा से विपक्षी सदस्यों के बहिर्गमन के बीच विश्वास मत हासिल कर लिया। राज्य की 81 सदस्यीय विधानसभा में मनोनीत सदस्य ग्लेन जोसेफ गॉलस्टेन सहित कुल 45 विधायकों ने विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और अखिल झारखंड छात्र संघ (आजसू) के विधायक वोटिंग के लिए गिनती शुरू होते ही सदन से बाहर चले गए। भाजपा के नेतृत्व वाले विपक्ष में भाजपा के 24 और आजसू पार्टी के तीन विधायक हैं। विश्वास मत हासिल करने के बाद सोरेन ने कहा, आज एक बार फिर सबको सत्तारूढ़ गठबंधन की एकता और ताकत देखने को मिली। मैं (विधानसभा) अध्यक्ष और गठबंधन के सभी विधायकों का आभार जताता हूं। सोरेन ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) नीत गठबंधन 2019 में सत्ता में आने के बाद से संवैधानिक प्रक्रियाओं का पालन करते हुए शानदार प्रदर्शन कर रहा है और यह आज एक बार फिर देखने को मिला।

मुंबई पर टूटा बारिश का कहर, 50 उड़ानें रद्द

पीटीआई। मुंबई

मुंबई और आसपास के इलाकों में भारी बारिश के कारण पटरियों पर जलभराव के चलते मध्य रेलवे की उपनगरीय सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हुईं और हवाईअड्डे पर भी परिचालन पर असर पड़ा जिसके कारण सोमवार को 50 उड़ानें रद्द करनी पड़ीं। भारी बारिश के कारण शहर के कई निचले इलाकों में पानी भर गया, जिससे वाहनों की आवाजाही प्रभावित हुई और लोगों को जलमग्न सड़कों से गुजरते देखा गया। राज्य सरकार ने मुंबई, रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग जिलों के सभी स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिया है। मुंबई के कुछ इलाकों में सुबह सात बजे तक मात्र छह घंटों में 300 मिमी से अधिक बारिश हुई, जिससे सड़कें और निचले इलाके जलमग्न हो गए। पूरे दिन शहर में भारी बारिश हुई, जिससे निवासियों की परेशानी और बढ़ गई। महाराष्ट्र विधानमंडल के दोनों सदनों की कार्यवाही स्थगित कर दी गई, क्योंकि भारी बारिश के कारण कई सदस्य और अधिकारी विधान भवन नहीं पहुंच सके। महाराष्ट्र के राहत एवं पुनर्वास और आपदा प्रबंधन मंत्री अनिल पाटिल और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के विधान परिषद सदस्य (एमएलसी) अमोल मिटकरी हावड़ा-मुंबई ट्रेन से उतरकर कुछ दूर तक पटरियों पर चलते देखे गए जिसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर आया है।

मिटकरी ने कहा, ट्रेन करीब दो घंटे तक फंसी रही। हम दादर और कुर्ला स्टेशन के बीच पटरियों पर उतर गए। मुझे करीब ढाई किलोमीटर तक रेल पटरियों पर चलना पड़ा और नेहरू नगर पुलिस स्टेशन पहुंचा। उन्होंने कहा कि कुछ जनप्रतिनिधि भी उसी ट्रेन में फंसे हुए थे। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने मंत्रालय में एक बैठक कर मुंबई में भारी बारिश की स्थिति की समीक्षा की और बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) के नियंत्रण कक्ष का दौरा भी किया। भारी बारिश और समुद्र में ऊंची लहरें उठने की चेतावनी के (शेष पेज 9)

मुंबई में सोमवार को रेलवे स्टेशन पर हुए जलजमाव के बीच यात्री ट्रेन का इंतजार करते हुए।

संदेशखालि मामले में ममता को झटका

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने कलकत्ता उच्च न्यायालय के एक आदेश को चुनौती देने वाली पश्चिम बंगाल सरकार की याचिका को सोमवार को खारिज कर दिया। उच्च न्यायालय ने संदेशखालि में महिलाओं के खिलाफ अपराध और जमीन हड़पने के आरोपों पर सीबीआई जांच का निर्देश दिया था। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ ने पश्चिम बंगाल सरकार के वकील अभिषेक सिंघवी से कहा, यह सब संदेशखालि से संबंधित है। आपने (राज्य ने) महीनों तक कुछ नहीं किया। सिंघवी ने शीर्ष अदालत से कहा कि कलकत्ता उच्च न्यायालय द्वारा केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को जारी किए गए दूरगामी निर्देश संदेशखालि में प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों पर हमले से संबंधित दो प्राथमिकियों तक ही सीमित रह सकते हैं। उन्होंने कहा, जिस आदेश की (उच्च न्यायालय के) बात हो रही है वह राशन घोटाले से जुड़ा है। सिंघवी ने कहा कि कथित घोटाले में 43 प्राथमिकियां दर्ज की गई थीं। पीठ ने कहा, प्राथमिकियां चार वर्ष पहले दर्ज की गई थीं। आरोपी कौन हैं? (शेष पेज 9)

नमामि गंगे मिशन ने 211.08 करोड़ की तीन परियोजनाओं को दी मंजूरी

देवबंद में 134.71 करोड़ और लखनऊ के बरिकला में 27.02 करोड़ की परियोजनाओं को भी मिली मंजूरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश सरकार 2025 महाकुंभ को दिव्य-भव्य बनाने में जुटी है। इसके क्लियर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ खुद समय-समय पर सभी विभागों के कार्यों की जानकारी ले रहे हैं। वहीं नमामि गंगे मिशन ने प्रयागराज महाकुंभ के मद्देनज़र स्वच्छता संबंधित बुनियादी ढांचों के निर्माण के लिए कुल तीन परियोजनाओं को मंजूरी दी है, इसकी लागत 211.08 करोड़ रुपये है। वहीं, उत्तर प्रदेश के देवबंद में इंटरसेप्शन एंड डायवर्जन और एसटीपी कार्यों के लिए 134.71 करोड़ रुपये की परियोजना को मंजूरी दी गई। जबकि लखनऊ के बरिकला में स्थित एसटीपी की क्षमता को बढ़ाने के लिए 27.02 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है। यह निर्णय राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के कार्यकारी समिति की 55वीं बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता महानिदेशक राजीव कुमार मित्तल ने की। योगी सरकार का महाकुंभ में स्वच्छता पर विशेष जोर है। इस मद्देनजर प्रयागराज में महाकुंभ 2025 के लिए स्वच्छता संबंधित इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 152.37 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। इस परियोजना के अंतर्गत 54,400 शौचालय- मूत्रालय तथा एक प्राथमिक ठोस अपशिष्ट संग्रह प्रणाली का निर्माण किया जाएगा। इसका उद्देश्य अस्थायी स्वच्छता सुविधाओं का निर्माण कर महाकुंभ में आने वाले तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए पर्याप्त सुविधाएं देने के साथ ही आयोजन के दौरान स्वच्छता और नदी के जल की बेहतर गुणवत्ता सुनिश्चित करना है। महाकुंभ के दौरान प्रयागराज से निकलने वाले 22 नालों को पूरी तरह से टैप करने के लिए 55.57 करोड़ रुपये की परियोजना को मंजूरी दी गई है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य इन नालों से निकलने वाले सीवेज को रोककर उसको पूरी तरह ट्रीट करना है, ताकि महाकुंभ के दौरान गंगा और यमुना नदी की अविरलता और निर्मलता सुनिश्चित की जा सके। महाकुंभ 2025 के दौरान सीवरेज इंफ्रास्ट्रक्चर और नदी के पानी की गुणवत्ता पर अस्थायी आबादी के प्रभाव का मानचित्रण करने और नदियों के किनारे भविष्य में होने वाले ऐसे सामूहिक आयोजनों के लिए बेहतर रणनीति विकसित करने के लिए 3.14 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली आईपीएसए-कुंभ परियोजना को मंजूरी दी गई है। यह परियोजना महाकुंभ के दौरान सीवेज बुनियादी ढांचे की निगरानी और प्रबंधन के लिए रिमोट सेंसिंग और जीआईएस प्रौद्योगिकियों का उपयोग करेगी, जिससे गंगा नदी के पानी की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकेगी। यह वैज्ञानिक अध्ययन नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत आईआईटी रुड़की, आईआईटी-बीएचयू, टेरी और होक्काइडो विश्वविद्यालय सहित प्रमुख संस्थानों के एक संघ द्वारा किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश के देवबंद में इंटरसेप्शन एंड डायवर्जन और एसटीपी कार्यों के लिए 134.71 करोड़ रुपये की परियोजना को मंजूरी दी गई। इस परियोजना का उद्देश्य स्थानीय जल निकायों के प्रदूषण तथा सीवेज को रोकने और मोड़ने के उपायों का निर्माण और कार्यान्वयन करके सीवेज इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ाना है। जबकि, लखनऊ के बारीकला में 1 एमएलडी एसटीपी की क्षमता को बढ़ाकर 3.5 एमएलडी क्षमता के निर्माण के लिए 27.02 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है। ताकि सीवेज के बढ़ते प्रवाह को ट्रीट करके मौजूदा सीवेज ट्रीटमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर को मज़बूत बनाया जा सके।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन यह सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास कर रहा है कि तीर्थयात्रियों को इस पवित्र स्थल पर गंगा स्वच्छ मिले, जिसमें सीवेज का पानी न बहे। भारत सरकार राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के माध्यम से न केवल उन्हें एक स्वच्छ और अनुकूल पवित्र स्थल प्रदान कर रही है, बल्कि नदी के किनारे रहने वाले सभी निवासियों के व्यापक हित में काम कर रही है।

जन समस्याओं का त्वरित गति से किया जाए निदानः केशव प्रसाद मौर्य

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोमवार को अपने कैम्प कार्यालय .7 कालीदास मार्ग पर विभिन्न जनपदों से आये लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं के त्वरित निस्तारण का आश्वासन दिया। उन्होने जनसुनवाई के दौरान एक.एक व्यक्ति की समस्या को पूरी गम्भीरता से सुना तथा समस्याओं के निराकरण हेतु सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने सम्बंधित अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए हैं कि समस्याओं का निराकरण इस प्रकार किया जाय कि समस्याग्रस्त व्यक्ति पूरी तरह से संतुष्ट रहें और उन्हें दुबारा कहीं भटकना न पड़े और बार-बार चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने महिलाओं, दिव्यांगजनो, बुजुर्गों की समस्याओं व शिकायतों को सुना और उन्हें प्राथमिकता के आधार पर संबंधित अधिकारियों को त्वरित गति से निदान करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जनता दर्शन में भूमि विवाद, दुर्घटनाओं से संबंधित, अवैध कब्जे, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आवंटन, स्कूल निर्माण, भूमि पट्टा, कब्जा दिलाने, अतिक्रमण हटाने, सड़क बनवाने, विद्युत, अभियुक्तों की गिरफ्तारी कराने, आदि से संबंधित विभिन्न समस्याएं प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोगों ने रखी।

'कोर एरिया' के तौर पर हो रहा ग्रेटर नोएडा के दादरी का विकास

823 एकड़ क्षेत्र में 7,064 करोड़ रुपए के व्यय से दादरी में मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक्स हब को दिया जा रहा मूर्त रूप

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी बनाने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार ने लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रदेश में औद्योगिक क्रांति की नई पटकथा लिख रही है। एक ओर, सुदृढ़ कानून व्यवस्था के साथ प्रदेश की तरक्की को गति दी है, जिससे अब दुनिया भर के निवेशक उत्तर प्रदेश को मोस्ट फेवर्ड डेस्टिनेशन के तौर पर देख रहे हैं। वहीं, प्रदेश में औद्योगिक विकास को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की अवसंरचना विकास की गतिविधियों को गति दी जा रही है।

इसी क्रम में, ग्रेटर नोएडा के दादरी में मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब (एमएमएलएच) का विकास किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि कुल 823 एकड़ के प्रसार क्षेत्र में फैले मल्टी मोडल लॉजिस्टिक हब में से 455 एकड़ क्षेत्र को कोर एरिया के तौर पर विकसित किया जा रहा है जबकि, 17.5 एकड़ क्षेत्र में कमर्शियल व एडमिनिस्ट्रेटिव फैसिलिटीज तथा 350 एकड़ क्षेत्र में रेल यार्ड व अन्य प्रोजेक्ट्स पर कार्य हो रहा है।

इन सभी कार्यों की पूर्ति और विकास कार्यों में तेजी लाने के लिए सीएम योगी की मंशा अनुसार एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई है। योगी के विजन के अनुसार तैयार की गई कार्ययोजना दादरी में बन रहे मल्टी मोडल लॉजिस्टिक्स हब को वर्ल्ड क्लास फ्रंट हैंडलिंग फैसिलिटी के तौर पर विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करेगी। यह ड्राई पोर्ट की तरह काम करेगा जहां गुड्स व रॉ मटीरियल्स का तेज ट्रांजिट सुनिश्चित होगा। इसे देश के चुनिंदा सबसे बड़े लॉजिस्टिक्स हब के रूप में विकसित किया जा रहा है जिसे 7,064 करोडज़ रुपए के व्यय से पूरा किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि देश के पूर्वी व पश्चिमी डेडिकेटेड फ्रेट कॉरीडोर पर स्थित दादरी का मल्टी मोडल लॉजिस्टिक्स हब कंटेनर हैंडलिंग, वेयरहाउसिंग, कोल्ड स्टोरेज, प्रोसेसिंग, डी-स्टफिंग व स्टफिंग तथा वैल्यू एडेड पैकिंग जैसी सुविधाओं के सिंगल प्वॉइंट डेस्टिनेशन के तौर पर कार्य करेगा। रेल कनेक्टिविटी से जुड़े होने के कारण रेल प्लैटफॉर्म्स, कस्टम क्लीयरेंस, कार्गो सेपरेशन, ट्रक पार्किंग एरिया व हरित क्षेत्रों जैसी सुविधाओं से युक्त होगा। दादरी में एमएमएलएच को पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) माध्यम के जरिए विकास कार्यों को पूर्ण किया जा रहा है जिसे ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण व राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास एवं कार्यान्वयन ट्रस्ट (एनआईसीडीआईटी) की मॉनिटरिंग में गाइडलाइंस के अनुरूप पूरा किया जा रहा है। न्यू दादरी स्टेशन से एमएमएलएच बाउंड्री के लिए अप्रोच ट्रैक व रेल ओवर रेल (आरओआर) ब्रिज के निर्माण के लिए ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने मास्टर डीटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार कर लिया है। वहीं, एमएमएलएच के अंतर्गत रेलवे ट्रैक्स व टर्मिनल स्टेशन के विकास के लिए डेडिकेटेड फ्रेट कॉरीडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (डीएफसीसीआईएल) ने डीपीआर को स्वीकृति दे दी है।

यूपी राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद बना 'अवार्डिंग एंड एसेसिंग निकाय'

एससीवीटी और राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा एंव प्रशिक्षण परिषद के मध्य एमओयू हस्ताक्षरित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रयासरत योगी सरकार ने इस दिशा में एक और अहम कदम उठाया है। इसके तहतए उत्तर प्रदेश राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद (एससीवीटी) और राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन हुआ है। इस समझौते के तहत एससीवीटी अब एक प्रमाणित 'अवार्डिंग एंड असेसिंग निकाय' बन गया है। जो व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता के क्षेत्र में मील का पत्थर स्थापित करेगा। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षाए कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार कपिल देव अग्रवाल ने बताया कि इस समझौते का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करना है। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश के युवाओं को नए और उच्च स्तरीय रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में मदद करना है। इस प्रयास के अंतर्गत एससीवीटी अब प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षार्थियों को समय से मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र प्रदान कर सकेगा। एक संस्था को पुरस्कार देने वाली संस्था के रूप में तब परिभाषित किया जाता है, यदि यह प्रशिक्षुओं को स्वीकृत योग्यता के लिए प्रमाणपत्र प्रदान करती है या प्रस्तावित करती है और गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण और विश्वसनीय मूल्यांकन सुनिश्चित करती है। साथ ही, क्षेत्र के विशेषज्ञ के रूप में वह औपचारिक रूप से शिक्षण प्रदाताओं, केंद्रों और पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता के साथ-साथ उनका अध्ययन करने वाले शिक्षार्थियों के ज्ञान और कौशल को भी प्रमाणित कर सकती है। एमओयू के समय उत्तर प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षाए कौशल विकास और उद्यमशीलता विभाग के प्रमुख सचिव एम. देवराज अध्यक्ष एनसीवीईटी अतुल कुमार तिवारी सहित एससीवीटी एवं एनसीवीईटी के अधिकारीगण उपस्थित रहे। सभी ने इस समझौते का स्वागत किया और इसे उत्तर प्रदेश के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

खाद्यान्न का मुफ्त वितरण 20 जुलाई तक

लखनऊ। प्रदेश के अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अन्तर्गत माह जुलाई, 2024 के सापेक्ष आवंटित खाद्यान्न का नि:शुल्क वितरण आगामी 20 जुलाई 2024 तक किया जायेगा। नि:शुल्क वितरण में पोर्टेबिलिटी ट्रान्जेक्शन की सुविधा उपलब्ध रहेगी। राशन दुकानदार अपनी उपलब्ध स्टॉक की सीमा तक पोर्टेबिलिटी ट्रान्जेक्शन कर सकेंगे। यह जानकारी प्रदेश के खाद्य आयुक्त सौरभ बाबू ने देते हुए बताया कि अन्त्योदय कार्डधारकों को प्रति कार्ड 14 किग्रा. गेहूं एवं 21 किग्रा. चावल तथा पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को प्रति यूनिट 2 किग्रा. गेहूं एवं 3 किग्रा. का वितरण किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार द्वारा इस योजना के अन्तर्गत आच्छादित गरीब लाभार्थियों के आर्थिक बोझ को कम करने और राष्ट्रीय एकरूपता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य सेए एनएफएसए में आच्छादित अन्त्योदय तथा पात्र गृहस्थी लाभार्थियों को जनवरी, 2024 से 05 वर्ष के लिए नि:शुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

सूचित किया जाता है कि हाई स्कूल के दस्तावेजों में मेरा नाम पूर्णिमा सिंह पुत्री राजेश प्रताप सिंह बघेल है जबकि अन्य दस्तावेजों में मेरा नाम पूर्णिमा सिंह बघेल है पूर्णिमा सिंह और पूर्णिमा सिंह बघेल दोनों एक ही व्यक्ति है। पूर्णिमा सिंह बघेल पत्नी कृष्ण ओम सिंह ग्राम पोस्ट भटपुरा जिला मिर्जापुर उत्तर प्रदेश।

सूचना

सूच्य हो कि मेरी भारतीय जीवन बीमा निगम की पॉलिसी संख्या 214181354 में मेरा नाम त्रुटिवश खुशी सिंह दर्ज हो गया है जबकि आधार कार्ड,बैंक पासबुक व अन्य अभिलेखों में मेरा नाम अनुकृति सिंह दर्ज है। अनुकृति सिंह व खुशी सिंह दोनों ही नाम मेरे हैं। अतः अब से समस्त अभिलेखों में मेरा नाम अनुकृति सिंह ही पढ़ा व समझा जाए। अनुकृति सिंह पुत्री समीर सिंह निवासी-321, प्रगति पार्क, सेक्टर-1, इन्दिरा नगर-सीतापुर

सूचना

मैने अपना नाम CHANDAN KUMAR KANNUJIYA से बदलकर CHANDAN KUMAR PHOOLCHANDRA KANNOUJIYA कर लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। CHANDAN KUMAR PHOOLCHANDRA KANNOUJIYA S/o Phool Chandra Kannujiya, Khanpur Meja Road Meja Khas, Prayagraj, UP

सूचना

मैने व मेरी पत्नी ने अपने पुत्र मोहम्मद शाकिब अंसारी के गलत व्यवहार से क्षुब्ध होकर अपने समस्त प्रकार के परिवारिक संबंध समाप्त कर अपनी चल अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया। उसके द्वारा किये गये व किये जा रहे कृत्य कार्यों का जिम्मेदार वह स्वयं होगा। मेरा परिवार उत्तरदायी न होंगा। मोहम्मद एहसान अंसारी, श्रीमती शकीला बेगम निवासी 5 एफ/183, आवास विकास हंस्पुरम नौबस्ता कानपुर नगर

सूचना

नोटिस
मैं योगिता झॉ पत्नी स्व० संतोष कुमार झॉ प्लाट नं0-69 आर्दश बिहार कॉलोनी, बुद्धेश्वर जिला-लखनऊ में मेरा गृह ऋण लोन नं0-19300041860 एवं दूसरा प्लाट नं0-70 आर्दश बिहार कॉलोनी, बुद्धेश्वर जिला-लखनऊ का गृह ऋण लोन नं0-19300043164 का ऋण पीरामल कैपिटल एण्ड हॉउसिंग फाइनेंस चल रहा था। मेरे पति का देहांत दिनांक-07.08.2023 को हो गया था। स्व० संतोष कुमार झॉ के एक पुत्र मोहक झॉ (नाबालिक) एवं एक पुत्री यशिका झॉ (नाबालिक) है। योगिता झॉ द्वारा गृह ऋण समाप्त कर दिया गया है। इसलिए इस सम्पत्ति का कागज कंपनी द्वारा देने का अनुरोध करती है। अगर किसी व्यक्ति को आपत्ति हैं, तो पीरामल कैपिटल्ल एण्ड हॉउसिंग फाइनेंस लीमिटेड (डी०एच०एफ०एल०) से सम्पर्क करें।

महाकुंभ में लाखों श्रद्धालुओं का स्वागत करेगी संगमनगरी

प्रमुख सचिव ने की महाकुंभ मेले से संबंधी परियोजनओं की समीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। प्रयागराज/ लखनऊ

महाकुंभ मेला 2025 को भव्य और दिव्य बनाने की सीएम योगी की मंशा के अनुरूप सोमवार को प्रमुख सचिव नगर विकास, अमृत अभिजात की अध्यक्षता में मेला प्राधिकरण के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में प्रयागराज शहर में रोड सौंदर्यकरण, लाइटिंग, वॉल पेंटिंग्स, मुख्य चौराहों पर मूर्तियों की स्थापना, साइनेज और हॉर्टिकल्चर परियोजनाओं पर चर्चा की गई। प्रमुख सचिव ने निर्देश दिए कि सभी कार्यों को एक ही थीम में करते हुए, उच्च गुणवत्ता, कॉस्ट इफेक्टिवनेस और समय सीमा का पालन किया जाए। उन्होंने कहा कि महाकुंभ मेला 2025 एक भव्य आयोजन होगा और इन परियोजनाओं के माध्यम से प्रयागराज शहर को सुंदर और आकर्षक बनाया जाएगा, जो लाखों श्रद्धालुओं का स्वागत करने के लिए तैयार होगा।

प्रस्तुतीकरण में बताया गया कि रोड सौंदर्यकरण के तहत शहर की प्रमुख सड़कों को नया रूप दिया जाएगा, जिनमें पेड़-पौधे लगाए जाएंगे।फुटपाथों का निर्माण किया जाएगा और सड़क के किनारे सुंदर लाइटिंग लगाई जाएगी। शहर की दीवारों पर कुंभ मेला के इतिहास और महत्व को दर्शाती कलाकृतियां बनाई जाएंगी। मुख्य चौराहों पर प्रयागराज की संस्कृति और इतिहास को दर्शाती मूर्तियों की स्थापना की जाएगी। शहर में नए साइनेज बोर्ड लगाए जाएंगे, जो श्रद्धालुओं को महाकुंभ मेला स्थल और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों तक पहुंचने में मदद करेंगे। शहर में पार्कों और उद्यानों का निर्माण किया जाएगा, जिनमें पेड़-पौधे लगाए जाएंगे। इस अवसर पर प्रमुख सचिव ने बताया कि 15 स्थानों पर प्लेसमेकिंग इंस्टालेशन, 4 स्थानों पर थीमेटिक इंस्टालेशन, 2 स्थानों पर मूर्तियों की स्थापना और हॉर्टिकल्चर के तहत दो प्रकार के पौधारोपण किए जाएंगे। एक मौसमी फूलों के पौधे और दूसरे लंबे समय तक हरियाली बनाए रखने वाले पौधे। इसके अलावा, 36 चौराहों को महाकुंभ के लिए सजाया जाएगा। इस बैठक में मेला प्राधिकरण के अधिकारी, नगर विकास विभाग के अधिकारी और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

अगले तीन से चार साल में खुद की दाल खाएगा यूपी

मौजूदार समय में दलहन उत्पादन में रिकॉर्ड 36 फीसद की वृद्धि, सुधरेगी गरीबों और जमीन की सेहत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अगले तीन चार साल में दलहन उत्पादन में उत्तर प्रदेश आत्मनिर्भर हो जाएगा। यह योगी सरकार का लक्ष्य है। इस बाबत उनके निर्देश पर किए गए सात साल के नतीजे शानदार रहे हैं। 2016/217 से 2023/2024 के दौरान दलहन उत्पादन में करीब 36ब्त की वृद्धि इसका सबूत है। इस दौरान दलहन का उत्पादन 23.94 लाख मिट्रिक टन से बढ़कर 32.55 लाख मिट्रिक टन हो गया। दलहन का रकबा और प्रति हेक्टेयर उपज बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार की मदद से योगी सरकार किसानों का हर संभव मदद कर रही है।

प्रदेश में दलहन उत्पादन बढ़ाने के लिए अरहर, उर्द एवं मूंग की कार्य-योजना योगी सरकार द्वारा तैयार कर ली गयी। इसके तहत राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजनान्तर्गत 27200 हेक्टेयर फसल प्रदर्शन आयोजित होंगे। इसी क्रम में दलहन राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजनान्तर्गत 31553 कुंतल बीज वितरण एवं 27356 कुंतल प्रमाणित बीज उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। बीज व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए 14 सीड हब तैयार किए गए हैं। इनके जरिए 21000 कुंतल बीज उत्पादन किया जायेगा। 10500 किसानों में अरहर की उन्नतशील प्रजातियों केमिनीकिट्स बांटे जाएंगे। इसी तरह पिछले साल की तरह इस साल भी दलहनी के अन्य फसलों मूंग ,उर्द आदि के भी मिनिकिट बांटे जाएंगे।दलहनी फसलों के उत्पादन के बाद बाजार में उपज का वाजिब दाम दिलाने के लिए सरकार ने इन सभी फसलों की एमएसपी पर खरीद की व्यवस्था भी सुनिश्चित कर रही है। किसान इनके उत्पादन के लिए प्रोत्साहित हों इनके लिए अन्य फसलों की तुलना में हर इनके एमएसपी में भी अधिक वृद्धि कर रही है। दलहन उत्पादन में अग्रणी बुंदेलखंड के जिलों-बांदा, महोबा, जालौन, चित्रकूट एवं ललितपुर में आदर्श दलहन ग्राम विकसित किये जायेंगे।उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश दलहन का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता राज्य है। पर, अभी उपभोग का आधा ही उत्पादन प्रदेश में होता है। रणनीति के अनुसार तय समयावधि में प्रति हेक्टेयर उपज 14 से बढ़ाकर 16 कुंतल करने का है। कुल उपज का लक्ष्य 30 लाख टन है। इसके अलावा करीब 1.75 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त रकबे को दलहन की फसलों से आच्छादित करने की भी तैयारी है। सरकार इसके लिए दलहन की परंपरागत फसलों की उन्नत और अधिक उपज देने वाली प्रजातियों के बीज उपलब्ध कराएगी। कुछ प्रगतिशील किसानों के वहां इनका प्रदर्शन भी होगा। किसानों को बड़ी संख्या में बीज के निशुल्क मिनीकिट भी दिए जाएंगे। यह क्रम जारी भी है। साथ ही फोकस कम समय में होने वाली मूंग, उर्द (उड़द) आदि की फसलों पर होगा। इनकी सहफसली खेती को भी बढ़ावा दिया जाएगा। इसके अलावा असमतल भूमि पर स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली का प्रयोग करते हुये उत्पादन में वृद्धि, फरो एंड रिज मेथड से खेती कर उत्पादन में वृद्धि और न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीद की गारंटी भी सरकार दे रही है। दरअसल खाद्यान्न में रिकॉर्ड उत्पादन के बाद सरकार अब खाद्यान्न सुरक्षा से एक कदम आगे पोषण सुरक्षा के बारे में सोच रही है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका दलहनी फसलों की होगी। वजह आम आदमी, खासकर शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक मात्र स्रोत दाल ही है। खपत की तुलना में पैदावार कम होने से अक्सर कुछ वर्षों के अंतराल पर दाल के दाम सुर्खियों में रहते हैं। ऐसा होने पर आम आदमी के थाल की दाल पतली हो जाती है। गरीब के थाल से तो गायब ही। प्रोटीन का स्रोत होने के नाते आम आदमी खासकर गरीबों की सेहत के लिए भोजन में दाल जरूरी है। इसी तरह नाइट्रोजन फिक्ससेशन गुण के कारण दलहनी फसलें भूमि के लिए भी संजीवनी हैं।

948 विरासत वृक्षों को संवारेगी प्रदेश सरकार

वृक्षारोपण जन अभियान-2024

इस वर्ष 11 जनपदों में तैयार होगी विरासत वृक्ष वाटिका, 100 वर्ष से अधिक आयु के 28 प्रजाति के वृक्ष घोषित किए गए हैं विरासत वृक्ष

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सरकार विरासत वृक्ष अंगीकरण योजना के तहत सूबे के 948 विरासत वृक्षों को संवारेगी। 100 वर्ष से अधिक आयु के 28 प्रजाति के वृक्षों को विरासत वृक्ष घोषित किया गया है। यह वृक्ष प्रदेश के सभी 75 जनपदों में हैं। योगी सरकार पेड़-पौधों के जरिए भी विरासत का सम्मान करने को प्रतिबद्ध है। काशी में सर्वाधिक 99, प्रयागराज में 53, हरदोई में 37, गाजीपुर में 35 व उन्नाव में विभिन्न प्रजातियों के 34 विरासत वृक्ष हैं।

योगी सरकार विलुप्त हो रही वृक्ष प्रजातियों के संरक्षण व पौराणिक/ऐतिहासिक अवसरों, महत्वपूर्ण घटनाओं, अति विशिष्ट व्यक्तियों के स्मारकों, धार्मिक परम्पराओं व मान्यताओं से जुड़े हुए वृक्षों को संरक्षित कर जन सामान्य में इसके प्रति जागरूकता पैदा कर रही है। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन द्वारा विरासत/ हेरिटेज वृक्षों के चयन व अभिलेखीकरण हेतु दिशा-निर्देश दिया गया है। इस बार इन वृक्षों की नई पौध तैयार करने के लिए विरासत वृक्ष वाटिका भी तैयार की जाएगी। सौ वर्ष से अधिक आयु की 28 प्रजातियों को घोषित किया गया विरासत वृक्ष उत्तर प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड ने गैर वन क्षेत्र (सामुदायिक भूमि) पर अवस्थित सौ वर्ष से अधिक आयु के 28 प्रजातियों को विरासत वृक्ष घोषित किया है। इनमें अरु, अर्जुन, आम, इमली, कैम, करील. कुसुम, खिरनी, शमी, गम्हार, गूलर, छितवन, चिलबिल, जामुन, नीम, एडनसोनिया, पाकड़, पीपल, पीलू, बरगद, महुआ, महोगनी, मैसूर बरगद, शीशम, साल, सेमल, हल्दू व तुमाल शामिल हैं। इसमें बरगद प्रजाति के 363 व पीपल प्रजाति के 422 वृक्ष हैं। विरासत वृक्ष में आध्यात्मिक व स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े वृक्ष शामिल किए गए हैं। योगी सरकार यूपी के सभी 75 जिलों में विरासत वृक्षों को खोजकर इन्हें संरक्षित करने को प्रतिबद्ध है। सीएम योगी के गृह जनपद गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर परिसर में हनुमान मंदिर, काली मंदिर के समीप व गौशाला के अंदर बरगद व पाकड़ वृक्षों सहित पूरे जनपद में 19 वृक्ष विरासत वृक्ष घोषित किए गए हैं। वहीं लखनऊ व वाराणसी के क्रमश: दशहरी आम व लंगड़ा आम के मातृ वृक्ष, फतेहपुर का बाचन इमली, मथुरा के इमलीतला मन्दिर परिसर का इमली वृक्ष, प्रतापगढ़ का करील वृक्ष, बाराबंकी में स्थित एडनसोनिया वृक्ष, हापुड़ व संत कबीर नगर में अवस्थित पाकड़ वृक्ष, सारनाथ का बोधि वृक्ष, बाबा झारखंड के नाम से प्रसिद्ध अम्बेडकर नगर का पीपल वृक्ष एवं आर्डिनेंस क्लॉथ फैक्ट्री शाहजहांपुर में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा पीपल वृक्ष शामिल है। वृक्षारोपण जन अभियान-2024 के तहत प्रदेशवासियों को चिह्नित विरासत वृक्षों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 11 जनपदों में विरासत वृक्ष वाटिका तैयार की जाएगी। यह वाटिका गोरखपुर, अयोध्या, लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी, मेरठ, बरेली, मथुरा, सीतापुर, चित्रकूट व मीरजापुर में तैयार होगी। प्रत्येक वाटिका में विरासत वृक्ष से तैयार पौधा/टहनी/डाल को अनिवार्य रूप से लगाया जाएगा। शेष पौधे स्थानीय महत्व की प्रजातियों के होंगे। इसके लिए लगभग आठ हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता होगी। प्रभागों द्वारा चिह्नित 11 जनपदों में पर्याप्त संख्या में विरासत वृक्ष से पौधे तैयार करने के लिए प्रत्येक प्रभाग में कम से कम 10 वृक्ष उपलब्ध कराए जाएंगे। योगी सरकार में विशिष्ट विरासत वृक्षों में चीनी यात्री हवेनसांग द्वारा उल्लिखित झूंसी (प्रयागराज) का एडनसोनिया वृक्ष, मथुरा के टेर कदंब मंदिर परिसर व निधि वन में अवस्थित पीलू वृक्ष, प्रयागराज के किले में अक्षयवट, उन्नाव जनपद में वाल्मीकि आश्रम, लव कुश जन्म स्थली व जानकी कुण्ड नाम से प्रसिद्ध स्थल पर अवस्थित बरगद वृक्ष एवं प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े हुए एन.बी.आर.आई लखनऊ व महामाया देवी मन्दिर परिसर गाजियाबाद में अवस्थित बरगद वृक्ष शमिल हैं।

सक्रिय बदमाशों का ब्यौरा त्रिनेत्र एप पर फीड करना थानेदारों के लिए होगा अनिवार्य

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश में सक्रिय बदमाशों का ब्योरा त्रिनेत्र एप पर फीड करना अब थानेदारों के लिए अनिवार्य होगा। पूर्व में भी पुलिस मुख्यालय की ओर से इस संबंध में निर्देशित किया गया था किंतु ज्यादातर थानेदार इस आदेश का पालन नहीं कर रहे हैं। इससे नाराज डीजीपी प्रशांत कुमार ने अब सख्त निर्देश जारी करते हुए कहा है कि अपराधियों का आपराधिक इतिहास त्रिनेत्र एप में अविलम्ब अद्यावधिक कर दिया जाए। प्रदेश में आपराधिक गतिविधियों एवं आपराधिक घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाए जाने के उद्देश्य से त्रिनेत्र एप विकसित किया गया है। जिसके पोर्टल पर अपराधियों का आपराधिक वितरण ऑनलाइन फीड करने के लिए पुलिस मुख्यालय द्वारा बीती 12 जनवरी को स्पष्ट निर्देश दिए गए थे। प्रदेश के सभी पुलिस कप्तानों, पुलिस आयुक्तों और रेलवे पुलिस के अफसरों को जारी आदेश में डीजीपी ने कहा है कि कतिपय जिलों में इस दिशा में और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने इस संबंध में चार बिन्दुओं पर निर्देश जारी किए हैं। जारी निर्देश में कहा गया है कि अनवारित किए गए अपराधों में संलिप्त अपराधियों का थाना स्तर पर तत्परता से डाटा अद्यावधिक किया जाए। अनावरित किए गए अपराधों में संलिप्त अपराधियों का थाना स्तर पर तत्परता से डाटा अद्यावधिक किया जाए। संगठित अपराधियों का आपराधिक इतिहास त्रिनेत्र एप में अविलंब अद्यावधिक किया जाए।

महिलाओं एवं बच्चों से संबंधित अपराध में संलिप्त अपराधियों का डाटा त्रिनेत्र एप में अवश्य अद्यावधिक कर दिया जाए। सम्पत्ति संबंधी अपराधों यथा लूट, डकैती, नकबजनी आदि में सम्मिलित अपराधियों का डाटा प्राप्त कर उनकी गतिविधियों को सर्विलांस के माध्यम से लगातार मानीटरिंग की जाए।

अंतरराष्ट्रीय पैरा बैडमिंटन ओपन चैंपियनशिप प्रतियोगिता

पुनर्वास विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने 3 स्वर्ण सहित 2 कांस्य पदक जीते

● युगांडा में छात्रा रुचि त्रिवेदी ने तीन स्वर्ण एवं स्वाति ने दो कांस्य पदक प्राप्त किया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पहली जुलाई से सात जुलाई तक युगांडा में सम्पन्न हुई अंतरराष्ट्रीय पैरा बैडमिंटन ओपन चैंपियनशिप टूर्नामेंट में डॉ शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय की दो छात्राओं ने पदक जीत कर विवि का नाम रौशन किया है। प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की छात्रा रुचि त्रिवेदी ने तीन स्वर्ण एवं स्वाति ने दो कांस्य पदक प्राप्त किया है।

युगांडा में सम्पन्न हुई अंतरराष्ट्रीय पैरा बैडमिंटन ओपन चैंपियनशिप टूर्नामेंट में विवि की तीन छात्राएं शामिल हुई थी। जिनमें स्वाति बीए. प्रथम वर्ष, कनक सिंह जादौन एमबीए प्रथम वर्ष, रुचि त्रिवेदी बीए प्रथम वर्ष शामिल रही। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर संजय सिंह ने इन खिलाड़ियों को प्रतियोगिता में अच्छे प्रदर्शन हेतु शुभकामनाएं दी हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजय सिंह ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए ऐतिहासिक रूप से बहुत ही गौरव का क्षण है कि हमारे विश्वविद्यालय की छात्राओं रूचि त्रिवेदी एवं स्वाती ने समूचे देश का मान एवं गौरव बढ़ाया है। विश्वविद्यालय के क्रीड़ा एवं योग प्रकोष्ठ द्वारा विश्वविद्यालय के अन्य खिलाड़ियों, प्रकोष्ठ के सदस्यों उनके प्रशिक्षक इरशाद एवं निदेशक प्रो. पी राजीवनयन द्वारा भी इन खिलाड़ियों द्वारा उत्कृष्ठ प्रदर्शन हेतु शुभकामनाएं दी गईं।

बता दें कि पुनर्वास विश्वविद्यालय में दिव्यांगों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाओं से सुसज्जित बाधारहित विशिष्ट स्टेडियम एवं प्रशिक्षक मौजूद हैं। जिसका परिणाम यह है कि विश्वविद्यालय की ये छात्राएं देश का प्रतिनिधित्व कर रही है। विश्वविद्यालय के क्रीड़ा एवं योग प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो पाण्डेय राजीवनयन कहा कि हमारे खिलाड़ी किसी मुकाबले में पीछे नहीं हैं।

अदालत के आदेश को दरकिनार कर पुलिस ने लड़की को पिता को सौंपा

● हाईकोर्ट ने कहा, व्यक्तिगत हलफनामा दें एसएसपी अथवा हाजिर हों, एसएचओ और दरोगा को किया तलब

विधि संवाददाता। लखनऊ

हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ में एक अवमानना याचिका दाखिल कर आरोप लगाया गया है कि अदालत के आदेश के बावजूद अयोध्या पुलिस ने बालिग प्रेमी-प्रेमिका के शांतिपूर्ण जीवन में दखल दिया है। और लड़की को उसके पिता को सौंप दिया है। कहा गया कि दोनों का धर्म अलग-अलग है। इसलिए लड़की के पिता द्वारा उनके रिश्ते का विरोध किया जा रहा है। जबकि अदालत के समक्ष लड़की ने अपने प्रेमी के साथ जाने की इच्छा जताई थी। अदालत ने इस पर उसे अपनी मर्जी से कहीं भी जाने की इजाजत दी थी। अदालत ने पाया कि पुलिस ने लड़की के पिता की जिस शिकायत पर कार्रवाई की बात कही है, उसका थाने की जीडी में कोई जिक्र ही नहीं है। अदालत ने इस पर संबंधित एसएचओ और दरोगा को तलब कर लिया है। साथ ही अयोध्या के एसएसपी को व्यक्तिगत हलफनामा दाखिल कर उन्हें इस मसले पर जवाब देने को कहा है। जवाब नहीं आने पर उन्हें भी हाजिर होना होगा।

जस्टिस राजीव सिंह की एकल पीठ ने यह आदेश प्रेमी की अवमानना याचिका पर दिया है। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि वह हिंदू है। जबकि उसकी प्रेमिका मुस्लिम समुदाय से है। ऐसे में प्रेमिका के पिता द्वारा उनके सम्बन्धों का विरोध किया जाता है। उन दोनों ने लिव-इन रिलेशनशिप में रहते हुए हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर सुरक्षा की मांग की थी। पांच मार्च 2024 को हाईकोर्ट ने पुलिस को उनके शांतिपूर्ण जीवन में दखल नहीं देने का आदेश दिया था। बावजूद इसके 22 अप्रैल को पूरा कलंदर थाने की पुलिस उसके घर आई और जबरन लड़की को उसके पिता को सौंप दिया। इस बात की पुष्टि सीसीटीवी फुटेज से की जा सकती है।

पीठ के समक्ष सुनवाई के दौरान एसएचओ पूरा कलंदर ने अपने जवाब में कहा कि 22 अप्रैल को लड़की के पिता की शिकायत पर यह कार्रवाई की गई थी। पीठ ने इस पर जब लड़की को तलब कर उसकी इच्छा पूछी तो उसने स्पष्ट तौर पर याचिकाकर्ता के साथ जाने की इच्छा जताई। पीठ ने 22 और 23 अप्रैल की थाने की जीडी तलब कर लिया। इस पर पुलिस ने स्वीकार किया कि लड़की के पिता की कोई शिकायत जीडी में दर्ज नहीं है। ऐसा न करने के लिए सब-इंस्पेक्टर रमा शंकर सरोज के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू की जा चुकी है। पीठ ने इस पर उक्त सब-इंस्पेक्टर व एसएचओ को तलब कर लिया। मामले की अगली सुनवाई मंगलवार को होगी।

मंडलायुक्त ने यूपीआरएनएन पर लगाया जुर्माना, एफआईआर दर्ज करने के निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मंडलायुक्त की अध्यक्षता में स्मार्ट सिटी द्वारा संचालित परियोजनाओं और एलडीए द्वारा किए जा रहे हेरिटेज कार्य के सम्बंध में बैठक की गयी। मंडलायुक्त द्वारा केडी सिंह बाबू स्टेडियम में निर्माणधीन जॉगिंग ट्रेक की गुणवत्ता मानक के अनुरूप न होने पर नाराजगी जाहिर की गयी। मंडलायुक्त द्वारा कार्यदाई संस्था यूपीआरएनएन के खिलाफ पेनाल्टी लगाते हुए संबंधित पर एफ आईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए। साथ ही मंडलायुक्त द्वारा तांगा स्टैंड पर केनोपी, बोर्ड व डिजाइन के तहत विकसित करते हुए मॉडर्न तांगा का लुक दिए जाने के निर्देश दिया गया।

मंडलायुक्त डॉ रोशन जैकब की अध्यक्षता में स्मार्ट सिटी द्वारा संचालित परियोजनाओं व लखनऊ विकास प्राधिकरण द्वारा किए जा रहे हेरिटेज कार्य के सम्बंध में महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन एलडीए के पारिजात सभागार में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम मंडलायुक्त ने केडी सिंह बाबू स्टेडियम में निर्माणधीन जॉगिंग ट्रेक की गुणवत्ता मानक के अनुरूप न होने पर नाराजगी जाहिर करते हुए, कार्यदाई संस्था यूपीआरएनएन के खिलाफ पेनाल्टी लगाते हुए संबंधित पर एफ आईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निर्माणधीन जॉकिंग ट्रैक को ध्वस्त करते हुए पुन: जॉकिंग ट्रैक का निर्माण गुणवत्ता पूर्वक कराया जाना सुनिश्चित किया जाए।

मंडलायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि ताई कमांडो हाल, वॉलीबॉल कोर्ट, क्रिकेट प्रैक्टिस पिच की गुणवत्ता की जाँच संबंधित अधिकारी स्वयं नियमित रूप से करते रहे। वॉलीबॉल ट्रैक की फिनशिग अच्छे से करें। बॉक्सिंग रिंग के बाहर के एरिया को लेबल कर लिया जाए। संबंधित द्वारा बताया गया कि क्रिकेट स्टेडियम की लाइटिंग, हैंडबॉल कोर्ट व शौचालय के सिविल कार्य शतप्रतिशत पूर्ण कर लिया गया है। उन्होंने संबंधित कार्यदाई संस्थाओं के अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि निर्माणधीन कार्यों की गुणवत्ता में किसी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके बाद मंडलायुक्त को संबंधित अधिकारियों द्वारा बताया गया कि स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत हुसैनाबाद हेरिटेज जोन के उन्नयन एवं सौंदर्यीकरण मे लजीज गली का सम्पूर्ण कार्य पूर्ण कर लिया गया है। फ्रेग्नेस पार्क का कार्य लगभग पूर्ण कर लिया गया है, कैफेट एरिया का कार्य शेष बच्चा है। दो टॉयलेट ब्लॉक का काम चल रहा है जिसको 5 दिन में पूर्ण करा लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि तांगा स्टैंड पर केनोपी, बोर्ड व डिजाइन के तहत विकसित करते हुए मॉडर्न तांगा का लुक दिया जाए।

कैसरबाग चौराहा के इमारतों का फसाद लाइट, रोटरी व हेरिटेज इमारतो के जीर्णोद्धार एवं साज-सज्जा के 92 प्रतिशत कार्य पूर्ण करा लिया गया है। उन्होंने शेष कार्य में तेजी लाने व हेरिटेज जोन में एकरूपता के तहत साज-सज्जा के कार्य कराये जाने को लेकर निर्देश दिया। इस अवसर पर एलडीए उपाध्यक्ष इंद्रमणि त्रिपाठी, नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

13 सरकारी मेडिकल कालेजों को मान्यता न मिलने पर मुख्य सचिव ने ली जानकारी

● 15 दिन के अंदर मानक पूरे कर एनएमएसी में अपील करने के निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के 13 सरकारी मेडिकल कालेजों को एनएमसी की तरफ से मान्यता न दिये जाने को लेकर सोमवार को मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने चिकित्सा शिक्षा विभाग के अधिकारियों से चर्चा की। चिकित्सा शिक्षा महानिदेशक किंजल सिंह ने बताया कि मुख्य सचिव को सारी जानकारी दे दी गई है। उन्होंने कहा कि मानकों में बदलाव के चलते यह दिक्कत आई है।

चिकित्सा शिक्षा विभाग के अनुसार पहले जहां 100 सीटों के लिए 56 चिकित्सा शिक्षकों की जरूरत थी, उसे बढ़ाकर अब 86 कर दिया गया है। उसके साथ 46 रेजीडेंट डॉक्टर भी चाहिए। दूरस्थ स्थानों पर फैकल्टी को लेकर थोड़ी दिक्कतें हैं। प्रधानाचार्यों को नियुक्ति का अधिकार दिया गया है। उन्होंने कहा कि एनएमसी में अपील के साथ ही जरूरत पड़ी तो केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के समक्ष अपील की जाएगी। शासन स्तर पर इन कॉलेजों को 15 दिन की समयसीमा में एनएमसी में अपील करने को कहा गया है। हालांकि इतने कम समय में फैकल्टी के मानक पूरे हो पाना संभव नहीं दिखता।

आगरा-मेरठ और गोरखपुर में बढ़ी सीटें

प्रदेश के पुराने सरकारी मेडिकल कॉलेजों आगरा व मेरठ में भी इस साल एमबीबीएस की सीटों में इजाफा हो गया है। आगरा के एसएन मेडिकल कॉलेज में 72 सीटें बढ़ाई गई हैं। इसी के साथ वहां सीटें 128 से बढ़कर 200 हो गई हैं। वहीं मेरठ के मेडिकल कॉलेज में 50 सीटों का इजाफा हुआ है। वहां सीटें बढ़कर अब 150 हो गई हैं। जबकि गोरखपुर के निजी मेडिकल कॉलेज श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को भी इस साल 50 सीटों की मान्यता मिल चुकी है।

आरएमएलएनएलयू में अंतिम चरण में दीक्षांत समारोह की तैयारियां

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डॉ. राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय में 13 जुलाई को होने वाले दीक्षांत समारोह की तैयारियाँ अंतिम चरण में हैं। सोमवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमर पाल सिंह ने दीक्षांत समारोह से जुड़ी विभिन्न समितियों की समीक्षा बैठक आयोजित की।

समारोह का रिहर्सल सोमवार सुबह 11 बजे से डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर सभागार में किया गया। वेन्यू एवं स्टेज समिति और रिहर्सल समिति ने कुलपति के समक्ष समारोह का रिहर्सल करवाया। बी0ए एलएलबी के प्रथम वर्ष के छात्रों ने भी रिहर्सल में भाग लिया। इन छात्रों को मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति डॉ डीवाई चंद्रचूड़, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और अन्य मंचासीन अतिथियों का किरदार निभाने का मौका मिला। वहीं, कुछ छात्र जनरल काउंसिल और एकेडेमिक काउंसिल के सदस्य बने। रिहर्सल समिति की अध्यक्ष प्रो वंदना सिंह और वेन्यू एवं स्टेज समिति के अध्यक्ष डॉ प्रेम कुमार गौतम ने बताया कि सोमवार को अतिथियों की शोभायात्रा और 9 एलएलबी और 9 एलएलएम के छात्रों को गोल्ड मेडल देने का रिहर्सल पूरा कराया गया। इसमें सभी पहलुओं का ध्यान दिया गया और पूरी रिहर्सल की वीडियो रिकॉर्डिंग भी करवाई गई। आज की समीक्षा बैठक में कुलपति प्रो अमर पाल सिंह, रजिस्ट्रार गिरिजेश त्यागी तथा अन्य शिक्षक और छात्र उपस्थित रहे।

आवारा 15 पशुओं को पकड़कर कांजी हाउस भेजा गया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शहर में नगर निगम द्वारा अवैध डेरियों पर शिकंजा कसा गया। कैटिल कैचिंग अभियान में कई पशु पालक अपने पशुओं को लेकर भागते दिखे। पशु कल्याण अधिकारी द्वारा 15 जानवरों को पकड़ कर कांजी हाउस भेजी गयी।

राजधानी में आवारा पशुओं के विरुद्ध चले अभियान में एक दर्जन से अधिक पशुओं को पकड़ा गया। सोमवार को नगर आयुक्त के निर्देशानुसार गीतापल्ली वार्ड में नगर निगम प्रवर्तन दल और कैटल कैचिंग कर्मचारियों के सहयोग से पशु कल्याण अधिकारी डॉ अभिनव वर्मा के नेतृत्व में विशेष अभियान चलाया। अभियान में कुल 10 गाय, 2भैंस और 3 बछिया को पकड़कर नगर निगम ने ठाकुरगंज कांजी हाउस में निरुद्ध किया। जिन्हे नियमानुसार कार्यवाही के बाद ही रिहा किया जायेगा। अभियान में पकडे गए पशु अवैध डेरी संचालकों के हैं जिनको उनके द्वारा दूध दुहने के बाद छोड़ दिया जाता है। इन पशुओं के द्वारा सडक पर इधर उधर गोबर कर गंदगी की जा रही थीं और इन पशुओं से वार्ड में दहशत थीं, नगर निगम द्वारा अभियान चलता देख कई पशु पालक आपने पशुओं को लेके भागते दिखे। पशुपालको द्वारा महिलाओं को आगे करके गाली गलौज और पशुओं को पकड़ने में कैटल कैचिंग वाहन के आगे लेट कर विरोध और बाधा उत्पन्न की गयी। अभियान के दौरान डेरी संचालकों द्वारा घेराव की कोशिश भी की गयी। अभी तक अभियान के माध्यम से 40 गाय, 2 बछिया, 9 भैंस को पकड़ा जा चुका है। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना के क्षेत्र में भ्रमण के दौरान इन अवैध डेरियों पर कार्यवाही के निर्देश दिए गए थे, जिसपर उच्च अधिकारियो के निर्देश पर निरंतर कार्यवाही की जा रही है। कई कारणों से पुलिस बल न उपलब्ध हों पाने के कारण प्रवर्तन दल के माध्यम से ही अभियान करवाया गया। अवैध डेरी संचालकों द्वारा पशुओ को खाली प्लॉट पर बाँध कर अतिक्रमण किया गया था और गोबर सडक पर बहाया जा रहा था जिससे मुख्य मार्ग बाधित हो रहा था और आवागमन प्रभावित होने के साथ साथ कई प्रकार की बीमारियों का खतरा बना हुआ था। इस क्षेत्रों से निरंतर गंदगी फैलाने और गोबर नाली में बहाने की शिकायत क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि ने निरंतर प्राप्त हो रही थी, जिससे नालियां चोक हो रही थी।

आरटीई के तहत प्रदेश में महज 72,044 बच्चों को मिला दाखिला, महानिदेशक ने जताई नाराजगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शैक्षिक सत्र 2024-25 में नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत पूरे प्रदेश में महज 72,044 बच्चों को ही निजी स्कूलों में प्रवेश मिला है। जबकि कक्षा एक में प्रवेश के लिए कुल आवंटन 1,65,544 किये गये थे। ऐसे में महानिदेशक, स्कूल शिक्षा कंचन वर्मा ने सभी जिलों के डीएम को पत्र लिख कर शत-प्रतिशत आवंटन कराने को कहा है। महानिदेशक, स्कूल शिक्षा के स्तर से जारी आदेश में कहा गया है कि जनपद स्तर से निरंतर प्राप्त हो रही शिकायतों से यह संज्ञान में आ रहा है कि कतिपय विद्यालयों द्वारा आप्रासंगिक कारणों को आधार बनाते हुए आरटीई एक्ट, 2009 के अनुपालन में बच्चों को प्रवेश न देकर नि:शुल्क शिक्षा से वंचित किया जा रहा है। साथ ही चयनित बच्चों के अभिभावकों से अनावश्यक अभिलेख, दस्तावेज की मांग की जा रही है। जिनमें नि:शुल्क शिक्षा हेतु आवंटन के पश्चात भी विद्यालय द्वारा प्रवेश हेतु प्रवेश शुल्क भवन शुल्क, इलेक्ट्रीसिटी शुल्क, आईडी कार्ड फीस, सिक्योरिटी शुल्क, वार्षिक शुल्क आदि, जेसे आधारहीन खर्चों का उल्लेख कर अभिभावकों से धनराशि की मांग की जा रही है। विद्यालयों द्वारा आवंटन सूची में नाम आने के पश्चात् भी आप का नाम सूची में नहीं है, आपका प्रवेश नहीं लिया जा सकता, बताकर प्रवेश नहीं दिया जा रहा है। ऐसे में यह गंभीर एवं चिंताजनक स्थिति है।

MAX Healthcare

मैक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, लखनऊ
(स्टारलिट मेडिकल सेंटर प्राइवेट लिमिटेड की एक इकाई)

सार्वजनिक सूचना - पर्यावरण मंजूरी

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मैक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, लखनऊ (स्टारलिट मेडिकल सेंटर प्राइवेट लिमिटेड की एक इकाई), को राज्य पर्यावरण प्रभाव आकलन प्राधिकरण (एस.ई.आई.ए.ए.), उत्तर प्रदेश द्वारा विराज खंड, गोमती नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में मौजूदा हॉस्पिटल के विस्तार के लिए पर्यावरणीय मंजूरी दी गई है। इसके लिए ई.सी. पहचान संख्या EC24C3804UP5482313N दिनांक 29.06.2024 है।

पर्यावरण मंजूरी की प्रति पर्यावरण मंत्रालय के परिवेश पोर्टल और मैक्स हेल्थकेयर इंस्टिट्यूट लिमिटेड की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

लिंक नीचे संलग्न हैं:

https://parivesh.nic.in/newupgrade/#/trackYourProposal/proposal-details?proposalId=SIA%2FUP%2FINFRA2%2F469899%2F2024&proposal=61624701

https://www.maxhealthcare.in/environmental-clearances?report_type=&hospital=26

इच्छुक व्यक्ति निम्नलिखित से भी संपर्क कर सकते हैं;

मैक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, लखनऊ
(स्टारलिट मेडिकल सेंटर प्राइवेट लिमिटेड की एक इकाई)
विराज खंड, गोमती नगर, लखनऊ यू.पी.
फ़ोन: +91-522-6780 001, 6780 002
www.maxhealthcare.in

शिया कालेज में दाखिले को लेकर पहली मेरिट सूची आज

लखनऊ। शिया पीजी कालेज में सत्र 2024-25 में स्नातक स्तर पर बीए, बीएससी (बायो वर्ग), बीएससी (गणित वर्ग), बीकॉम, बीबीए (आईबी) तथा बीए (जेएमसी) में प्रवेश की पहली सूची मंगलवार को जारी की जायेगी। इस सम्बन्ध में जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉ प्रदीप शर्मा ने बताया कि शिया कालेज के एडमिशन पोर्टल तथा कालेज की वेबसाइट पर प्रथम मेरिट लिस्ट जारी कर दी जायेगी। मेरिट लिस्ट में चयनित अभ्यर्थियों को सबसे पहले अपनी फीस ऑनलाइन माध्यम (नेट बैंकिंग, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड) से या एचडीएफसी बैंक के चालान से एचडीएफसी बैंक की किसी भी शाखा में नकद जमा करना होगा। किसी भी छात्र/छात्रा का शुल्क नकद (कैश) महाविद्यालय में जमा नही होगा। फीस जमा करने की अन्तिम तिथि 20 जुलाई होगी। जो अभ्यर्थी 20 जुलाई तक अपनी नहीं फीस जमा करेगा तो उसके स्थान पर प्रतीक्षा सूची के अभ्यर्थियों को प्रवेश दे दिया जायेगा।

अवैध कब्जे से खाली कराया चकमार्ग जेसीबी से कराई गई मिट्टी की पटाई

संवाददाता। मोहनलालगंज

कमिश्नर की फटकार के बाद तहसील प्रशासन ने अवैध कब्जों को लेकर अभियान छेड़ दिया है। एसडीएम की सख्ती के बाद सोमवार को मीसा गांव में राजस्व और पुलिस की संयुक्त टीम ने चकमर्ग से अवैध कब्जे खाली कराकर जेसीबी से फौरन पटाई द्यह्ड्ड दी। साथ ही अवैध कब्जेदारों को दोबारा अतिक्रमण करने पर कार्रवाई की चेतावनी दी गई है।

मोहनलालगंज के मीसा गांव में कुछ लोगों ने चकमार्ग पर अतिक्रमण कर खेतों में मिला रखा था। राजस्व टीम की निशानदेही के बावजूद अवैध कब्जेदार चकमार्ग खाली करने को तैयार नहीं थे। जिसे लेकर किसानों को खेतों तक आवागमन में हो रही परेशानी की समस्या ग्राम प्रधान ने एसडीएम बृजेश कुमार वर्मा को बताई। एसडीएम के आदेश पर सोमवार को राजस्व और पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर चिन्हांकन करने पहुंची। चकमार्ग की निशानदेही के बाद जेसीबी बुलाकर फौरन चकमार्ग की पटाई कराकर किसानों का आवागमन आसान कर दिया गया। एसडीएम ने बताया अवैध कब्जों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई के लिए कई टीम गठित की गई है। पुलिस की मदद से सभी टीम मंगलवार से अतिक्रमण खाली कराने के अभियान में जुटेंगी।

खत्म हुआ दुश्वारियों का झंझट जगमगाई सुनसान गलियां

● 38 स्ट्रीट लाइटों से नगर पंचायत की बहुप्रतीक्षित सड़कें हुईं रोशन

संवाददाता। मोहनलालगंज

नगर पंचायत प्रशासन ने मोहनलालगंज के मजरों की सूनसान गलियां रोशनी से जगमगा दी हैं। लोगों को रात के अंधेरे में दुश्वारियों का डर नही रह गया है। रात में स्ट्रीट लाइटों की दूधिया रोशनी काफी दूर तक छिटकने से किसानों को खेतों की देखरेख में भी आसानी हो रही है। लिहाजा स्थानीय लोग नगर पंचायत बोर्ड की पहल को सराह रहे हैं।

मोहनलालगंज में बेलहनी गांव के आवागमन के रास्ते पर रात में घुप्प अंधेरा पसर जाता था। जिसकी वजह से लोगों को रात में आवागमन के दौरान अपराधिक वारदातों और हादसों का डर सताता रहता था। नगर पंचायत बोर्ड ने बेल्हनी गांव के रास्ते पर अड़तीस स्ट्रीट लाइटें लगवा दी हैं। जिससे अब गांव का रास्ता रात में भी रोशनी से जगमगाता रहता है। इसी तरह हुलास खेड़ा नहर रोड से राजा खेड़ा गांव की रोड पर भी नगर पंचायत से आधा दर्जन स्ट्रीट लाइटें लगवाई गई हैं। जिसके बाद राजा खेड़ा की रोड भी रात में दूधिया रोशनी से जगमगाने लगी है । जिसकी रोशनी रात में गांव से लेकर खेतों तक बिखरी रहती है। उधर रायबरेली हाईवे से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की रोड पर भी आधा दर्जन स्ट्रीट लाइटें लगवाई गई हैं। जिससे रात में सीएचसी आने वाले मरीजों और तीमारदारों को आवागमन में काफी आसानी हो रही है।

सरकारी मेडिकल कॉलेजों की मान्यता को लेकर सीएम योगी ने की केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री से बात

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कहा, शीघ्र पठन-पाठन प्रारंभ करने को प्रतिबद्ध है सरकार, तैयारियों में कमी नहीं

प्रदेश के 13 जिलों में नए मेडिकल कॉलेजों की शुरुआत को एनएमसी द्वारा अनुमति मिलने में आये अवरोध के पीछे मानकों में अचानक हुए बदलाव मुख्य कारक हैं। राज्य सरकार ने प्रदेश में 13 नए स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालयों की परिकल्पना एनएमसी के 2020 में निर्धारित मानकों के आधार पर की थी। इन्हीं के आधार पर स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालयों द्वारा वर्ष 2023 में एनएमसी से एलओपी मॉगी गयी थी, जिससे कि वर्ष 2024-25 में शैक्षिक सत्र प्रारम्भ हो सके। जबकि एनएमसी वर्ष एमबीबीएस कोर्स के लिए 2023 में जारी नए मानकों के आधार पर निर्णय ले रही है।

इस बीच एक जनपद एक मेडिकल कॉलेज के संकल्प के प्रति प्रदेश सरकार ने अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है। शैक्षिक सत्र 2024-25 से प्रदेश के 13 जनपदों में नए मेडिकल कॉलेज में पठन- पाठन प्रारंभ हो जाएँ, इसके लिए सरकार सभी संभव विकल्पों को अपना रही है। सूत्रों के अनुसार, सभी राज्य स्वशासी चिकित्सा महाविद्यालयों द्वारा एनएममसी एक्ट 2019 के अनुच्छेद 28 (5) के अधीन अपील भी की गई है, वहीं दूसरी ओर, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वयं आगे बढ़कर केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा से वार्ता करते हुए इन मेडिकल कॉलेजों में 2024-25 के शैक्षिक सत्र को चलाने के लिए वर्ष 2020 में निर्धारित मानकों के आधार पर कार्यवाही की आवश्यकता पर बल दिया है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, राज्य सरकार ने 13 नए मेडिकल कॉलेजों की परिकल्पना एनएमसी के 2020 में निर्धारित मानकों के आधार पर की थी। इन्हीं के आधार पर वर्ष 2023 में एनएमसी से एलओपी मॉगी गयी थी, जिससे कि वर्ष 2024-25 में शैक्षिक सत्र प्रारम्भ हो सके। इस बीच एनएमसी द्वारा वर्ष 2023 में एमबीबीएस कोर्स के लिए नए मानक निर्धारित कर दिए गये । इस पर योगी सरकार ने उसी समय एनएमसी को पत्र लिखकर इन 13 नए मेडिकल कालेजों में पुराने मानकों के आधार पर निरीक्षण कराने का आग्रह किया था। न केवल उत्तर प्रदेश बल्कि, कई अन्य राज्यों एवं निजी मेडिकल कालेजों द्वारा भी एनएमसी से वर्ष 2023 में निर्धारित मानकों को स्थगित करने के लिए अनुरोध किया गया था क्योंकि नए मानकों में चिकित्सा शिक्षकों और अवस्थापना के मानक वर्ष 2020 के निर्धारित मानकों से कहीं अधिक हैं।

सूत्र बताते हैं कि विभिन्न स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालयों द्वारा चिकित्सा शिक्षकों के पदों को भरने के लिए पूरी कोशिश की गयी। राज्य सरकार द्वारा संविदा पर चिकित्सा शिक्षकों की नियुक्ति का अधिकार स्थानीय स्तर पर प्रधानाचार्य की अध्यक्षता में गठित कमेटी को दिया गया और नियमित चिकित्सा शिक्षकों की नियुक्ति के लिए 4 कमेटी गठित की गयी। एनएमसी के 2 मई 2024 के नोटिस के समय प्रदेश में लोकसभा चुनाव के कहते आदर्श चुनाव आचार संहिता लागू थी। आदर्श चुनाव आचार संहिता समाप्त होने के तुरन्त बाद फिर चिकित्सा शिक्षकों की नियुक्ति हेतु विज्ञापन जारी करके आवेदन माँगे गये और वर्तमान में चयन की कार्यवाही चल रही है।

मुख्य सचिव से अमेरिका दूतावास की वरिष्ठ वाणिज्यिक विशेषज्ञ ने भेंट की

● **अमेरिका-भारत परिवहन कार्यक्रम, हरित और स्मार्ट सड़कों व इमारतों आदि विषयों पर हुई विस्तृत चर्चा**

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह से ऑटोडेस्क की निदेशक कर्टनी लुटरमैन और अमेरिका दूतावास में वरिष्ठ वाणिज्यिक विशेषज्ञ रितु अरोड़ा ने भेंट की। भेंट के दौरान अमेरिका-भारत परिवहन कार्यक्रम, हरित और स्मार्ट सड़कों व इमारतों आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई।

मुख्य सचिव ने प्रदेश में निर्मित व निर्माणाधीन एक्सप्रेसवेज, पाइप पेयजल परियोजना, स्मार्ट रोड्स, ड्रेनेज सिस्टम तथा एडवांस ट्रैफिक मैनेजमेंट व महाकुम्भ-2025 आदि के बारे में विस्तार से बताया। बैठक में ऑटोडेस्क की निदेशक सुश्री कर्टनी लुटरमैन ने हरित और स्मार्ट रोड्स और बिल्डिंग की स्थापना में राज्य के प्रयासों में सहयोग करने की इच्छा व्यक्त की। उल्लेखनीय है कि ऑटोडेस्क एक अमेरिकन मल्टीनेशनल साफ्टवेयर कॉर्पोरेशन है, जो आर्किटेक्चर, इंजीनियरिंग, कंस्ट्रक्शन, मैन्यूफैक्चरिंग, मीडिया, एजुकेशन और इण्टरटेनमेंट इंडस्ट्रीज को सेवाएं प्रदान करता है। ऑटोडेस्क का मुख्यालय सेन फ्रांसिस्को कैलिफोर्निया में है। ऑटोडेस्क ने भारत और दुनियाभर में विभिन्न सड़क और राजमार्ग परियोजनाओं में काम किया है। बैठक में प्रमुख सचिव नगर विकास अमृत अभिजात, विशेष सचिव मुख्यमंत्री प्रथमेश कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

पर्यटन विभाग ने 'डेस्टिनेशन इमेज पर्सेप्शन' पर किया शोधः जयवीर सिंह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि पर्यटन विभाग ने आईआईएम लखनऊ द्वारा संचालित सेंटर फॉर मार्केटंग इन इमर्जिंग इकोनॉमीज (सीएमईई) में 'डेस्टिनेशन इमेज पर्सेप्शन' विषय पर एक शोध परियोजना के पूरा होने की घोषणा की है। इस शोध को प्रो. सत्य भूषण दास, प्रो. प्रियंका शर्मा और मोहन कृष्णन ने मार्केट एक्सेल रिसर्च एजेंसी के सहयोग से किया है। अध्ययन में उत्तर प्रदेश के विविध पर्यटन स्थलों की ब्रांडिंग और मार्केटिंग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई हैं। इस शोध द्वारा प्राप्त जानकारी उत्तर प्रदेश में पर्यटन के भविष्य को आकार देने में बहुमूल्य साबित होगा।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि हम स्वच्छता, बेहतर परिवहन सुविधाओं और बजट अनुकूल आवास पर ध्यान केंद्रित कर पर्यटन अनुभव को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हाल के वर्षों में उत्तर प्रदेश 'पर्यटन का गढ़' बनकर उभरा है, जिसमें बेहतर बुनियादी ढांचा, कनेक्टिविटी और सुविधाएं हैं। यूपी अपने 12 पर्यटन सर्किटों के साथ पर्यटकों को एक अवसर प्रदान करता है कि वे अपनी इच्छानुसार गंतव्य का चयन कर सकें। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि हर पर्यटक, आगंतुक सुखद अनुभव और पुनः वापस आने की इच्छा लेकर जाए। जयवीर सिंह ने बताया कि यह शोध, पर्यटन नीति 2022 के तहत किया गया है, जिसके तहत पर्यटन विभाग द्वारा 10 लाख रुपए की वित्तीय सहायता दी गई है। इसमें यात्रियों को उत्तर प्रदेश के प्रमुख गंतव्यों में भ्रमण के लिए प्रेरित करने वाली विशेषताओं के बारे में जागरूक करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरीकों को सम्मिलित किया गया है। रिसर्च में घरेलू पर्यटन के गंतव्यों के चयन से संबंधित रुझानों को समझने का प्रयास किया गया है। शोध में पाया गया है कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म यात्रियों को भ्रमण के लिए प्रेरित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। उत्तर प्रदेश घूमने आए ज्यादातर पर्यटक प्रियजनों के साथ सुखद समय बिताने के लिए आते हैंए जिससे प्रदेश की एक ऐसी छवि बनती है जहां पर्यटक फैमिली फ्रेंडली टूरिज्म संभव है। पर्यटन मंत्री ने बताया कि उत्तर प्रदेश का आगरा शहर ऐतिहासिक इमारतों के लिए प्रसिद्ध है। यहां बेहतर कनेक्टिविटी और सुविधाजनक यात्राओं के जरिए जल्द पहुंचा जा सकता है। मथुराए वृंदावनए वाराणसी और प्रयागराज आगंतुकों को अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। यहां के धार्मिक स्थलों पर अपेक्षाकृत आसानी से पहुंचा जा सकता है।

भाजपा की जीत सही मायने में कार्यकर्ताओं की जीतः खन्ना

● **लखनऊ उत्तर में भाजपा का मतदाता अभिनन्दन कार्यक्रम पुष्पवर्षा कर जताया आभार**

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भाजपा ने लोकसभा निर्वाचन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले लखनऊ उत्तर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। सोमवार को सायं डालीगंज स्थित मानस मंदिर परिसर में आयोजित विधान सभा स्तरीय मतदाता अभिनन्दन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राज्य सरकार के वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना सहभागी बने। मुख्य अतिथि सुरेश खन्ना महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी और क्षेत्रीय विधायक डॉ नीरज बोराने कार्यक्रम का शुभारंभ पंडित दीनदयाल उपाध्याय और श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि के साथ किया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए वित्त मंत्री खन्ना ने कहा कि तीसरी बार मोदी सरकार का नारा साकार करने में भाजपा कार्यकर्त्ताओं ने दिन रात मेहनत की है। लखनऊ में भाजपा की जीत सही मायने में कार्यकर्ताओं की जीत है जिसका श्रेय क्षेत्रीय जनता, मतदाताओं, पार्टी कार्यकर्त्ताओं और आप सबको जाता है। उन सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने लोकतंत्र के महापर्व में अपनी भागीदारी निभाई। भाजपा महानगर अध्यक्ष आनन्द द्विवेदी ने पार्टी के प्रतिबद्ध कार्यकर्त्ताओं और समर्थकों को जीत का असली नायक बताया। कहा कि लगातार तीसरी बार राजनाथ को सम्मानित जीत दिलाकर जिस विश्वास के साथ आप सबने लोकसभा भेजा है उसे पूरा करने के लिए वे वचनबद्ध हैं। क्षेत्रीय विधायक डा. नीरज बोरा ने कहा कि लखनऊ उत्तर क्षेत्र में भाजपा को विधान सभा चुनाव से भी अधिक मत मिले। राजनाथ के नेतृत्व में हुए लखनऊ के ऐतिहासिक विकास और सेवा कार्यों को जनता ने अपना आशीर्वाद दिया जो अभिनन्दनीय है। कार्यकर्त्ताओं के प्रति आभार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि देश के यशस्वी रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के नेतृत्व मे लखनऊ के विकास की गति को नया आयाम मिलेगा। मीडिया प्रभारी प्रवीण गर्ग ने बताया कि इस अवसर पर महामंत्री रामऔतार कनौजिया, भाजपा महानगर उपाध्यक्ष सौरभ वाल्मीकि, घनश्याम अग्रवाल, डा. शेलेन्द्र शर्मा अटल, दिनेश तिवारी मानवेंद्र सिंह, विजय भुर्जी मण्डल अध्यक्षगण विशाल गुप्ता, रमन निगम, लवकुश त्रिवेदी, रामशरण सिंह, राकेश पाण्डेय, भाजपा के सभी पार्षदगण, मोर्चा व प्रकोष्ठों के प्रभारी समेत क्षेत्रीय जन उपस्थित रहे।

निषाद राज बोट योजना के लिए लगभग पांच करोड़ स्वीकृत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश सरकार ने मछुआ समुदाय के कल्याण के लिए संचालित निषाद राज बोट योजना के अंतर्गत वर्तमान वित्तीय वर्ष में रुपए 499.9808 लाख की धनराशि स्वीकृत की है। इस संबंध में मत्स्य विकास विभाग द्वारा शासनादेश जारी करते हुए निदेशक मत्स्य को आवश्यक दिशा निर्देश जारी कर दिए गए हैं। शासनादेश में कहा गया है कि स्वीकृत की जा रही धनराशि का आहरणध्व्यय अनुमोदित कार्य योजना एवं योजना हेतु निर्धारित दिशा निर्देशों गाइडलाइंस एवं संगत नियमों के अनुसार किया जाएगा तथा व्यय विवरण सहित उपयोगिता प्रमाण पत्र शासन को उपलब्ध कराया जाएगा। यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि इस हेतु पूर्व में किसी अन्य योजना या स्रोत से धनराशि स्वीकृत नहीं की गई है।

सपा प्रतिनिधि मण्डल 11 को जाएगा गोण्डा

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देशानुसार समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधि मण्डल दिनांक 11 जुलाई को जनपद गोण्डा जायेगा। जनपद गोण्डा के नरैनापुर खडौवा थाना नवाबगंज निवासी राम कुमार शर्मा के पुत्र अमर प्रताप शर्मा की अयोध्या में संदिग्ध परिस्थितियों में हुई हत्या की जांच एवं जानकारी तथा शोकाकुल परिवार से मिलने हेतु प्रतिनिधि मण्डल नरैनापुर खडौवा जनपद गोण्डा पहुंचेगा। प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यगण है अवधेश प्रसाद सांसद लोकसभा क्षेत्र फैजाबाद (अयोध्या) राम आसरे विश्वकर्मा राष्ट्रीय सचिव समाजवादी पार्टी, पवन पाण्डेय पूर्व मंत्री, पारसनाथ यादव जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी फैजाबाद, अरशद हुसैन जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी गोण्डा, भगत राम मिश्र पूर्व लोकसभा प्रत्याशी कैसरगंज एवं सूरज सिंह पूर्व विधान सभा प्रत्याशी।

संसद में स्थापित हो संविधान की प्रतिः कुंवर फतेह बहादुर

लखनऊ। सामाजिक संस्था बहुजन भारत के अध्यक्ष एवं पूर्व आईएएस कुंवर फतेह बहादुर ने कहा कि देश में 1950 में भारतीय संविधान लागू हुआ था और इस संविधान को लागू हुए 74 साल हो गए हैं, लेकिन भाजपा सरकार ने नए संसद भवन में राजतंत्र के प्रतीक राजदंड सेंगोल को स्थापित कर दिया। उन्होंने कहा कि संविधान में पंथनिरपेक्ष, समाजवाद लोकतंत्रात्मक गणराज्य स्थापित करने और भारत की संप्रभुता बनाए रखने की बात कही गई है, लेकिन भाजपा सरकार ने नई संसद भवन में लोकसभा अध्यक्ष की पीठ के ठीक पीछे सेंगोल यानि राजदंड को स्थापित कर दिया। इससे भाजपा की राजशाही सोच सामने आ गई है। संस्था के अध्यक्ष ने कहा कि सपा सांसद आरके चौधरी ने संसद की सदस्यता की शपथ लेने के साथ ही लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर पीठ के ठीक पीछे स्थापित लोकतंत्र विरोधी राजदंड को हटाकर उसकी जगह भारतीय संविधान की विशालकाय प्रति स्थापित करने की मांग की।

सफाई अभियान में लापरवाही पर प्रशासन सख्त, नोटिस जारी कर मांगा जवाब

मोहनलालगंज। संचारी रोग नियंत्रण अभियान में लापरवाही की शिकायतों को लेकर जिला प्रशासन ने सख्ती शुरू कर दी है। पंचायतों की साफ सफाई के लिए तैयार किए गए रोस्टर के अनुसार सफाई कर्मियों की उपस्थिति का रियलिटी चेक किया जा रहा है। इस दौरान ड्यूटी से नदारद मिले तीन सफाई कर्मियों को शो कॉज नोटिस जारी किया गया है। मोहनलालगंज की ग्राम पंचायतों में पहली जुलाई से 31 जुलाई तक संचारी रोग नियंत्रण अभियान के तहत विशेष सफाई अभियान चलाया जा रहा है। जिसके लिए ब्लॉक के सभी सफाई कर्मियों का दिवस वार रोस्टर तैयार किया गया है। सफाई कर्मियों की आधा दर्जन टीम प्रतिदिन निर्धारित पंचायतों में साफ सफाई झाड़ियों की कटाई और जलभराव दूर करने के कार्य के लिए जुटाई जा रही हैं। लेकिन कुछ सफाई कर्मी बिना सूचना दिए ड्यूटी से गैरहाजिर रहकर प्रशासन के प्रयासों से खिलवाड़ कर रहे हैं। लिहाजा सीडीओ अजय जैन और डीपीआरओ हिमांशु शेखर ठाकुर के निर्देश पर विकास भवन में स्पेशल सेल प्रतिदिन सफाई कर्मियों को फोन उनकी उपस्थिति का रियलिटी चेक कर रही है। इस दौरान ड्यूटी से गायब मिलने वाले सफाई कर्मियों के विरुद्ध कार्रवाई की जा रही है। वहीं ब्लॉक मुख्यालय से भी रैंडम आधार पर सफाई कर्मियों की उपस्थिति का रियलिटी चेक करने के साथ ही सचिव और प्रधानों से भी उनकी उपस्थिति की हकीकत पता कराई जा रही है। एडीओ पंचायत अशोक यादव ने बताया ग्राम पंचायत करोरा में ड्यूटी से नदारद पाए गए तीन सफाई कर्मी को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण तलब किया गया है। बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव ने बताया संचारी रोग नियंत्रण अभियान में लापरवाही पाए जाने पर संबंधित कर्मचारी का वेतन रोककर विभागीय कार्रवाई के लिए डीपीआरओ को पत्र भेजा जाएगा।

दिव्यांगजन को हुनरमंद प्रदान किया जाएगा कौशल प्रशिक्षण

लखनऊ। पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण मंत्री नरेन्द्र कश्यप ने सोमवार को विधानसभा स्थित अपने कार्यालय में विभागीय समीक्षा बैठक की। इस बैठक में उन्होंने निर्देश दिए कि पिछड़े वर्ग के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने की कार्यवाही समयबद्ध रूप से सुनिश्चित की जाए। साथ ही शादी अनुदान योजना के अंतर्गत आने वाले आवेदनों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित कर लाभार्थियों को योजना का लाभ शीघ्र प्रदान करने के निर्देश दिए। मंत्री ने विभागों के रिक्त पदों को शीघ्रता से भरने के लिए तत्काल आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। जिन रिक्तियों की तैनाती अन्य विभागों के माध्यम से होनी हैए वहां पर पत्राचार कर तैनाती सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने विभागों में रिक्त पदों को समयबद्ध तरीके से भरने के निर्देश दिए हैं और इस प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की लापरवाही या शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। मंत्री ने यह भी निर्देश दिए कि पिछड़ा वर्ग के युवाओं के लिए संचालित कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए उच्च गुणवत्ता वाली संस्थाओं का चयन किया जाए, ताकि प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हो और युवाओं को रोजगार तथा स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त हो सकें।

सफाई कर्मियों व उनके आश्रितों के पुनर्वास के लिए दिया गया प्रशिक्षण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

आईसीएआर-एनबीएफजीआर की मिशन नवशक्ति, अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत सफाई कर्मचारियों/ स्कैवेंजर्स और उनके परिवार के जीवन में क्रांति लाने की कवायद हो रही है। इसी कड़ी में वाल्मीकि सभागार, वाल्मीकि पुरी में सफाई कर्मचारियों के परिजनों को एक्वेरियम निर्माण, और सजावटी मछलियों के पालन-पोषण का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। मछली विशेषज्ञ इंद्रमणि राजा ने बताया कि मिशन नवशक्ति द्वारा व्यापक प्रशिक्षण और समर्थन के माध्यम से, व्यक्तियों को उनकी रचनात्मकता और उद्यमिता को उजागर करने का माध्यम प्रदान किया जाता है। यह न केवल उन्हें एक्वेरियम बनाने और सुंदर मछलियों की पोषण की तकनीकी जानकारी प्राप्त करने का अवसर देता है, बल्कि उन्हें व्यापार प्रबंधन और विपणन रणनीतियों में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। यह समग्र प्रस्तुति सुनिश्चित करती है कि नई प्राप्त कौशल स्थायी आजीविका में बदलने के साथ-साथ, प्रत्याशा और संभलता की समर्थन के बिना गरीबी और आश्रितता के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने में मदद करती है। इन माइक्रो-उद्यमों को प्रारंभ करने के लिए, प्रत्येक सहभागी को एक मौलिक महत्वपूर्ण स्टार्टअप आवश्यकता समेत इनपुट किट प्रदान की जाती है, जिसमें एक एयर फिल्टर, पंप, पेबल्स, और लाइट शामिल हैं।

भगवान झूलेलाल का चालीहा पर्व सिन्धी समाज धूमधाम से मनाएगा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राजधानी में भगवान झूलेलाल की चालीहा बहुत ही धूम धाम से मनाया जाता है। चेट्टी चंद मेला कमेटी भगवान झूलेलाल सांई का चालीहा मानने की तैयारियां कर रह रही है। मेला कमेटी के प्रवक्ता अशोक मोतियानी ने बताया की लखनऊ सहित पूरे प्रदेश में सिंधी समाज के इष्ट देव भगवान झूलेलाल का चालीहा पर्व बड़े ही धूम धाम मनाएं जाने की तैयारियां जोरों शोरों से शुरू हो चुकी है।

मेला कमेटी के अध्यक्ष रतन मेघानी, महामंत्री संजय जसवानी कोषाध्यक्ष सतेन्द्र भावनानी ने संयुक्त रूप से बताया की लखनऊ में भगवान झूलेलाल के मंदिरों में वा सिंधी बाहुल्य क्षेत्रों में यह हर रोज पूजा अर्चना कर आरती व प्रसाद वितरण के आयोजन लगातार किए जाएंगे। इसी कड़ी में सिंधु नगर सिंधी पंचायत अध्यक्ष अशोक चंदवानी, महेश तेलरेजा, दिनेश राय चंदानी, नीरज राज्यपाल का कहना है की सिंधी पंचायत कृष्णानगर में भगवान झूलेलाल का चालीहा लगातार 40 दिन तक 16 जुलाई से मनाया जाना है। इंद्रा नगर सिंधी पंचायत के अध्यक्ष हंसराज राज्यपाल,राजू जसवानी गुलाब जसवानी के अनुसार भगवान झूलेलाल मन्दिर इंद्रा नगर में हमेशा से ही बड़ी संख्या में रोज सिंधी महिलाएं और पुरुष पूजा अर्चना कर प्रसाद वितरण करेंगें।

परफारमेन्स के आधार पर करें तैनातीः अध्यक्ष

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उप्र पावर कारपोरेशन एवं अन्य ऊर्जा निगमों के अध्यक्ष डॉ आशीष कुमार गोयल ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की परफारमेन्स के आधार पर तैनाती के निर्देश दिये है। उन्होंने कहा है कि किसी भी कार्मिक की तैनाती में उसके द्वारा किये गये कार्यों के मूल्यांकन को आधार बनाया जाना चाहिए। साथ ही पारदर्शिता, सुचिता एवं ईमानदारी का विशेष ध्यान रखा जाये।

अध्यक्ष ने कहा है कि ईआरपी पर ऊर्जा निगमों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बारे में समस्त आवश्यक जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध है इसलिए तैनाती में कार्मिकों से कोई फार्म आदि न भरवाया जाये। डॉ आशीष कुमार गोयल ने कहा है कि तैनाती में कार्मिकों का सेवा इतिहास, परफारमेन्स एवं उसकी छवि आदि पर सम्यक विचार करके निर्णय लिया जाये। जिससे वह उपभोक्ता व विभाग को बेहतर सेवा दे सके। उन्होंने निर्देशित किया है कि प्रशासनिक आधार पर स्थानान्तरित अधिकारियों को संवेदनशील, नगरीय तथा राजस्व के लिए एशपिरेशनल क्षेत्रों में तैनात न किया जाये। अध्यक्ष डॉ आशीष कुमार गोयल ने आज आगरा क्षेत्र में विद्युत व्यवस्था से सम्बन्धित कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने इस क्षेत्र में विद्युत सम्बन्धी कार्यों की प्रगति पर गहरा असन्तोष व्यक्त किया। उन्होंने अनेक अधिकारियों को चार्जशीट जारी करने तथा चेतावनी परामर्श देने के लिये भी निर्देश दिये। शक्ति भवन से वीडियो कांफ्रेन्सिंग के माध्यम से सम्पन्न इस समीक्षा बैठक में अध्यक्ष बिलिंग, राजस्व वसूली, लाइन हानियाँ कम करने तथा विद्युत ढ़ाचागत सुदृढ़ीकरण आदि की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहाकि आगरा क्षेत्र का कार्य ठीक नहीं हो रहा है। यहाँ अधिकारी काम नहीं कर रहे हैं। अध्यक्ष ने आगरा ईडीडी-।। के अधिशासी अभियन्ता को प्रतिकूल प्रविष्टि तथा ईडीडी-। एवं बाह के अधिशाषी अभियन्ता को चार्जशीट देने के निर्देश दिये तथा आगरा क्षेत्र के मुख्य अभियन्ता तथा अधीक्षण अभियन्ता को परामर्श जारी करने के निर्देश दिये। उन्होंने चेतावनी दी कि आगामी एक महीने में कार्य ठीक नहीं हुआ तो कड़ी कार्यवाई होगी। अध्यक्ष ने आज निर्माणाधीन तापीय परियोजनाओं की भी समीक्षा की। उन्होंने तापीय परियोजनाओं के निर्माण में तेजी लाने हेतु कड़े निर्देश दिये। ज्ञातव्य है कि पनकी, जवाहरपुर, घाटमपुर तथा ओबरा में नई तापीय परियोजनायें निर्माणाधीन है। अध्यक्ष ने कहा कि निर्माण कार्यों की लगातार मानीटरिंग करके सारे कार्य निश्चित समय से पूर्ण किये जाये।

संयुक्त टीम ने किया सर्वे शुरू, पहले दिन 20 मकानों में लगाया लाल निशान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शहर में कुकरैल नदी के किनारे दूसरे अभियान पर विभाग जुट गए हैं। अकबरनगर को जमींदोज करने के बाद कुकरैल रिवर फ्रंट के रास्ते में आ रहे रहीमनगर, खुर्रमनगर, इंद्रप्रस्थ नगर, पंतनगर, अबरारनगर के अवैध निर्माण गिराने के लिए प्रशासन निकल पड़ा है। प्रशासन की संयुक्त टीम ने सोमवार से सर्वे शुरू कर दिया। पहले दिन 20 मकानों में लाल निशान लगाया गया। यह देख इनमें रहने वाले परिवार परेशान हो गए।

सोमवार को रहीमनगर में एलडीए सहित अन्य विभाग के अधिकारी सर्वे करने फील्ड पर निकल पड़े।एलडीए नगर निगम, सिंचाई और राजस्व विभाग के अफसर सर्वे का कार्य में जुट गए। सुबह ही भारी पुलिस बल के साथ अपर जिला मजिस्ट्रेट राकेश कुमार एवं सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता मुकेश वैश्य के संयुक्त नेतृत्व में सिंचाई विभाग की टीम ने रहीमनगर बंधे के पास कुकरैल से 50 मीटर के दायरे की नापजोख शुरू की। टीम ने लगभग एक किमी तक सर्वे किया और कुकरैल रिवर फ्रंट के दायरे में आने वाली जमीन पर लाल निशान लगाया।

टीम जैसे ही रहीमनगर में दाखिल हुई, घरों से पुरुष, महिलाएं व बच्चे निकल आए। मकानों पर लाल निशान लगना शुरू हुए तो महिलाएं रोने लगीं। बिलखते हुए टीम से कहा, जब मकान बन रहे थे तो कोई रोकने क्यों नहीं आया। 40 साल से इन मकानों में रहकर हाउस टैक्स, वाटर टैक्स चुका रहे हैं। कुकरैल रिवर फ्रंट के नाम पर उन्हें उजाड़ने की कोशिश शुरू की गई है। पहले दिन टीम ने जिन 20 घरों में लाल निशान लगाए वे काफी बड़े हैं। दोपहर 2:30 बजे तक सर्वे कर टीम लौट गई। इसमें एलडीए की ओर से अपर सचिव ज्ञानेंद्र वर्मा व अधिशासी अभियंता राजकुमार आदि थे।

स्टेट बैंक स्टॉफ एसोसिएशन द्वारा 11वां त्रैवार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया स्टॉफ एसोसियेशन, लखनऊ मंडल द्वारा 11वां त्रैवार्षिक अधिवेशन आज आनन्दी वाटर पार्क स्थित हॉल में कामरेड अजय पाण्डेय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन के मुख्य अतिथि शरद स चांडक, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, लखनऊ मंडल व विशिष्ट अतिथिगण काम संजीव कुमार बंदलिश, (चण्डीगढ) व काम अरूण भगोलीवाल (भोपाल) के साथ स्टेट बैंक के विभिन्न मंडलों के अध्यक्ष, महासचिव, पर्यवेक्षकों के साथ 1400 से अधिक सदस्य उपस्थित रहे। प्रारम्भ में गणेश व माँ सरस्वती की वंदना तथा दीप प्रज्ज्वलन के साथ अधिवेशन का शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शरद स चांडक, मुख्य महाप्रबन्धक ने कहा कि हमें ग्राहक सेवा एवं अनुपालन पर और अधिक जोर देने की जरूरत है। मंडल महांमत्री का. दिनेश कुमार सिंह ने मुख्य मांगो यथा श्रमिक विरोधी कानूनों की समाप्ति, बैंकों के निजीकरण का विरोध, सभी कर्मचारियों को बोनस, पाँच दिवसीय बैंकिंग शीघ्र करने, आउट सोर्सिंग को समाप्त करने, पेंशन और पारिवारिक पेंशन को अपडेट करने हेतु भारत सरकार को इन्हें शीघ्र लागू करने पर जोर दिया तथा कहा कि न हमें रूकना है और न थकना है। सभा में संजीव कुमार बंदलिश (संयोजक-यूएफबीयू तथा महामंत्री - एआईएसबीआईएसएफ) ने बताया हमारा संगठन 20 जुलाई 1920 को पंजीकृत हुआ, जो आज लाखों सदस्यों के साथ एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। इस अवसर पर काम संजीव कुमार बंदलिश, (चण्डीगढ) व काम अरूण भगोलीवाल, (भोपाल) जो इसी माह सेवानिवृत्ति हो रहे हैं, को अंगवस्त्र तथा स्मृति चिन्ह देकर विशेषरूप से सम्मानित किया गया।

अवैध अप्रवासन राष्ट्रीय सुरक्षा, एकता और अखंडता के लिए गंभीर खतरा

संवाददाता। लखनऊ

सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने सोमवार को अवैध अप्रवासियों के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए भारत में अवैध अप्रवासन को राष्ट्रीय सुरक्षा, एकता और अखंडता के लिए गंभीर खतरा बताया है। साथ ही उन्होंने अवैध अप्रवासन के दुष्परिणामों को भी उल्लेखित किया है।

डॉ. सिंह ने अपने आधिकारिक एक्स (ट्विटर) पर पोस्ट करते हुए लिखा कि गृह मंत्रालय के चौंकाने वाले खुलासे के अनुसार, भारत में अवैध अप्रवासियों की संख्या आज लगभग 2 करोड़ है। जिनमें से अधिकांश बांग्लादेश से आए हैं। इससे भी अधिक परेशान करने वाली बात यह है कि 2004 में एन.एस. जामवाल द्वारा प्रकाशित एक पेपर के अनुसार, सामान्य नियम यह है कि अगर 4 अवैध अप्रवासी देश में घुसते हैं तो हम उसमें से केवल 1 को ही पकड़ पाते है, जिसका अर्थ है कि भारत में प्रवेश करने वाले अवैध अप्रवासियों की संख्या 8-10 करोड़ के बीच भी हो सकती है। डॉ. सिंह ने आगे लिखा कि इस पूर्वानुमान के अनुसार, आज भारत में अवैध अप्रवासियों की संख्या फ्रांस, इटली और स्पेन जैसे देशों की जनसंख्या से अधिक है।

इस तरह अवैध आप्रवासन को आधुनिक महामारी के रूप में देखा जा सकता है और इससे निपटना हमारे देश की अखंडता और सुरक्षा के लिए अत्यावश्यक है। सरोजनीनगर विधायक ने जनसांख्यिकी परिवर्तन पर चिंता व्यक्त करते हुए आगे लिखा कि भारत में अवैध प्रवासियों की बेरोकटोक आमद और इसके परिणामस्वरूप विभिन्न राज्यों के जनसांख्यिकीय पैटर्न में प्रत्यक्ष परिवर्तन गंभीर चिंता का विषय बन गया है।

साइट न खुलने से शिक्षकों की नहीं लग पाई ऑनलाइन हाजिरी

बीजपुर/सोनभद्र। उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा परिषदीय विद्यालयों में पंजिकाओं की टीजीटाईजेशन के संबंध में ऐसे विद्यालयों में कार्यरत समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं एवं अन्य कर्मियों द्वारा प्रतिदिन अपनी उपस्थिति विद्यालय आगमन एवं प्रस्थान डिजिटल उपस्थिति माह जुलाई की 15 तारीख से सुनिश्चित किया गया था। लेकिन यदि शिक्षकों की माने तो पुन: विभाग के निर्देशानुसार यह नियम 08 जुलाई से हीं लागू कर दिया गया। न्याय पंचायत जरहां के विभिन्न ग्राम सभाओं के परिषदीय विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाओं एवं अन्य कर्मियों ने ऑनलाइन हाजरी लगाने के लिए अपने अपने विद्यालयों पर संबंधित एप से साइट खोलने की कोशिश करते रहे लेकिन साइट नही खुलने से उनकी उपस्थिति ऑनलाइन नही लग पाई। विद्यालय में उपस्थित शिक्षक शिक्षिकाओं एवं अन्य कर्मियों ने अपनी उपस्थिति रजिस्टर में लगाई। इसके संदर्भ में न्याय पंचायत जरहाँ के अनजानी सेवकाडॉड़ कंपोजिट विद्यालय बीजपुर नेमना पिंडारी महुली रजमिलान जरहाँ आदि विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाओं व अन्य कर्मियों ने अपनी बाहों पे काली पट्टी बांधकर विरोध जताया।

20 बालिकाओं को वधू बनने से बचाया

सोनभद्र। चाईल्ड हेल्पलाइन से सूचना प्राप्त हुई की थाना रावर्टसगंज अन्तर्गत पंचमुखी महादेव मन्दिर पर एक नाबालिग बालिका की शादी हो रही है जिस पर तत्काल संज्ञान लेते हुए जिला बाल संरक्षण अधिकारी पुनीत टंडन द्वारा जिला बाल संरक्षण इकाई से ओ आर डब्ल्यू शेषमणि दुबे चाईल्ड हेल्पलाइन यूनिट से केस वर्कर सीमा शर्मा अनिल यादव सुपरवाईजर सुधा गिरी की संयुक्त टीम गठित करते हुए आवश्यक कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया जिसके उपरान्त टीम द्वारा चौकी चुर्क से समन्वय स्थापित करते हुए मौके पर पहुंच कर 16 वर्ष की नाबालिग बालिका को अपने अभिरक्षा मे लेते हुए बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत कर दिया गया। केस वर्कर सीमा शर्मा द्वारा बताया की बालिका की काउंसलिंग के उपरान्त नियमानुसार विधिक कार्यवाही की जायेगी। ओआरडब्ल्यू शेषमणि दुबे नें बताया की जिला बाल संरक्षण इकाई, चाईल्ड हेल्पलाइन यूनिट एवं पुलिस विभाग की टीम द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 मे अभी तक कुल बीस नाबालिग बालिकाओ को वधू बनने से बचाया गया है बाल विवाह रोकथाम हेतु जनपद स्तर पर विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

27.5 लाख की नगदी के साथ युवक गिरफ्तार

मुग़लसरायध्चन्दौली। ।डीडीयू जीआरपी ने सोमवार को चेकिंग के दौरान प्लेटफार्म संख्या.1 से एक संदिग्ध युवक को गिरफ्तार किया जिसके चेकिंग के दौरान उसके उसके पिट्ठू बैग से 27ण्5 लाख रुपए नगद बरामद किया। जीआरपी ने मामले की सूचना आयकर विभाग को दे दी और अग्रिम कार्यवाही में जुड़ गई। दरअसल त्योहारों को देखते हुए जीआरपी व आरपीएफकी संयुक्त टीम ने हावड़ा दिल्ली के व्यस्ततम स्टेशन में शुमार पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन पर सोमवार को चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान प्लेटफार्म संख्या.1 पर एक संदिग्ध युवक दिखाई दिया। जो पुलिस को देखकर हक्का.बक्का रह गया। जीआरपी ने जब युवक के पिट्ठू बैग की तलाशी ली तो उसके पास से 27ण्5 लाख रुपए नगद बरामद हुए। पूछे जाने पर युवक के पास नगदी से संबंधित किसी प्रकार के कागज नहीं प्राप्त हुए। इसके बाद जीआरपी उसे थाने ले आई। वहीं जीआरपी ने इस मामले की सूचना आयकर विभाग को दे कर अग्रिम कार्यवाई में जुट गई।वही इस मामले में सीओ रेलवे श्यामजीत ने बताया कि त्योहारों के मद्देनजर चेकिंग की जा रही थी। उसी क्रम में प्लेटफार्म संख्या .1 से एक युवक को गिरफ्तार किया गया है। जिसके पास 27ण्5 लख रुपए नगद बरामद हुए हैं। युवक की पहचान गौरव सेठ ;28द्ध निवासी गोपीगंज जिला भदोही के रूप में हुई। मामले में आयकर विभाग को भी सूचना दे दी गई है। इसके अलावा युवक से पूछताछ में उसने बताया कि की ये नगदी उसके मालिक की है जिसे वो हावड़ा लेकर जा रहा था। मामले में अग्रिम कार्यवाई जारी है। आगे भी ऐसे ही स्टेशन पर चेकिंग अभियान जारी रहेगी। जिससे तस्करों पर रोक लगाई जा सके।

सीएमओ को हटाने की मांग को लेकर काग्रेस सड़क पर उतरेगी

मिर्जापुर। पिछले आठ दिनों से आम आदमी पार्टी व काग्रेस पार्टी की ओर से लगातार सीएमओ की ओर से व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने करने का लगातार कार्य कर रही है। इन्ही सब को लेकर काग्रेस पार्टी के महासचिव मनीष दुबे ने जिलाधिकारी को ज्ञापन देकर अवगत कराया कि सीएमओ को तत्काल हटाने का कार्य करें कि सीएमओ आफिस का कर्मचारी मेडिकल कालेज में मारपीट करता है उसकेओर से विभागीय स्तर पर आज तक कोई कार्यवाही नही किया गया जबकि मेडिकल कालेज ने तत्काल डॉक्टर तरूण पर कार्यवाही करते हुए लखनउ भेजने का कार्य किया है जो एक सराहनीय कार्य है जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। लेकिन सीएमओ स्तर से कोई कार्यरत कर्मचारी पर आज तक कार्यवाही नही किया बल्कि बचाने का कार्य किया जा रहा है इसके साथ पैथालांजी सेन्टर को लेकर भी ज्ञापन दिया और मीडिया स्तर पर दो दर्जन से अधिक समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया लेकिन उसके बावजूद सीएमओ स्तर से कोई कार्यवाही नही किया गया। इससे यह साफ पता चलता है कि शासन व प्रदेश सरकार के आदेशो का किस स्तर तक पालन किया जा रहा है। केन्द्रों का हाल छोड़े इनके खुद के आफिस के कर्मचारी एक बजे तक कमरा बन्द कर गायब रह रहे है जिसकीइनकी जारी स्वत नही है इस तरह की लापरवाही क्षम्य नही है अगर उच्चाधिकारियों द्वारा नही कार्यवाही किया गया तो काग्रेस पार्टी जल्द जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन करने का कार्य करेगी। इनके विरोध में 16 जुलाई से मंडलीय चिकित्सालय स्थित एडी आफिस में इनके कार्यो के विरोध में अतुल पाठक भी भूख हड़ताल पर बैठने जा रहे है। इनके इस कार्य में काग्रेस पार्टी इनका सहयोग भी करेगा।

भतिजें पर गोला चलानें वालें बड़े पिता को पुलिस नें किया गिरफ्तार

सोनभद्र। थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस द्वारा अथक प्रयास से 24 घण्टे के भीतर थाना रॉबर्ट्सगंज पर दर्ज मुकदमें में अभियुक्त को किया गिरफ्तार करनें के साथ ही लाइसेन्सी बन्दूक व खोखा कारतूस बरामद कर लिया। रविवार को शिवा जी सिह पुत्र जंग बहादुर सिह निवासी बाजूतारा थाना रॉबर्टसगंज द्वारा थाना रॉबर्ट्सगंज पर अपने बड़े पिता गुलाब सिंह द्वारा घरेलू विवाद मे वीडियो बनाने की बात को लेकर गोली मार देने जिससे खुद के घायल होने के सम्बन्ध मे एक लिखित तहरीर प्राप्त हुई जिसके आधार पर थाना रॉबर्ट्सगंज पर मुकदमा दर्ज करनें के साथ ही उक्त प्रकरण में शीघ्र गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह द्वारा निर्देशित किया गया उक्त निर्देश के क्रम में सोमवार को थाना रॉबर्ट्सगंज के उ0नि0 बृजेश कुमार दूबे हे0का0 राजकुमार सिंह का0 शशिकान्त राठौर व म0हेका0 सिम्पी सिंह द्वारा अभियुक्त गुलाब सिह पुत्र स्व0 छत्रधारी सिह निवासी बाजूतारा थाना रॉबर्ट्सगंज को उसके घर के पीछे से 13.35 बजे गिरफ्तार किया गया। तथा घटना मे इस्तेमाल लाइसेंसी बन्दूक 12 बोर व एक अदद खोखा कारतूस व एक अदद जिन्दा कारतूस को कब्जा पुलिस मे लिया गया। गिरफ्तार अभियुक्त को अग्रिम कार्यवाही हेतु न्यायालय भेजा गया।

बहु की तहरीर पर सास, ननद व पति पर मुकदमा हुआ दर्ज

बीजपुर/सोनभद्र। स्थानीय थाना क्षेत्रान्तर्गत स्थित चेतवाँ के टोला महुअरिया निवासिनी किरण देवी पत्नी राजकुमार ने पारिवारिक विवाद से तंग आकर बीजपुर थाने में तहरीर देकर अपनी सास जीरा देवी पत्नी राम प्रसाद ननद चंदा देवी पुत्री राम प्रसाद व पति राज कुमार पुत्र राम प्रसाद के खिलाफ उचित कार्यवाही करने की माँग की है।

कुम्भ में संभावित भीड़ को लेकर मंथन

कुंभ मेला की भीड़ नियंत्रण के लिए रेलवे ने की सिविल प्रशासन के साथ बैठक

प्रयागराज। अपर मंडल रेल प्रबंधक सामान्य प्रशासन प्रयागराज संजय सिंह की अध्यक्षता में सोमवार को। प्रयागराज मंडल कार्यालय के संकल्प सभागार में कुंभ मेला 2025 की तैयारी के लिए प्रयागराज मंडल की सिविल प्रशासन के साथ समन्वय बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान कुंभ मेला 2025 हेतु मेला क्षेत्र से रेलवे स्टेशन के मूवमेंट प्लान को अंतिम रूप देने के लिए प्लान की समीक्षा की गई। इस दौरान सिविल प्रशासन द्वारा पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रयागराज क्षेत्र के रेलवे स्टेशनों से मूवमेंट प्लान की विस्तृत जानकारी साझा की गई। प्रयागराज क्षेत्र में प्रयागराज मण्डल उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज जंक्शन प्रयागराज छिवकी नैनी और सूबेदारगंज रेलवे स्टेशन लखनऊ मण्डल उत्तर रेलवे के प्रयाग जंक्शन फफमऊ और प्रयागराज संगम रेलवे स्टेशन तथा वाराणसी मण्डल पूर्वोत्तर रेलवे के प्रयागराज रामबाग और झूंसी रेलवे स्टेशन आते हैं। बैठक में माघ मेला 2025 के दौरान विशेष पर्व पौष पूर्णिमा मकर संक्रांति मौनी अमावस्या बसंत पंचमी माघी पूर्णिमा और महाशिवरात्रि पर शाही स्नान में आने वाले बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं सुरक्षित और आसान आवागमन के लिए बिंदुवार चर्चा की गई। प्रयागराज क्षेत्र के इन सभी रेलवे स्टेशनों से संगम क्षेत्र में आने जाने वाले सभी मार्गों का ब्योरा रखा गया। स्टेशनों से यात्रियों के प्रवेश और निकास की व्यवस्थाएं किस तरह से की जाएंगी और श्रद्धालु किन मार्गों से मेला के लिए जाएंगे और किस रास्ते पर कितनी भीड़ संभावित है। वैकल्पिक मार्ग कौन से होंगे इसे स्क्रीन पर प्रस्तुत कर इस पर गहन चर्चा हुई। बैठक में माघ मेला 2025 आने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ का प्रबंधन करने के लिए योजनाओं और वैकल्पिक योजनाओं पर भी चर्चा की गयी। आकड़ों और अनुमान के अनुसार कुंभ मेला के दौरान करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु भागीदारी करते हैं। यहाँ देश के हर राज्य और हर कोने से लोग आते हैं और पूरी दुनिया के सैकड़ों देशों से भी लोग यहां इस भव्य आयोजन के दर्शन के लिए पहुँचते हैं। इन सभी संभावनाओं के बीच इस बैठक में योजनाएँ रखी गयी और चर्चा की गयी। इस अवसर पर पुलिस उपायुक्त यातायात आशुतोष द्विवेदी वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजकीय रेलवे पुलिस ए पी सिंह वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक फ्रेट शशिकांत त्रिपाठी वरिष्ठ मण्डल संरक्षा आयुक्त रेलवे सुरक्षा बल प्रयागराज विजय प्रकाश पंडित वरिष्ठ मण्डल संरक्षा आयुक्त रेलवे सुरक्षा बल वाराणसी एस रामकृष्णन स्टेशन निदेशक प्रयागराज जंक्शन वी के द्विवेदी एडीएम मेला दयानन्द प्रसाद एडीएम मेला विवेक चतुर्वेदी उपस्थित रहे। यह जानकारी अमित कुमार सिंह जनसंपर्क अधिकारी प्रयागराज मंडल उत्तर मध्य रेलवे ने दी।

बैंकों में कर्मचारियों की नियुक्ति की यूनियन ने उठाई मांग

प्रयागराज। प्रयागराज में उत्तर प्रदेश बैंक ऑफ बड़ौदा इम्प्लाइज यूनियन के पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण बैठक सोमवार को आयोजित हुई। जिसकी अध्यक्षता राजेश कुमार श्रीवास्तव ने की। इस अवसर पर प्रदेश महामंत्री करुणेश शुक्ला ने कहा कि बैंकों में घटती हुई कर्मचारियों की संख्या की वजह से ग्राहक सेवा की गुणवत्ता पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने बैंक मैनेजमेंट से मांग की है कि अविलंब क्लर्क एवं अधीनस्थ कर्मचारियों की नियुक्ति की जाए। उन्होंने कहा कि शाखाओं में पेयजल की व्यवस्था साफ़सुथरा बाथरूम ग्राहकों का अधिकार है। उच्च कोटि का बैंक होने के नाते बैंक परिसर में समुचित सुविधाएं ग्राहकों को उपलब्ध होनी चाहिए। संघ के उप महामंत्री सुनील कुमार सिंह ने बताया कि आज प्रयागराज एक के मैनेजमेंट के साथ स्ट्रकचर मीटिंग आयोजित हुई। जिसमें ग्राहकों कर्मचारियों के हितों के मुद्दों को यूनियन उठाएगी। धन्यवाद ज्ञापन प्रयागराज के क्षेत्रीय सचिव मनीष त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर नरेन्द्र कुमार सहायक महामंत्री के के पांडेय क्षेत्रीय सचिव लखनऊ प्रभंजन प्रसाद क्षेत्रीय सचिव एनसीबीई विक्रम सिंह क्षेत्रीय सचिव अमित उपाध्यक्ष संजय संगठन मंत्री प्रफुल्ल गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

रोजगार मेले का आयोजन 10 को

सोनभद्र। जिला सेवायोजन अधिकारी ने बताया कि जिला सेवायोजन कार्यालय, द्वारा जनपद के बेरोजगार अभ्यर्थियों को रोजगार देने के लिए 10 जुलाई को प्रात: 10 बजे से जिला सेवायोजन कार्यालय परिसर में रोजगार मेला का आयोजन किया गया है, जिसमें निजी क्षेत्र की लगभग 09 कम्पनियां प्रतिभाग करेंगी जिसमें एल0आई0सी0 रावर्ट्सगंज वज्र इण्डस्ट्रीज रावर्ट्सगंज सोलेरा इण्डट्रीज सुकृत अग्रवाल आटोसेल्स रावर्ट्सगंज जी0 एस0 इण्टर प्राईजेज वाराणसी पुखराज हेल्थ वाराणसी लैट्री कस्टापींग नोएडा इफेसइन नोएडा, एस0 के0 ऑटोसेल्स रावर्ट्सगंज इत्यादि कम्पनियों द्वारा विभिन्न पदों पर भर्तियां की जाएगी। समस्त इच्छुक एवं योग्य बेरोजगार अभ्यर्थियों का साक्षात्कार नियोजकों द्वारा जिला सेवायोजन कार्यालय परिसर खूशबू बाग नर्सरी रोड लोढ़ी रावर्ट्सगंज में लिया जायेगा। यह रोजगार मेला पूर्णत: नि:शुल्क है। कोई यात्रा व्यय देय नहीं होगा।

पीएमजी कृष्ण कुमार यादव को दी गई विदाई

विभागीय कार्यों में तत्परता और सामाजिकए साहित्यिक सरोकारों से के के यादव का रहा अटूट लगाव, पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने डाक सेवाओं के बारे में जन जागरूकता और भागीदारी को दिया बढ़ाया

प्रयागराज। प्रशासन के साथ साथ सामाजिक और साहित्यिक सरोकारों से जुड़े अधिकारी विरले ही मिलते हैं। ऐसे अधिकारी न सिर्फ विभाग को नई पहचान देते हैं बल्कि अपनी सक्रियता से समाज में भी विशिष्ट मुकाम हासिल करते हैं। यह बातें वाराणसी और प्रयागराज परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव के स्थानांतरण के बाद अहमदाबाद के लिए भारमुक्त होने के बाद विदाई समारोह में वक्ताओं ने कहीं।डाक विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने कृष्ण कुमार यादव को विदाई दी। इस अवसर पर ऑल इण्डिया पोस्टल ऑफिसर्स एसोसिएशन के महासचिव एवं वाराणसी पूर्वी मंडल के प्रवर डाक अधीक्षक राजीव कुमार ने कहा कि तीन वर्ष नौ माह के कार्यकाल में पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने डाक सेवाओं को न सिर्फ लोगों से जोड़ा बल्कि उसे व्यापक आयाम भी प्रदान किए। विभागीय कार्यों में तत्परता के साथ साथ सामाजिक और साहित्यिक सरोकारों से अटूट लगाव उन्हें एक संवेदनशील और लोकप्रिय अधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित करता है। सहायक निदेशक आर के चौहान और बृजेश शर्मा ने कहा कि इस दौरान न सिर्फ विभागीय लक्ष्यों की प्राप्ति के मामले में वाराणसी परिक्षेत्र ने नए आयाम स्थापित किए बल्कि डाक सेवाओं के बारे में जन जागरूकता और भागीदारी भी बढ़ी। डाक अधीक्षक विनय कुमार और परमानन्द कुमार ने उनके बहुमुखी व्यक्तित्व और कृतित्व से सीखने की बात कही। डाक अधीक्षक हेमंत कुमार और पी के पाठक ने कहा कि पोस्टमास्टर जनरल के रूप में कृष्ण कुमार यादव ने सभी को सकारात्मक रूप में कार्य करने को प्रोत्साहित किया। लेखाधिकारी प्लाबन नस्कर ने कहा कि आप स्टाफ और आमजन दोनों के प्रति संवदेनशील हैं। इस अवसर पर पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने वाराणसी में अपने तीन वर्ष नौ माह के कार्यकाल के अनुभवों को शेयर करते हुए कहा कि वाराणसी परिक्षेत्र में डाक सेवाओं का व्यापक विस्तार करते हुए सभी विभागीय योजनाओं को तत्परता के साथ लागू किया गया। इसमें सभी कर्मियों ने भरपूर सहयोग दिया। इस अवसर पर प्रवर डाक अधीक्षक वाराणसी पूर्वी राजीव कुमार डाक अधीक्षक वाराणसी पश्चिमी विनय कुमार डाक अधीक्षक बलिया हेमंत कुमार डाक अधीक्षक जौनपुर परमानन्द कुमार डाक अधीक्षक गाजीपुर पी के पाठक सहायक निदेशक बृजेश शर्मा आरके चौहान लेखाधिकारी प्लाबन नस्कर सहायक अधीक्षक पल्लवी मिश्रा डाक निरीक्षक अनिकेत रंजन दिलीप पांडेय राकेश कुमार राहुल कुमार श्रीप्रकाश गुप्ता मनीष कुमार अजिता कुमारी अभिलाषा गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

उद्यमिता विकास केन्द्र पर साक्षात्कार 15 जुलाई सें

सोनभद्र। जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र के प्र0 उपायुक्त आर0पी0 गौतम ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजनान्तर्गत प्रशिक्षण एवं टूलकिट प्रदान करने हेतु कार्यालय में 01 अप्रैल 2024 के बाद से प्राप्त पोर्टल पर आन लाइन आवेदनों के सापेक्ष चयन हेतु ट्रेड हलवाई में 15 जुलाई, 2024 को तथा ट्रे दर्जी में, 16 जुलाई 2024 को प्रात: 11 बजे से कार्यालय जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र में साक्षात्कार का आयोजन किया जाना सुनिश्चित है। उन्होंने समस्त आवेदकों से अनुरोध है कि उक्त निर्धारित समय व स्थान पर अपने आधार कार्ड शैक्षिक योग्यता जाति आय प्रमाण पत्र व अनुभव प्रमाण पत्र आदि से सम्बन्धित समस्त दस्तावेज दो प्रति एक मूल व दूसरा छाया प्रति में लेकर साक्षात्कार में उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

डीएम ने किया राजस्व ग्राम का निरीक्षण

अंबेडकर नगर। जिलाधिकारी अविनाश सिंह द्वारा उप जिलाधिकारी जलालपुर के साथ विकास खण्ड भियांव के राजस्व ग्राम करमुल्हा का निरीक्षण किया गया।तमसा नदी में पानी का स्तर बढ़ जाने के कारण गांव चारों तरफ से घिर जाता हैए तमसा नदी पर बना लकड़ी का पुल टूट कर गिर जाने से बह गया। सूचना मिलने पर जिलाधिकारी अविनाश सिंह द्वारा नाव से करमुल्हा गांव पहुंचकर भ्रमण कर स्थलीय निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी द्वारा स्थलीय निरीक्षण कर मौके की स्थिति की जानकारी ली गई। लकड़ी का पुल गिर जाने के कारण ग्रामीणों को लंबे रास्ते से होकर गुजरना पड़ रहा है जिससे उन्हें अधिक कठिनाई हो रही है। ग्रामीणों को आने.जाने के लिए नाव का सहारा लेना अति आवश्यक हैए जिस पर जिलाधिकारी ने तत्काल दो नाव उपलब्ध कराने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। साथ ही साथ जिलाधिकारी ने खंड विकास अधिकारी भियांव को निर्देशित किया कि बंधा की ऊंचाई कम है टीम लगाकर उसे तत्काल ऊंचा कराया जाएए जिससे ग्रामीणों को किसी प्रकार की असुविधा ना हो। इस दौरान जिलाधिकारी ने उपस्थित ग्रामीणों से वार्ता किया ग्रामीणों द्वारा अवगत कराया गया कि तमसा नदी पर लकड़ी के पुल के स्थान पर स्थाई पुल बनवाया जाएए जिस पर जिलाधिकारी ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी तथा सहायक अभियंता पीडब्ल्यूडी से इसका एस्टीमेट तैयार कर जल्द से जल्द शासन को प्रेषित किया जाएगा जिलाधिकारी द्वारा वहां पर उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि इसकी लगातार मॉनिटरिंग करते रहें। आम जन को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए तथा मौके की स्थिति से लगातार अवगत कराते रहे।निरीक्षण के दौरान उप जिलाधिकारी जलालपुर सुभाष सिंहए क्षेत्राधिकारी जलालपुरए तहसीलदारए खंड विकास अधिकारी भियांव तथा ग्रामीण मौक पर उपस्थित रहे।

गुरुकुलम के छात्रों ने बुजुर्गों के चेहरों पर खुशियां बिखेरीं

मुग़लसरायध्चन्दौली। गुरुकुलम स्कूल फिजिक्स वाला द्वारा संचालित के छात्रों ने वाराणसी में अपना घर आश्रम में खुशियाँ बिखेरीं।

एक दिल को छू लेने वाली पहल में गुरुकुलम स्कूल के छात्रों ने अपना घर आश्रम का दौरा किया जहाँ उन्होंने बुजुर्ग निवासियों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताया। यह दौरा प्यार और देखभाल से भरा हुआ थाए जिसने छात्रों और बुजुर्गों दोनों के लिए अनमोल यादें बनी। दिन भर की गतिविधियाँ में विभिन्न इनडोर और आउटडोर खेल भी खेला । छात्रों ने बुजुर्गों के साथ जीवंत बातचीत कीए कहानियाँ और अनुभव साझा किए। साथ मिलकरए उन्होंने खेल खेलेए गाने गाएए और यहां तक कि कैरम और शतरंज के दोस्ताना मुकाबलों में भी भाग लिया। बाहरी गतिविधियों में बगीचे मे बुजुर्गों ने ताज़ी हवा और सुंदर वातावरण का आनंद लिया। छोटे आगंतुकों ने कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किएए जिनमें नृत्य और संगीत शामिल थेए जिसने बुजुर्गों के चेहरे पर मुस्कान और यहां तक कि कुछ खुशी के आँसू भी ला दिए। छात्रों की इस यात्रा ने गहरा प्रभाव डालाए जिसने सभी को करुणा और जुड़ाव के महत्व की याद दिलाई। अक्सर अकेले रहने वाले बुजुर्गों को बच्चों की उपस्थिति में खुशी और साथ मिला।

असाध्य रोगों का इलाज होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में

प्रयागराज के होम्योपैथिक डॉक्टरों को किया गया सम्मानित

प्रयागराज। आइडियल होम्योपैथिक वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन के तत्वावधान में रविवार को प्रादेशिक होम्योपैथिक वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन रॉबर्ट्सगंज सोनभद्र में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री संजीव सिंह गौड़ ने कहा कि असाध्य रोगों का इलाज होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में है। इस पद्धति से इलाज करने से जटिल से जटिल रोगों का स्थाई समाधान संभव है और यह पद्धति सस्ती और लाभकारी है। स्वस्थ्य जीवन शैली के लिए होम्योपैथिक विधा एक विश्वसनीय चिकित्सा पद्धति है। विशिष्ट अतिथि सदर विधायक भूपेश चौबे ने होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर प्रकाश डालते हुए कहा की होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के जनक महात्मा हैनीमैन ने संपूर्ण विश्व को एक ऐसी चिकित्सा पद्धति प्रदान की है। जिसके प्रयोग से शरीर पर कोई भी कुप्रभाव नहीं पड़ता। आइडियल होम्योपैथिक वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे एन सिंह रघुवंशी ने उत्तर प्रदेश सरकार से यह मांग किया है कि उत्तर प्रदेश के अंतिम छोर पर चार राज्यों बिहार झारखंड उत्तर प्रदेश छत्तीसगढ़ के सीमाओं से घिरे सोनभद्र में गरीबी से जीवन जीने वाले हमारे आदिवासी लोगों के लिए होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति कारगर है। इस पद्धति के प्रचार प्रसार इलाज के लिए जनपद में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज की स्थापना की जानी चाहिए ताकि उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों के नागरिकों को सस्ता इलाज सुलभ हो सके। द्वितीय सत्र के मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद राम सकल ने कहा कि देश में अनेक चिकित्सा पद्धति विद्यमान है। उसमें सबसे अच्छी और कारगर चिकित्सा होम्योपैथी की मीठी गोलियां हैं। जिनका शरीर पर कोई भी कुप्रभाव नहीं पड़ता और यह चिकित्सा पद्धति स्थाई उपचार देती हैं और शरीर को पूर्ण रूप से स्वस्थ करती हैं। साइंटिफिक सेमिनार के मुख्य वक्ता प्रोफेसर डॉ एस एस पाल डॉ अर्पिता चटर्जी डॉ मनोरंजन पाल ने अनुभवों को विभिन्न प्रांत से आए हुए सभी चिकित्सकों के साथ साझा किया। अध्यक्षता डा आर सी श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथियों के द्वारा होम्योपैथिक विधा के जनक महात्मा हैनीमैन के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया।संगोष्ठी में प्रांतीय स्तर का चुनाव भी संपन्न हुआ। जिसमें प्रयागराज के डॉ सागर को उपाध्यक्ष पद का दायित्व प्रदान किया गया। वैज्ञानिक संगोष्ठी में प्रयागराज से मुख्य रूप से राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ भंवर सिंह डॉ आनंद प्रकाश सिंह डॉ संतोष यादव डॉ सागर डॉ अखिल निगम डॉ अंकित जायसवाल डॉ एस एन मिश्रा डॉ पंकज विश्वकर्मा डॉ सुनील पटेल डॉ जफर डॉ देवेश विनोद कुमार यादव अविनाश कुमार आदि शामिल हुए। यह जानकारी डॉ अखिल निगम की ओर से दी गई।

ब्रिटेन में चुनाव
लेबर पार्टी की विजय

ब्रिटेन में हुए संसदीय चुनाव में लेबर पार्टी की विजय हुई है। इससे भारत अपने प्रति ज्यादा सकारात्मक दृष्टिकोण तथा भारत-समर्थक नीतियों की उम्मीद कर सकता है। एक दशक से अधिक समय तक सत्ता से बाहर रहने के बाद कीर स्टार्मर के नेतृत्व में लेबर पार्टी ने ब्रिटेन के हालिया चुनाव में शानदार विजय प्राप्त की है। प्रधानमंत्री कीर को सबसे पहले मुबारकवाद देने वालों में प्रधानमंत्री मोदी शामिल हैं। दोनों नेताओं ने 'एफटीए' पर ज्यादा जोश से काम करने और संबंध मजबूत करने पर सहमति प्रकट की। वास्तव में यह ब्रिटिश राजनीति में बड़ा परिवर्तन है और वर्तमान नीतियां तथा पहलें पूर्व की अवस्थापना की तुलना में एकदम अलग होंगी। हालिया चुनाव में कंजरवेटिव पार्टी पर लेबर पार्टी की निर्णायक विजय के कारण यह परिवर्तन बहुत महत्वपूर्ण है। प्रशासन में यह परिवर्तन ब्रिटेन की घरेलू और अंतरराष्ट्रीय नीतियों में नया अध्याय है। ब्रिटेन के साथ गहरे ऐतिहासिक, आर्थिक व राजनयिक संबंधों वाले भारत जैसे देशों के लिए यह परिवर्तन उल्लेखनीय बदलावों का कारण बन सकता है। नई उदारवादी सरकार के अंतर्गत ब्रिटिश-भारत संबंधों का विकास विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव डाल सकता है जिनमें व्यापार, शिक्षा, तकनीक और आप्रवास शामिल हैं। लेबर पार्टी की विजय ब्रिटिश राजनीति में व्यापक परिवर्तन का संकेत है। लेबर पार्टी ज्यादा उदारवादी, परंपरागत रूप से ज्यादा प्रगतिशील, समावेशी तथा टिकाऊपन व अंतरराष्ट्रीय सहयोग में विश्वास करने वाली है। इन नीतियों के खासकर जलवायु परिवर्तन, सामाजिक न्याय व आर्थिक सुधारों में कंजरवेटिव दृष्टिकोण से अलग होने की उम्मीद है।

हालांकि, कंजरवेटिवों ने ब्रिटेन के भारत के साथ संबंधों में छेड़छाड़ नहीं की थी, पर आने वाले महीनों में ब्रिटिश नीतियों में व्यापक परिवर्तन की संभावना है। सबसे बड़ा परिवर्तन आप्रवास कानूनों में देखने को मिल सकता है। ब्रिटेन में भारतीयों की काफी संख्या है और ऐसे में वीसा तथा आवासीय स्तर प्राप्त करना हमेशा से ब्रिटेन में रहने वाले भारतवासियों तथा भारत के लोगों का सर्वोच्च एजेंडा रहा है। काफी परिवर्तन वाला अगला क्षेत्र दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों का हो सकता है। उदारवादी पार्टी की प्रतिबद्धता मुक्त व्यापार तथा आर्थिक साझेदारी के प्रति है जिसके परिणामस्वरूप समग्र ब्रिटिश-भारत मुक्त व्यापार समझौता-'एफटीए' हो सकता है। ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर को मुबारकवाद देते समय यह मुद्दा प्रधानमंत्री मोदी ने सबसे पहले उठाया। वास्तव में बहुत लंबे समय से ब्रिटेन भारत का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साझीदार रहा है। हालांकि, कंजरवेटिव सरकार के दौरान भी समग्र मुक्त व्यापार समझौते-'एफटीए' को अंतिम रूप देने के बारे में बातचीत चल रही थी, लेकिन विश्व व्यापार के प्रति लेबर सरकार के ज्यादा उत्साही दृष्टिकोण के कारण इस वार्ता में तेजी आ सकती है। ब्रिटेन में लेबर पार्टी की विजय के बाद विदेश नीति में ज्यादा सहयोगी और खुले दृष्टिकोण से खासकर रक्षा, साइबर सुरक्षा और आतंकवाद-विरोध में गहरे रणनीतिक संबंध स्थापित हो सकते हैं। कामनवेल्थ, संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा जलवायु मंचों पर ज्यादा सहभागिता से अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में परस्पर हित के मुद्दों पर संयुक्त प्रयासों को बढ़ावा मिल सकता है। इसके साथ ही भारत अंतरराष्ट्रीय सगंठनों में भारत की महत्वाकांक्षाओं के प्रति ब्रिटेन के समर्थन की उम्मीद कर सकता है जिसमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की संभावित स्थाई सदस्यता भी शामिल है।

हिंदूवाद और हिंसा की अवधारणा

प्रत्येक धर्म के सांस्कृतिक व नैतिक ढांचे विशिष्ट होते हैं। विभिन्न धर्मों में भोजन की आदतों तथा ऐतिहासिक संदर्भों ने हिंसा की अवधारणाओं ने दृष्टिकोण को प्रभावित किया है।

प्रफुल्ल गोराडिया
(लेखक, पूर्व राज्यसभा सदस्य हैं)

प्रत्येक धर्म के सांस्कृतिक व नैतिक ढांचे अपने आम में विशिष्ट तथा अलग-अलग होते हैं। दुनिया के विभिन्न धर्मों में भोजन की आदतों तथा ऐतिहासिक संदर्भों में हिंसा की अवधारणाओं ने लोगों के दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। यह बात हिंदू धर्म या व्यापक अर्थों में 'हिंदूवाद' पर भी लागू होती है। इसलिए हिंदूवाद को हिंसा से जोड़ना पूरी तरह गलत है। 'हिंदूवाद' को खासकर हिंसा से जोड़ने का अर्थ है कि हमारे सभी नेताओं को व्यापक रूप से भारतीय सोच के बारे में अध्ययन करने और उसे समझने की आवश्यकता है। लोकसभा में 1 जुलाई, 2024 को हिंदुओं को हिंसा से जोड़ने के प्रयासों को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। भारत के संबंध में कोई अवधारणा बनाने से पहले यह समझना भी जरूरी है कि भारतीय हिंदू, मुस्लिम, औपचारिक रूप से बपतिस्मा प्राप्त ईसाई व अन्य धर्मानुयाई भी हो सकते हैं। लोकसभा में जब नेता विपक्ष ने हिंदूवाद को हिंसा से जोड़ा तब उनके तथा लोकसभा अध्यक्ष के बीच हुई बहस इन दृष्टिकोणों में अंतर को स्पष्ट करती है। हालांकि, यह बहस तथा दृष्टिकोणों में अंतर काफी तीखे तरीके से सामने आया। नेता विपक्ष राहुल गांधी ने सभी हिंदुओं को हिंसा से जोड़ते हुए आरोप लगाया था कि वे हिंसक होते हैं, झूठ बोलते हैं तथा घृणा फैलाते हैं। इस पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने विस्तार से बताया कि हिंदू बहुत नरम स्वभाव के होते हैं, वे न केवल अपने से बड़े लोगों के सामने झुकते हैं, बल्कि उनके पैर भी छूते हैं। इसके उलट इस्लाम धर्म अपने अनुयाइयों को दयालु अल्लाह के सिवा किसी अन्य के समक्ष झुकने की अनुमति नहीं देता है।

ईसाइयों की परंपरा और व्यवहार इससे बिल्कुल अलग है। वे अपनी भावनाओं और प्रेम को प्रकट करने के लिए हर व्यक्ति से हाथ मिलाते हैं। इसी प्रकार हिंसा की सीमा भी विभिन्न धर्मानुयाइयों के बीच अलग-अलग होती है। आमतौर से ईसाइयों को मांस खाने की आदत होती है, बस केवल वे शुक्रवार को मांस नहीं खाते हैं और मछली के एक टुकड़े से काम चला लेते हैं। मुसलमान आमतौर से बिना किसी नियंत्रण के मांस खाते हैं और वे शुक्रवार को भी कोई बंधन नहीं मानते हैं। भोजन की आदतों का संबंध किसी खास क्षेत्र में रहने और वहां उपलब्ध सामग्री के उपभोग से हो सकता है। संभवत: ईसाई और मुसलमान समुदायों की भोजन आदतें पश्चिम एशिया के रेगिस्तानों में जन्म लेने के कारण विकसित हुई हैं। इस क्षेत्र में शाकाहारी विरले ही पाए जाते थे और यही स्थिति कमोबेश आज भी बनी हुई है। भोजन की आदतों का संबंध उस क्षेत्र में उगने वाली फसलों से भी है। ईसाइयत यूरोप में फली-फूली जहां जाड़े में फसलें उगाना आसान नहीं है। ऐसे में उनके भोजन की आदतें भी इस परिवेश से प्रभावित हुई हैं। इन परिस्थितियों के कारण दुनिया भर में मांसाहार का प्रचलन बना रहा और काफी तेजी से बढ़ा। दुनिया में मांसाहार की इस प्रवृत्ति के चलते ही लगभग 100 मिलियन जानवर हर साल मारे जाते हैं। यह अनुमान 'पुअर एंड नेमैक' द्वारा 2018 में जारी डेटाबेस के आधार पर लगाया गया है।

हमारे नेताओं को समझना चाहिए कि हिंदूओं का विकास उन क्षेत्रों में हुआ जहां वनस्पतियां पर्याप्त मात्रा में थीं और दुनिया के अनेक अन्य क्षेत्रों की तुलना में वहां खाद्यान्न फसलें उगाना ज्यादा आसान था। इन परिस्थितियों को देखते हुए वहां रहने वाले हिंदू 'सर्वाहारी', यानी मांसाहार व शाकाहार मिश्रित रूप से अपनाने के बजाय कठोर रूप से शाकाहारी बने रह सकते थे। लेकिन हिंदुओं में शाकाहार का संबंध उनके धार्मिक व आध्यात्मिक विश्वास से भी है। हिंदू पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं और उनका विश्वास है कि आत्मा बार-बार अनेक रूप में जन्म लेती है। इसके उलट ईसाइयों का मानना है कि आत्मा का केवल एक बार जन्म होता है और मनुष्य की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा को 'अंतिम निर्णय' के क्षण तक प्रतीक्षा करनी होती है, जब ईश्वर उसे इस धरती पर अपने कामों के देखते हुए स्वर्ग या नर्क में भेजने का निर्णय लेता है। यही अवधारणा इस्लाम धर्म की भी है। दूसरी ओर हिंदुओं का मानना है कि जब उसके पिता, माता, रिश्तेदार या प्रियजन इस दुनिया से प्रस्थान करते हैं तो केवल उनका शरीर नष्ट होता है। उनके विश्वास के अनुसार आत्मा अजर-अमर होती है और वह एक शरीर के नष्ट होने पर दूसरे शरीर में प्रवेश कर पुनर्जन्म के पश्चात नया जीवन धारण कर लेती है। इसलिए हिंदुओं को आमतौर से भय होता है कि यदि वे मांस खाएंगे तो इसमें उनके किसी मृतक संबंधी का अवशेष हो सकता है जिसने अपनी मृत्यु के बाद उस जानवर के रूप में पुनर्जन्म लिया हो। इसी कारण अधिकांश हिंदू केवल अपने स्वाद या भोजन आनन्द के लिए जानवरों या चिड़ियों का वध करना उचित नहीं मानते हैं। यदि कोई व्यक्ति यह सोच ले कि उसके वंशजों का वध किसी अन्य के भोजन आनन्द के लिए किया जाएगा तो वह भी मांसाहार करना पसंद नहीं करेगा। ऐसे में यह सवाल भी स्वाभाविक रूप से उठता है कि शाकाहारियों और मांसाहारियों में से कौन अधिक हिंसा फैलाता है। आजकल दुनिया का एक बड़ा हिस्सा पर्यावरण संरक्षण के कारण भी शाकाहार पर जोर देता है क्योंकि उसका मानना है कि मांसाहारी पर्यावरण को ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं। हिंदुओं का भी यही विश्वास है और संयोग से मैं भी हिंदू हूं। यदि मांस का उपभोग छोड़ दिया जाए तो किसी व्यक्ति का भोजन या उसकी भोजन की आदतें उसके सामाजिक तथा पेशेवर व्यवहार व आम व्यवहार में परिवर्तन कर सकती हैं। इस सवाल का जवाब यूरोप के इतिहास से अच्छी तरह मिलता है। अपने पूरे इतिहास में यूरोपीय महाद्वीप में 896 युद्धों का रिकार्ड दर्ज है। यूनानी और रोमन साम्राज्यों के अस्तित्व में आने से बहुत पहले से यूरोपीय कबीलाइयों की तरह एक दूसरे से लड़ते थे और उनकी हत्या करते थे। एथेंस-स्पार्टा युद्ध, पेलोपोनेसियन युद्ध, रोमन साम्राज्य के विस्तारवादी युद्ध, आदि यूरोप के इतिहास का अंग हैं और उनको पुन: याद दिलाने की जरूरत नहीं है। लेकिन युद्ध और हत्याओं के प्रति यूरोप का लगाव या उसकी आदत की व्याख्या करने की जरूरत है जो एचिलीस से लेकर पुतिन या जेलेन्स्की तक जारी है। अपनी इसी युद्धपिपासु व हिंसक प्रवृत्ति के कारण यूरोप लगातार हत्या के औजारों का निर्माण और उनमें विकास करता रहा। इनमें डंडों से लेकर पत्थर के हथौड़े तथा कांसे और बाद में लोहे और स्टील के हथियार शामिल हैं। इसके बाद धारदार तलवारों और भालों का विकास भी यूरोप में हुआ। 19वीं और 20वीं शताब्दियों में तकनीकी विकास और खोज का विस्तार हुआ। इसके बाद दुनिया में लोहे, स्टील, कोयले और भाप का युग आया। बाद में रेलवे, भाप से चलने वाले जहाजों, टेलीग्राफ तथा रेडियो, आटोमोबाइल, मशीन गनों, टैंकों, विमानो और पनडुब्बियों का विकास हुआ। इन सबने यूरोपीय राष्ट्र-राज्यों को इतिहास में पहले के किसी अन्य समय की तुलना में शक्ति जुटाने, स्वयं को हथियारों और परिवहन से लैस करने का अवसर मिला। इससे उनकी युद्धक क्षमता तथा हिंसा करने की क्षमता में असाधारण बढ़ोत्तरी हुई। पिछले 75 साल में अणु बम और गाइडेड मिसाइलों की खोज के साथ ही इंटरनेट और साइबर युद्ध ने युद्ध का परिदृश्य और उसके आयामों में इतने व्यापक परिवर्तन किए हैं जितने पहले कभी नहीं थे।

हमारे कहने का अर्थ है कि यूरोप युद्धों तथा और ज्यादा युद्धों की भूमि है। यूरोपीय युद्धों के कारण बड़ी संख्या में मनुष्यों का विनाश हुआ है। यदि हम सभी प्राचीन और मध्यकालीन युद्धों को छोड़ दें तो भी दो विश्वयुद्धों में 130 मिलियन लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। तानाशाह बेनिटो मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली जैसी छोटी सी शक्ति ने भी सशस्त्र संघर्ष के बारे में अपनी शक्ति का भ्रम पाला था। इन भ्रमों के परिणामस्वरूप इटली में काफी समय तक 'आर्मर्ड सुआसियान' की अवधारणा चली जिससे वह स्वयं को यूरोप की सर्वाधिक शक्तिशाली हवाई शक्ति समझता रहा। इस प्रकार इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि 'मांस भक्षी' यूरोपीय महाद्वीप युद्ध की भूमि है। ऐसे में हिंदुओं पर हिंसा का आरोप लगाना नैतिक पतन के सिवा और कुछ नहीं है।

जुनून एक पूर्ण जीवन के लिए उत्प्रेरक है

> जुनून खुशी, प्रसन्नता और गहरी संतुष्टि की भावना पैदा करता है जो भीतर से निकलती है।

रचना लखपति
(लेखिका एक प्रेरक हैं)

जुनून एक शक्तिशाली शक्ति है जो व्यक्तियों को उनके इच्छित उद्देश्यों की ओर प्रेरित करती है, महत्वाकांक्षा को प्रज्वलित करती है और जीवन की चुनौतियों और अनिश्चितताओं का सामना करने में दृढ़ संकल्प प्रदान करती है। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे लक्ष्य को खोजता है जिसके लिए वह वास्तव में जुनूनी है, तो उसे एक अलग और अजेय ऊर्जा का अनुभव होता है जो उसे उस ओर ले जाती है और उसे सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। कई व्यक्ति खुद को नीरस दिनचर्या में फंसा हुआ पाते हैं जो उन्हें बोझिल बनाती है।

उठो और चमको, कार्यालय जाओ, अपने कार्यों को पूरा करो, और अपने घर के आराम में वापस आओ, केवल अगले दिन दिनचर्या को दोहराने के लिए। दिन-ब-दिन एक ही दिनचर्या में लगे रहने से उदासी और असंतोष की भावनाएँ पैदा हो सकती हैं जब किसी की दैनिक गतिविधियों के लिए उत्साह की कमी होती है। अगर यह आपके जुनून को प्रज्वलित नहीं करता है तो कुछ करने की क्या ज़रूरत है? मैं समझता हूँ कि हर किसी को अपने सपनों का करियर बनाने का अवसर नहीं मिलता है।

कई व्यक्ति अपने जीवन में स्थिरता स्थापित करने के लिए अथक परिश्रम करते हैं, जबकि कुछ लोग केवल अपनी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ऐसे मामलों में भी, उन गतिविधियों को प्राथमिकता देना और उनके लिए समय निकालना महत्वपूर्ण है जो खुशी और संतुष्टि लाती हैं। जुनून खुशी, प्रसन्नता और गहरी संतुष्टि की भावना पैदा करता है जो भीतर से निकलती है। उदाहरण के लिए, मेरी एक परिचित महिला पर विचार करें। वह कॉर्पोरेट जगत में डूबी हुई है, उन

चुनौतीपूर्ण नौकरियों में से एक को संभाल रही है जो वित्तीय स्थिरता प्रदान करेगी लेकिन उसके जुनून को प्रज्वलित नहीं करेगी। काम के लंबे दिन और सप्ताहांत के बाद, वह अपना समय उस चीज़ को समर्पित करती है जो वास्तव में उसे खुशी देती है- बेकिंग।

जब वह नई रेसिपी के बारे में बताती है जिसे वह आजमा रही होती है या जब वह किसी को अपनी कड़ी मेहनत के परिणामों का आनंद लेते हुए देखती है तो उसे जो खुशी महसूस होती है, वह उत्साह से भर जाती है। यह उसे रोमांच और व्यक्तिगत संतुष्टि की एक अनूठी भावना देता है जो उसकी कॉर्पोरेट नौकरी देने में विफल रहती है। उसका अटूट जुनून उसे उत्साहित रखता है और काम के सबसे चुनौतीपूर्ण क्षणों के दौरान भी उसे दैनिक प्रेरणा का स्रोत प्रदान करता है।

अपनी नौकरी छोड़ने और अचानक अज्ञात क्षेत्र में जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह इतनी छोटी सी बात है कि यह आपकी वर्तमान दिनचर्या में फिट हो सकती है। शायद हर हफ़्ते कुछ घंटे अपने शौक के लिए समर्पित करना, सीखने की कक्षाएँ लेना या कोई दूसरा काम करना फ़ायदेमंद हो सकता है। भले ही ये प्रयास मामूली लगें, लेकिन ये आपके समग्र स्वास्थ्य और खुशी पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं।

सिर्फ़ कुछ लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि हर किसी के लिए एक संपूर्ण जीवन जीने के लिए जुनून ज़रूरी है। उद्देश्य की भावना और इससे मिलने वाला उत्साह हमारे दिमाग और दिल को युवा और जीवंत बनाए रखने के लिए ज़रूरी है। इसलिए, अगर आपको किसी चीज़ के लिए गहरा जुनून है, तो उसे प्राथमिकता दें और उसके लिए समय दें। आप पूरे दिल से अपने लक्ष्य को हासिल करके सफलता प्राप्त करेंगे। वास्तव में, लंबी यात्रा काफी थका देने वाली हो सकती है। हालाँकि, जुनून से भरी ज़िंदगी जीने के पुरस्कार अथाह हैं। आखिरकार, यह सब जुनून पर निर्भर करता है। इसे विकसित करें, इसका पोषण करें और विश्वास करें कि यह आपको एक खुशहाल और समृद्ध जीवन की ओर ले जाएगा।

आप की बात

भारत-चीन संबंध

चीन और भारत के विदेश मंत्रियों की शंघाई सहयोग संगठन-एससीओ की अस्ताना बैठक में सीमा पर गतिरोध खत्म करने पर चर्चा हुई। दोनों देशों ने सीमा पर शांति बनाने पर सहमति जताई है। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में गतिरोध खत्म करने का प्रयास सराहनीय है। मगर इतने वर्षों से चीन के साथ जितनी भी द्विपक्षीय बैठकें हुई उनमें चीन की कथनी और करनी में जमीन आसमान का फर्क दिखता है। विश्व जनमत के सामने एक अच्छा राष्ट्र बनने और जमीनी स्तर पर अपनी कुटिल चालें चालू रखने की उसकी आदत में फिलहाल कोई सुधार नहीं दिखता है। लेकिन इसके बावजूद दोनों देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक का राजनयिक पहल के रूप में स्वागत होना चाहिए। वर्तमान समय में मौजूद अंतरराष्ट्रीय स्थितियों को देखते हुए चीन और भारत दोनों ही जानते हैं कि सभी समस्याओं का हल बातचीत के जरिए ही निकलना है। इससे दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे तनाव को घटाने में भी सहायता मिल सकती है। लेकिन राजनयिक प्रयासों के साथ ही सीमा पर भारतीय रक्षा ढांचागत संरचना लगातार मजबूत करने तथा रक्षा सेनाओं को आधुनिकतम साधनों से लैस करने की जरूरत है क्योंकि चीन के दोमुंहेपन का इतिहास कतई भुलाया नहीं जाना चाहिए।

-**सुभाष बुडावन वाला,** रतलाम

राहुल का अहंकार

राहुल गांधी ने कहा है कि इंडिया गठबंधन ने अयोध्या में भाजपा को हराकर राम मंदिर आंदोलन को पराजित कर दिया है, जिसे लालकृष्ण आडवाणी ने शुरू किया था। ऐसा कह कर वह आज राम मंदिर का भी अपमान कर रहे हैं। कांग्रेस ने तो भगवान राम के अस्तित्व को ही नकार दिया था। अब 500 साल के संघर्ष और सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद बने भव्य राम मंदिर का विरोध करते हुए राहुल गांधी की जुबान नहीं लड़खड़ा रही है। क्या कांग्रेस सत्ता में आने के बाद राम मंदिर का महत्व अनदेखा कर सकती है? कुछ सीट अधिक आ जाने पर आज राहुल गांधी बड़ी बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं। राम मंदिर आंदोलन को पराजित करने की बात संपूर्ण हिंदू समाज का अपमान है जिसे वह हिंसक, झूठा, आदि कह चुके हैं। वे मोदी, भाजपा और संघ को हिंदू मानते ही नहीं हैं। फिर क्या उनकी समझ में हिंदू का अर्थ लगातार अपमान सहना, गुलाम बने रहना, जजिया देना, अपने धर्मस्थलों का विध्वंस चुपचाप देखते रहना तथा अहिंसा के नाम पर अत्याचारियों को सहन करना है? मोदी, भाजपा और संघ को राहुल गांधी से न असली हिंदू होने का सार्टीफिकेट चाहिए और न हिंदू अब पहले की तरह बने रहने को तैयार हैं।

- **मनमोहन राजावत,** शाजापुर

बजट से उम्मीदें

राजनीतिक दल आजकल मुफ्त रेवड़ी बांटने की होड़ कर रहे हैं। ऐसे में बजट की दिशा और उससे उम्मीदें महत्वपूर्ण हो सकती हैं। बजट के लिए धन आम लोगों की कड़ी मेहनत से प्राप्त राशि पर चुकाए करों से इकट्ठा होता है। इसका उद्देश्य अंतिम आदमी तक रोटी, कपड़ा मकान व अन्य मूलभूत सुविधाएं पहुंचाने के साथ ही राष्ट्र का उत्थान व विकास भी होता है। इसका प्रयोग राजनीतिक वर्चस्व के लिए मुफ्त रेवड़ी बांटने में नहीं होना चाहिए। इसका अर्थ करोड़ों लोगों के परिश्रम से प्राप्त पारिश्रमिक को अनदेखा करना तथा दूसरी ओर करोड़ों लोगों को बिना काम मुफ्त रेवड़ी देकर गलत भावना पैदा करना होता है। इससे उनमें-ऊपर वाला दे तो कौन जाए कमाने वाली भावना तथा आलस्य पैदा होता है। आम आदमी को सुविधाएं, जरुरत की वस्तुओं पर करों में राहत तथा निशक्तों को पूरी सुविधाएं देना उचित है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी नेताओं को सलाह दी है कि वे मुफ्त की रेवड़ी बांटने से परहेज करें। उम्मीद है कि आम बजट आम लोगों के लिए राहत भरा व सुखदाई, महंगाई कम करने वाला तथा देश को विकसित देश बनाने की दिशा में आगे बढ़ाने वाला होगा। इससे हर नागरिक में परिश्रम व ईमानदारी की भावना पैदा होगी।

-**शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

पेरिस ओलंपिक

पेरिस ओलंपिक 26 जुलाई 2024 से आरंभ होकर 10 अगस्त 2024 तक पूरी दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहेगा। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पेरिस ओलंपिक के लिए तैयारी करने वाले खिलाड़ियों के साथ एक मुलाकात की है। मोदी की यह पहल सराहनीय है जिससे खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन हुआ है। निश्चित ही भारतीय खिलाड़ी ओलंपिक में देश का नाम रोशन करेंगे। उम्मीद है कि इस बार भारत टोकियो ओलम्पिक की तुलना में बेहतर उपलब्धियां प्रदर्शित करने में सफल होगा। इससे भारत द्वारा 2036 ओलंपिक की मेजबानी की दावेदारी भी मजबूत होगी। प्रधानमंत्री ने सभी खिलाड़ियों से ओलंपिक की तकनीकी खेल स्पर्धाओं, खेल प्रबंधन, मैनेजमेंट एवम आवासीय व्यवस्था को अच्छी तरह समझने की बात भी कही है। इन खिलाड़ियों के अनुभवों से सीख लेकर भारत 2036 की ओलंपिक की दावेदारी मजबूती से रख सकेगा। भारत ने एशियन गेम्स 1952 व 1982 के अलावा 2010 में राष्ट्रमंडल खेलों का सफ्ल आयोजन किया है। वह विश्व हॉकी कप का भी आयोजन दो बार कर चुका है।

- **वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

डीएम ने कार्यालय उपकृषि निदेशक एवं जनपदस्तरीय मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का किया आकस्मिक निरीक्षण

अमेठी। जिलाधिकारी निशा अनंत द्वारा आज ताला में स्थित कार्यालय उप कृषि निदेशक एवं जनपद स्तरीय मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी द्वारा पीएम किसान सम्मान निधि प्रकोष्ठ ध् कक्ष के निरीक्षण के दौरान उप कृषि निदेशक अमेठी द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद में 303923 कृषक पंजीकृत हैं जिसमें से 224154 किसानों का भूलेख अंकनए ईकेवाईसी एवं आधार सीडिंग का कार्य पूर्ण कराया गया है अवशेष किसानों के प्रकरण में लम्बित कार्यों ;भूलेख अंकनए ईकेवाईसी एवं आधार सीडिंगद्ध को पूर्ण कराये जाने का कार्य क्रमिक हैए पीएम किसान प्रकोष्ठ में उपलब्ध शिकायती पंजिका का अवलोकन करते हुये जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि अपात्रता की स्थिति में

निरीक्षण करती हुई डीएम

संबंधित किसान की अपात्रता की स्थिति का अंकन अवश्य किया जाय तथा ओपेन सोर्स के माध्यम से लम्बित 1842 आवेदन को नियमानुसार तीन दिवस में निस्तारित किया जाय। जिला द्वारा उप कृषि निदेशक कार्यालय के सभागार से लगे हुये भण्डार कक्ष के निरीक्षण के समय भण्डार कक्ष में साफसफाई कराये जाने एवं सामग्रियों को व्यवस्थित रूप से रखने हेतु निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी द्वारा कार्यालय के स्थापना कक्ष में उपस्थित लिपिक से जनपद में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर लेखा कक्ष में उपस्थित पटल प्रभारी से ऑनलाइन भुगतान प्रणाली (पीएफएमएस एवं यूपीकोष), एनएफएसएम एवं तिलहन योजना आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की गयी। जिस पर उप कृषि निदेशक द्वारा कृषि यन्त्रों पर मिलने वाले अनुदान की प्रकिया (ई लॉटरी) के सम्बन्ध में अवगत कराया। तत्पश्चात् जिलाधिकारी द्वारा जनपदीय मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का निरीक्षण किया गया। प्रयोगशाला में उपस्थित अध्यक्षए मृदा परीक्षण प्रयोगशाला से पीएच मानए नाइट्रोजनए फास्फोरसए विद्युत चालकताए जैविक कार्बन एवं पोटाश आदि के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करते हुये जांच विधि के सम्बन्ध में प्रयोगशाला में पोस्टर चस्पा कराये जाने हेतु निर्देशित करते हुये अनुपस्थित संविदाकर्मी से स्पष्टीकरण प्राप्त करने हेतु उप कृषि निदेशकए अमेठी को निर्देशित किया। जिलाधिकारी द्वारा कार्यालय के बाहर वृहद वृक्षारोपण कराते हुये साफसफाई कराये जाने हेतु निर्देश दिया गया।

बाबा अमरनाथ के दर्शनार्थियों के वापस लौटने पर हुआ स्वागत

लालगंज रायबरेली। ओम शिव शक्ति मानव सेवा समिति के तत्वावधान में बाबा बर्फानी अमरनाथ यात्रा से पहले जत्थे के सकुशल लौटने पर समिति और व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने उनका भव्य स्वागत किया। 24 श्रद्धालुओं का जत्था गत माह की 29 तारीख को बाबा अमरनाथ के दर्शन के लिए निकले थे। सभी भक्त दर्शन के बाद लौट आए हैं। उद्योग व्यापार संरक्षक रविंद्र मुरारका, नगर अध्यक्ष विवेक शर्मा के नेतृत्व में गुरबक्शगंज चौराहा स्थित उत्सव लान में सभी भक्तों का पुष्प माला व अंगवस्त्र पहनाकर स्वागत हुआ। व्यापार मंडल के प्रदेश संगठन मंत्री मृत्युंजय बाजपेई, रोहित सोनी, अप्पू शर्मा, सचिन गुप्ता, पुष्कर गुप्ता, शिवम गुप्ता, कौशलेंद्र कंचन, दीपक भदौरिया, बउवा गुप्ता, अंकित सिंह, प्रतीक शर्मा, अक्षय गुप्ता, आशीष चौरसिया, विकास शर्मा, बउवा बाजपेई, रौनक भदौरिया, दीपक अवस्थी, गोलू त्रिपाठी, गुड्डू भदौरिया, सुमित त्रिपाठी सहित अन्य भक्त व समिति के पदाधिकारी मौजूद रहे।

पुलिस ने 24 घण्टे में दो चोरियां का किया खुलासा, चार अभियुक्त हुए गिरफ्तार

अमेठी। जिले में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान दृष्टिगत पुलिस अधीक्षक अमेठी के निर्देशन में व अपर पुलिस अधीक्षक अमेठी के पर्यवेक्षण में चेकिंग संदिग्ध व्यक्तिए वस्तुए वाहन के दौरान उ0नि0 संजय सिंह थाना मुंशीगंज जनपद अमेठी मय हमराह मुंशीगंज चौराहे से परतोष के मध्य कर्बला जाने वाले मार्ग के सामने मौजूद थे तभी मुखबिर ने सूचना दी कि मटर दाल चोरी से संबन्धित डीसीएम ट्रक मुंशीगंज से सुल्तानपुर की ओर आ रही है । उक्त सूचना पर पुलिस टीम द्वारा सतर्कतापूर्वक चेकिंग की जाने लगी तभी कुछ समय बाद मुंशीगंज की ओर से डीसीएम ट्रक आता हुआ दिखायी दिया जिसे पुलिस टीम द्वारा रुकने का इशारा किया गया। डीसीएम चालक द्वारा सड़क के किनारे डीसीएम रोक दी गई एवं चालक व डीसीएम में बैठा अन्य एक व्यक्ति उतरकर भागने लगा ।

जानकारी देते हुए एएसपी

पुलिस टीम द्वारा हिकमतअमली से दोनों व्यक्तियों को पकड़ लिया गया एवं नाम पता पूछने पर चालक ने अपना नाम मुस्तकीम पुत्र स्व0 रहीम उम्र करीब 55 वर्ष व दूसरे ने अपना नाम अरमान पुत्र मुस्तकीम उम्र करीब 22 वर्ष निवासीगण ग्राम काले का पुरवा मजरे तेन्दुआ थाना फुरसतगंज जनपद अमेठी बताया। जामातलाशी से अरमान के कब्जे से 500 रुपये व मुस्तकीम के कब्जे से 2,000 रुपये बरामद हुये। अभियुक्तों की निशानदेही पर शाहमऊ बाजार थानाक्षेत्र मोहनगंज में ग्राम पूरे पंडित में दुकान से कुल 125 बोरी मटर दाल की बरामद हुयी व नसीराबाद बाजार जनपद रायबरेली से अनस की दुकान से कुल 238 बोरी मटर दाल बरामद हुयी। चोरी की मटर दाल खरीदने वाले व्यक्ति का नाम पता पूछने पर उसने अपना नाम मो. अनस पुत्र रियाज अहमद निवासी वार्ड नं0 06 शिवनगर तिराहा कस्बा व थाना नसीराबाद जनपद रायबरेली उम्र करीब 21 वर्ष बताया एवं बताया गया कि मै रुपयों के लालच में चोरी के माल को सस्ते में खरीद लेता हूं ताकि यह माल बेचने से मुझे ज्यादा मुनाफा हो सके । उक्त तीनों व्यक्तियों को 08 जुलाई को समय करीब 01.05 बजे रात्रि में गिरफ्तार किया गया। कुल बरामद 403 बोरी मटर दाल को कब्जे में लेकर व गिरफ्तारी के संबन्ध में थाना मुंशीगंज पुलिस द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है ।

कांशीराम आवास के सामने बने एसटीपी प्लांट का निरीक्षण किया

अयोध्या। मण्डलायुक्त गौरव दयाल ने नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा के साथ शहरी क्षेत्रों में सीवर जल शोधन हेतु अयोध्या में कांशीराम आवास के सामने बने एसटीपी प्लांट का निरीक्षण किया, जहां पर वर्तमान में 18 एमएलडी जल शोधित किया जाता है। उन्होंने जल शोधन प्रक्रिया के सम्बंध में जलनिगम के सहायक अभियन्ता से जानकारी प्राप्त की तथा प्रक्रिया को अधिकाधिक ऑटोमेटेड कराये जाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि शहर से आने वाली सभी सीवर लाइन के मैनहोल की सतत निगरानी रखी जाय तथा उन्हें निश्चित अन्तराल में साफकिया जाएए जिससे कि शहर का सीवर एसटीपी तक निर्बाध रूप से पहुंच सकें और यहां से निकलने वाले शोधित जल को जिन नालों में डाला जाता है उनकी भी निरन्तर साफ सफाई होए जिससे कि कहीं भी जलभराव न हों। मण्डलायुक्त ने जल निगम के इंजीनियरों से कहा कि शहर के विस्तारीकरण का सर्वे कर लें जिस

ओर शहर विस्तारित हो रहा हो उस क्षेत्र में उपर्युक्त भूमि का चयन कर अतिरिक्त एसटीपी प्लांट का प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजें। इस दौरान नगर निगमए जल निगम एवं सभी संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित रहें।

सीएमओ ने परिवार नियोजन जागरूकता 'सारथी वाहन' को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

संतकबीरनगर। परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार हेतु जागरूकता वाहन सारथी वाहन के संचालन हेतु सोमवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. रामानुज कन्नौजिया ने कार्यालय परिसर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उक्त 'सारथी वाहन' सीमित परिवार के लाभ और परिवार नियोजन के साधनों के बारे में आमजन को जागरूक करेगा। सीएमओ डॉ. कन्नौजिया ने बताया कि जिले के सभी नौ ब्लाकों में यह 'सारथी वाहन' 8 जुलाई 2024 से आगामी 11 जुलाई 2024 तक भ्रमण करेगा। जनपद मुख्यालय स्तर पर 02 वाहन 04 दिन तथा ब्लाक स्तर पर 03 वाहन 04 दिन तक भ्रमण कर परिवार नियोजना का प्रचार प्रसार करेंगे। सीएमओ ने बताया कि वाहन संचालन का उद्देश्य जन समुदाय को सीमित परिवार के बारे में जागरूक करने के साथ परिवार कल्याण कार्यक्रम में पुरुषों की भागीदारी बढ़ाना है। यह सारथी वाहन गाँव-गाँव जाकर

हरी झण्डी दिखाते मुख्य चिकित्सा अधिकारी।

परिवार नियोजन प्रचार प्रसार संबंधी पम्पलेट वितरण करेगा। परिवार नियोजन के अस्थायी साधनों जैसे:- कंडोम, माला एन गोली इत्यादि का भी वित्रण भी वितरंण करेगा। आशा एवं एएनएम सारथी वाहन भ्रमण के समय सहायता करेंगी। आशा एवं एएनएम को निर्देशित किया है कि वह योग्य दंपति से सम्पर्क करके उन्हें पस्विार नियोजन के स्थायी और अस्थायी साधनों की जानकारी दें। दो बच्चों के जन्म के बीच कम से तीन साल का अंतर रखना चाहिए। जिनका परिवार पूरा हो चुका है उनको स्थायी सेवा पुरूष या महिला हो नसबंदी के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सीएमओ आरसीएच डॉ. महेन्द्र प्रसाद, डॉ. आरपी मौर्य डीएसओ, डॉ. सोहन गुप्ता, डॉ. मुवारक अली एपीडिमोलॉजिस्ट, विनीत कुमार श्रीवास्तव डीपीएम, डॉ. अबू बकर, इम्तेयाज अहमद फैमिली प्लानिंग मैनेजर, संगीता मातृ स्वास्थ्य सलाहकार, सुरजीत सिंह अर्बन हेल्थ कोऑर्डिनेटर, दीन दयाल वर्मा कन्सलटेंट, जयेन्द्र विक्रम व अन्य लोग उपस्थित रहे।

हाईवे पर दुर्घटना में प्रौढ़ की मौत

मुसाफिरखाना अमेठी। थाना भाले सुल्तान शहीद स्मारक क्षेत्र के कंजास गांव के पास हाईवे पर साइकिल सवार व्यक्ति की अज्ञात वाहन की टक्कर से दर्दनाक मौत हो गयी। सोमवार को भाले सुल्तान शहीद स्मारक थाना क्षेत्र के मस्त राम पाण्डेय सुत रामफल पाण्डेय उम्र लगभग 58 वर्ष निवासी मिर्जापुर मजरे बिराहिमपुर बाजगढ़ थाना बाजार शुक्ल मुकदमे के सिलसिले में तहसील मुसाफिरखाना मुख्यालय पर मुकदमे की पैरवी के लिए तहसील मुख्यालय आ रहे थे। इसी बीच रास्ते में भाले सुल्तान शहीद स्मारक क्षेत्र कंजास गांव के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से उनकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गयी। स्थानीय लोगों के द्वारा एम्बुलेंस की सहायता से स्थानीय सीएचसी मुसाफिरखाना पहुंचाया गया जहाँ डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। थाना भाले सुल्तान शहीद स्मारक पुलिस द्वारा विधिक कार्यवाही करते हुए लाश पोस्टमार्टम के लिए भिजवाते हुए औपचारिकता पूर्ण की।

जिलाधिकारी ने जनपद में संभावित बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का किया भौतिक निरीक्षण

अयोध्या। जिलाधिकारी नितीश कुमार ने जनपद में सम्भावित बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का किया भौतिक निरीक्षण। राहत एवम् बचाव कार्य हेतु तैयारियों का लिया जायजा। सभी संबंधित विभाग के अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा निर्देश। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा तहसील रुदौली के संभावित बाढ़ प्रभावित ग्राम मंहगू का पुरवा का भ्रमण भौतिक निरीक्षण किया तथा ग्रामीणों से स्थिति की जानकारी ली। इस अवसर पर तहसील द्वारा बताया गया कि संभावित बाढ़ को देखते हुए पर्याप्त संख्या में नावों की व्यवस्था कर ली गई है जिससे आवश्यकता पड़ने पर बाढ़ प्रभावितों को सुगमता से सुरक्षित स्थल पर बनाई गई बाढ़ शरणालय में विस्थापित किया जा सके। इस दौरान जिलाधिकारी ने आशा से जिलाधिकारी द्वारा ग्रामीणों में क्लोरीन की गोली व ओआरएस आदि के उपलब्धता की जानकारी ली तथा सीएचसी प्रभारी अधीक्षक को ग्रामीणों को बेहतर से बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा सरकार द्वारा दी जा रही विभिन्न सेवाओं का सुगमता से पहुंचाना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। तदोपरांत जिलाधिकारी द्वारा ग्राम पंचायत महोली में स्थापित किए गए बाढ़ शरणालय का निरीक्षण किया गया तथा वहां पर उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी ली गई सीएचसी अधीक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि बाढ़ शरणालय पर आवश्यकता अनुसार चिकित्सा टीम तैनात कर दी गई है तथा यहां प्रयाप्त मात्रा में सभी आवश्यक दवाइयां उपलब्ध हैं आवश्यकतानुसार लोगों को सुविधा उपलब्ध कराई जा रही हैं। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने ग्राम पंचायत महोली उपरहार में जल जीवन मिशन योजना के अंतर्गत जन सामान्य स्वच्छ पेय जल उपलब्ध कराने हेतु संचालित शिरोपरि जलाशय संयंत्र का निरीक्षण किया तथा उपस्थित ऑपरेटर को नियमित ग्रामीणों को जल आपूर्ति सुनिश्चित रखने के साथ ही परिसर में वृक्षों को भी आरोपित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने बताया कि जनपद में घाघरा (सरयू) नदी पर दो तटबन्ध स्थित हैं. प्रथम रौनाही तटबन्ध यह तटबंध घाघरा नदी के दायें तट पर स्थित है। जिसकी लम्बाई 14.550 किमी है। द्वितीय. अयोध्या बिल्वहरिघाट तटबन्ध 13.140 किमी है। उपरोक्त के अतिरिक्त तमसा नदी (मड़हा) के बायें तट पर गोशाईंगंज शहर सुरक्षा तटबंध हैए जिसकी लम्बाई 05. 340 किमी है। उपरोक्त तटबंध सुरक्षित हैं। जनपद में तीन तहसीलों यथा तहसील सदर के 10 गांव (01.मांझा मूड़ाडीहा अयोध्या, 02.मांझा मूड़ाडीहा बस्ती, 03.मांझा सलेमपुर 04. मांझा पूरे चेतन, 05.मांझा पिपरी संग्रामए 06.माझा मड़ना, 07.माझारामपुर पुवारी, 08.माझा काजीपुर, 09.माझा मीरापुर ढाबा, 10.छावनी गौरा बारिक), तहसील रुदौली के 07 गांव (01.मुजेहना मजरे सरायनासिर, 02.पूरे मंहगू मजरे पसैया, 03.पूरे महंगू मजरे सण्डरी, 04.अब्बूपुर मजरे बरई, 05.कैथी माझा मजरे कैथी, 06.सुलेमपुर मजरे उधरौरा, 07.सल्लाहपुर मजरे कैथी) तथा सोहावल का 01 गांव मांझाकलॉ कुल 18 गांव संभावित बाढ़ प्रभावित गांव हैं। वर्तमान में कोई गांव बाढ़ से प्रभावित नही है।

उक्त सभी तटबंधो, ग्रामों व क्षेत्रों में राजस्व विभाग व अन्य विभागों द्वारा सम्भावित बाढ़ के दृष्टिगत सतत् निगरानी रखी जा रही है। बाढ़ के निगरानी हेतु जनपद स्तर पर व तहसील स्तर कण्ट्रोल रूम स्थापित किया गया है। जिसका 24म7 संचालन किया जा रहा है। जनपद अयोध्या में बाढ़ के दृष्टिगत प्रभावित क्षेत्रों में आवश्कतानुसार तहसील सदर में 06, तहसील सोहावल में 01 एवं तहसील रूदौली में 03, कुल 10 बाढ़ केन्द्र/राहत शिविर स्थापित किये गये हैं। उक्त चैकियों में राजस्वध्स्वास्थ्यधपशु चिकित्सा विभाग के कर्मचारियों की ड्यूटी 15 जून से ही लगा दी गयी है। चिकित्सा विभाग द्वारा बचाव एवं राहत हेतु 37 टीमों तथा पशु चिकित्सा विभाग द्वारा 21 टीमों का गठन किया गया है। स्टीयरिंग ग्रुपध्बाढ़ की बैठक कर सम्भावित बाढ़ के दृष्टिगत बचाव एवं राहत कार्य किये जाने हेतु सभी सम्बन्धित विभागों को समस्त आवश्यक प्रबन्ध किये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। तहसील सदरए सोहावल व रुदौली के उपजिलाधिकारी/तहसीलदार को सतत् निगरानी रखने के साथ ही आवश्यकतानुसार खाद्यान्न वितरण व पशुओं के चारे हेतु भूसे का वितरण किया जा रहा है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में संबंधित उपजिलाधिकारी/तहसीलदार, चिकित्सा विभाग व पशुचिकित्सा विभाग द्वारा बनाई गयी टीमों द्वारा भी बाढ़ क्षेत्रों का भ्रमण किया जा रहा है।

प्राची प्रजापति का नवोदय विद्यालय में हुआ चयन

लालगंज रायबरेली। कस्बे के चिकमण्डी निवासिनी छात्रा प्राची प्रजापति का नवोदय विद्यालय में चयन हो गया। बिटिया के चयनित होने पर जहां जहां उसके माता.पिता बेहद गदगद हैं, वही विद्यालय के अध्यापकों ने छात्रा का मुंह मीठा करा कर उसे शुभकामनाएं दीं हैं। प्राची कस्बे के डा. रिज़वी मेमोरियल पब्लिक स्कूल में कक्षा पांच की छात्रा है। उसके पिता प्रमोद कुमार जीविका चलाने के लिए मजदूरी करते है और मां संगीता प्राइवेट स्कूल में पढ़ाती हैं। होनहार बिटिया के नवोदय विद्यालय में चयन होने से उसके माता.पिता और शिक्षकों में खुशी की लहर है। इस उपलब्धि पर उसके शिक्षकों ने बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य पुष्पेंद्र ने बताया कि प्राची पढ़ने में अव्वल है। उसने ने पूरे विद्यालय में सबसे ज्यादा अंक हासिल किया। नवोदय विद्यालय में चयन होने से छात्रा ने फिर अपने विद्यालय के साथ अपने माता पिता और गुरुजनों का नाम रोशन किया।

यशोधरा फाउंडेशन करेगा बिना दवाओं के इलाज

गोंडा। यशोधरा हेल्थ रिजॉर्ट एंड वैलनेस ट्रस्टए श्रावस्ती की स्थापना दिवसध्प्रथम वर्षगांठ बड़े ही उल्लास पूर्वक टाउन हॉलए गोंडा में मनाया गया। दवा रहित उपचार विषय पर एक संगोष्ठी भी आयोजित हुई। समारोह के मुख्य अतिथि यशोधरा फाउंडेशन के संस्थापक व सीएमओ श्रावस्ती डॉ. एपी सिंह रहे। अध्यक्षता रेडक्रॉस सोसायटी के संरक्षक सैयद हाकिम अली ने किया। समारोह का सफल संयोजन गोंडा के वरिष्ठ पत्रकार व सेवा भारती, गोंडा के जिलाध्यक्ष डा. ओंकार पाठक ने तथा संचालन रविंद्र कुमार पांडेय ने किया।

शुभारंभ कवि अवधेश कुमार सिंह की सरस्वती वंदना से हुआ। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. ओंकार पाठक व मुख्य अतिथि डा. एपी सिंह ने यशोधरा हेल्थ रिजॉर्ट एंड वैलनेस ट्रस्ट की स्थापना व पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डाला। गोष्ठी के दौरान आरएसएस के जिला संघ चालक सिंह ने कहा कि यशोधरा हेल्थ एंड वैलनेस ट्रस्ट द्वारा दवा रहित इलाज के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा हैए

जो एक पुनीत कार्य है। एससीपीएम ग्रुप की अध्यक्षा अलका पांडेय ने कहा कि यह ट्रस्ट ड्रग्लेस थेरेपी को बढ़ावा दे रहा हैए जो वर्तमान में बहुत ही उपयोगी साबित होगा। भिनगा के डॉ. विश्वनाथ मिश्र ने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा का वास होता है। अत: मनुष्य का स्वस्थ रहना अति आवश्यक है। इसके लिए लोगों को अपने दिनचर्या में योग व प्राणायाम को शामिल करना पड़ेगा। श्रावस्ती के भाजपा जिलाध्यक्ष उदय प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि यशोधरा ट्रस्ट से मेरा निजी लगाव हैए क्योंकि इसकी स्थापना सीएमओ डॉण् एण्पीण् सिंह द्वारा मेरे ही ग्राम सभा में किया गया है। इसके माध्यम से निश्चित ही मेरे ग्राम सभा के लोगों को दवा रहित उपचार की सुविधा मिलेगी। एलबीएस पीजी कॉलेज की उपाध्यक्ष वर्षा सिंह ने कहा कि आज प्रिकासन इज बेटर दैन क्योर फंडे पर कार्य करने की जरूरत है। उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग के पूर्व सदस्य व रिटायर्ड प्रोफेसर शेर बहादुर सिंह ने कहा कि यशोधरा हेल्थ रिजॉर्ट द्वारा दवा रहित चिकित्सा का चलाया जा रहा अभियान मानव जीवन के लिए अत्यंत ही उपयोगी साबित होगा। सीएमओ गोंडा डॉ. रश्मि वर्मा ने कहा कि यशोधरा फाउंडेशन का ड्रग लेस थेरेपी का कार्य बहुत ही सराहनीय है। निश्चित ही यह मील का पत्थर साबित होगा। साथ ही भारत को विश्व गुरु बनाने में सहयोगी बनेगा। समारोह के मुख्य अतिथि यशोधरा फाउंडेशन के संस्थापक व सीएमओ श्रावस्ती डॉ. एपी सिंह ने कहा कि मेरी जब श्रावस्ती जनपद में सीएमओ के पद पर तैनाती हुई तो वहां की परिस्थितियों को देखने के बाद तय कर लिया कि अगले 10 साल मुझे किन बिंदुओं पर कार्य करना है।

शिक्षको ने डीएम कार्यालय पर आनलाईन हाजिरी के विरोध प्रदर्शन कर दिया ज्ञापन

संतकबीरनगर। बेसिक स्कूलों में ऑनलाइन हाजिरी के खिलाफ शिक्षक संगठन मुखर हो गए हैं। सोमवार को सैकड़ों शिक्षकों ने ऑनलाइन हाजिरी के विरोध में कलेक्ट्रेट का घेराव कर विरोध जताया। शिक्षकों ने कहा कि जब तक शिक्षकों की सभी समस्याओं का समाधान नहीं हो जाता है तब तक ऑनलाइल हाजिरी नहीं लगाई जाएगी। सोमवार को राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ तथा जूनियर शिक्षक संघ ने ऑनलाइन हाजिरी के विरोध में कलेक्ट्रेट का घेराव किया। सैकड़ों की संख्या में जुटे शिक्षकों ने एक स्वर से ऑनलाइन हाजिरी के मुद्दे पर काली पट्टी बांधकर विरोध जताया। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिलाध्यक्ष नवीन त्रिपाठी तथा जूनियर संघ के अशोक कुमार गुप्त ने मुख्यमंत्री को सम्बोधित सात सूत्रीय ज्ञापन प्रभारी जिलाधिकारी को सौंपने के बाद कहा कि शिक्षकों की कई समस्याएं वर्षों से लंबित हैं। इसके बारे में कई बार शासन को अवगत कराया गया मगर शासन ने इसका संज्ञान नहीं लिया। बिना समस्याओं का समाधान किये ऑनलाइन हाजिरी का आदेश अनुचित है। यह किसी भी रूप में स्वीकार नहीं है। ज्ञापन में जिलाध्यक्ष नवीन त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षकों की विभिन्न मांगे जो वर्षों से लंबित हैं उनका सरकार या शासन के उच्चाधिकारी समाधान नहीं कर रहे हैं। इससे शिक्षक कई तरह की समस्याओं से जूझ रहे हैं। सभी शिक्षक संगठनों की मांग है कि पहले शिक्षकों की सभी समस्याओं का समाधान किया जाए उसके बाद ही ऑनलाइन हाजिरी का आदेश जारी किया जाए। यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो जिला से लेकर के प्रदेश स्तर तक ऑनलाइन हाजिरी का विरोध किया जाएगा। इस अवसर पर अशोक गुप्ता, ओम नारायण शुक्ला, अमरेश चौधरी, राजेश मौर्य, सच्चिदानंद सिंह, आरिफजमाल अंसारी, मनोज सिंह, श्याम नारायण सिंह, आनंद सिंह, सर्वेश राय, आशीष गौतम, आलोक सिंह, रामकेश गौतम, अनूप सिंह, राम प्रकाश राय, रमेश यादव, जनार्दन यादव, शैलाभ मौर्य, अविनाश भारती, दीपचंद, अजय सरकार, धर्मेंद्र नाथ राय, शालिनी चतुर्वेदी समेत कई शिक्षक मौजूद रहे।

भैंस चोर की आशंका में ग्रामीणों ने युवक को बिजली के खंभे में बांधा

लालगंज रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में रविवार को रात को भैंस चोरी की आशंका में ग्रामीणों ने एक युवक को पकड़ लिया। भीड़ ने उसे पीट कर बिजली के खंभे से बांध दिया। जिसका फोटो सोशल मीडिया में वायरल है। वायरल फोटो शाहपुर गांव का बताया जा रहा है। हालांकि सोशल मीडिया में वायरल फोटो की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है। ग्रामीणों ने बताया कि पिकअप वाहन लोडर से तीन अज्ञात चोर गांव में आए। रात करीब एक बजे वह भैंस खोलने की फिराक में थे। तभी कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया इस पर उनकी नींद खुल गई। ग्रामीणों ने दौड़ाकर उनमें से एक युवक को पकड़कर बिजली के खंभे से बांध दिया और उसकी जमकर धुनाई कर दी। सूचना पर जब पुलिस गांव पहुंची तो ग्रामीणों ने उसे पुलिस को सौंप दिया। प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार ने बताया कि मामला संज्ञान में आया है। युवक खुद को ग्रामीणों के

चंगुल से छुड़ाकर कहीं गायब हो गया। ग्रामीणों की ओर से बताया गया कि वह मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं था।

कलयुगी पुत्र ने बुजुर्ग पिता को पीटा रिफर, केस दर्ज

नसीराबाद रायबरेली। नसीराबाद थाना क्षेत्र के एक गांव में खेत मे पानी लगाने को लेकर एक कलयुगी पुत्र ने अपने पिता को जमकर पीटा। पुलिस ने घायल बुजुर्ग को मेडिकल के लिए सीएचसी भिजवाया। यहां हालत गम्भीर होने पर जिला अस्पताल रिफर कर दिया।

ऑनलाइन हाजिरी के खिलाफ आरएसएम ने खोला मोर्चा, मांग न पूरी होने तक करेंगे विरोध

● डिजिटाइजेशन/ऑनलाइन उपस्थिति आदेश के विरोध में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा ● समस्याओं के समाधान उपरांत ही लागू हो डिजिटाइजेशन/ ऑनलाइन उपस्थिति की व्यवस्था ● हजारों शिक्षक ने कहा कि हम स्वीकार नहीं करेंगे ऑनलाइन हाजिरी

रायबरेली। ऑनलाइन हाजिरी और डिजिटलाइजेशन के खिलाफ राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने जिला मुख्यालय पर विशाल धरना प्रदर्शन किया। प्रदेशीय आवाह्न पर जिलाध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह के नेतृत्व में हजारों शिक्षकों की मौजूदगी में डिजिटाइजेशनध्ऑनलाइन उपस्थिति के विरोध में मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी के प्रतिनिधि सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा। प्रदेश संगठन मंत्री शिवशंकर सिंह ने कहा कि महानिदेशक स्कूल शिक्षा द्वारा 8 जुलाई से पंजिकाओं का डिजिटाइजेशनध्ऑनलाइन उपस्थिति देने का आदेश निर्गत किया गया है जो कि तुगलकी फरमान है। विभागीय अधिकारी वातानुकूलित कक्ष में बैठकर बिना जमीनी हकीकत जाने ही इस प्रकार के अव्यवहारिक आदेश करते रहते हैंए जिनमें आने वाली व्यवहारिक कठिनाइयों को दूर किए बिना उसको लागू करा पाना संभव ही नहीं है। जिलाध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह और जिला कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने कहा कि प्रदेशीय नेतृत्व द्वारा कई बार महानिदेशक स्कूल शिक्षा को ज्ञापन सौंपकर डिजिटाइजेशन से जुड़ी मौलिक समस्याओं को दूर करने की मांग की गई थी।

जिला महामंत्री संजय कनौजिया ने कहा कि 14 मार्च 2024 को महानिदेशक स्कूल शिक्षा कार्यालय में धरना भी किया गया था। तब महानिदेशक द्वारा संगठन के प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया गया था कि डिजिटाइजेशन से जुड़ी मौलिक समस्याओं के निस्तारण के पश्चात ही इसे लागू किया जाएगा। किंतु मांगे पूरी नहीं की गई। जिला संगठन मंत्री मधुकर सिंह ने कहा कि विभागीय अधिकारी दमन पूर्वक डिजिटाइजेशनध्ऑनलाइन उपस्थिति व्यवस्था लागू करना चाहते हैं जिसका संगठन पुरजोर विरोध करता है।

जिला कोषाध्यक्ष राजेश कुमार मौर्य ने कहा कि महासंघ विभागीय व सामाजिक दायित्वों के प्रति सजग रहकर छात्र हित व शिक्षा हित में इस आदेश का बहिष्कार कर रहा है। जिला संयुक्त महामंत्री हरिमोहन यादव और ऑडिटर अनुराग सिंह ने कहा कि प्रमुख समस्याओं का समाधान किये बिना ही विभागीय अधिकारियों द्वारा भय का वातावरण बनाकर डिजिटलाइजेशन ध्ऑनलाइन उपस्थिति (फेस रिकग्निशन) की व्यवस्था केवल बेसिक शिक्षा विभाग में ही लागू की जा रही है। इससे पूरे प्रदेश का शिक्षक समाज स्वयं को अपमानित एवं ठगा महसूस कर रहा है। शिक्षकों में शासन व विभाग के प्रति व्यापक आक्रोश है। विशाल प्रदर्शन का संचालन रणविजय सिंह गंगापारी ने किया। ज्ञापन सौंपने वालों में वीरेन्द्र चौधरी, जयकरन, सुनीता चौधरी, शशिदेवी, पुष्पलता पाण्डेय, प्रतिमा सिंह, अनूप सिंह, हरिशरण मौर्य, दिनेश प्रताप सिंह, अनुराग मिश्रा, आशुतोष शुक्ल, वेद प्रकाश यादव, आशुतोष मौर्या, संजय सिंह, राकेश गौतम, बृजेन्द्र कुमार, रामेश्वर, अवधेश कुमार, मोहित पटेल, रविन्द्र सिंह यादव, सुशील शुक्ला, पंकज सिंह, सुरेश यादव, कमलेश, सरोज कुमार, संदीप सिंह, विमला यादव, सुनीति सिंह, कविता गौतम, शालिनी सिंह, मालती देवी, श्रीकान्त यादव, दिनेश सिंह, रमेश सिंह, लोकतंत्र शुक्ला, राम भरत राजभर, शशि देवी, नीरज, धर्मेंद्र, अजय सहित हजारों शिक्षक उपस्थिति रहे।

शिक्षक संगठन की प्रमुख मांगें

1. अन्य विभागों की भांति श्हाफ डे लीव अवकाशश् का दिया जाए।
2. राज्य कर्मचारियों की भांति 30 ईएल या महाविद्यालयों के शिक्षकों की भांति पीएल दिया जाए।
3. अन्य विभागों की भांति प्रतिकर अवकाश प्रदान किया जाए।
4. मौसम की प्रतिकूलता व विभागीय कार्यक्रमों में प्रतिभाग हेतु बीएसए को ऑनलाइन उपस्थिति में शिथिलता का अधिकार दिया जाए।
5. सर्वर क्रैश होने पर वैकल्पिक व्यवस्था का दिशा निर्देश जारी किया जाए।
6. भेदभाव पूर्ण व शोषणकारी ऑनलाइन उपस्थिति की व्यवस्था को समाप्त कर अन्य विभागों की भांति ही उपस्थिति ली जाए।

बीज भंडार का ताला न खुलने से किसान निराश होकर लौटे

● बीज किट देने में किया जा रहा है भेदभाव

बीज भंडार के सामने खडे किसान

कुरारा (हमीरपुर)। ब्लाक स्थित राजकीय कृषि बीज भंडार में प्रभारी द्वारा आज केंद्र न खोले जाने से खरीफ फसल की बुवाई के लिए बीज लेने आए किसानो को मायूस होकर लौटना पड़ा। सैकड़ों किसान केंद्र में दोपहर तक इंतजार करते रहे। लेकिन केंद्र का ताला नहीं खुला। विकास खंड कार्यालय परिसर में राजकीय कृषि बीज भंडार का केंद्र संचालित है। इस केंद्र से क्षेत्र के किसानो को रबी फसल व खरीफ फसल का बीज वितरण किया जाता है। इस समय खरीफ फसल में किसान ज्वार, तिल, मूंग, उड़द, बाजरा, अरहर, मूंगफली, आदि का बीज बिक्री किया जा रहा है। किसानो के लिएयह समय खरीफ फसल में बुवाई का चल रहा है। शासन के निर्देश है कि अवकाश के दिन भी केंद्र संचालित होना चाहिए। जिससे किसानो को बीज मिल सके तथा समय से खरीफफसल की बुवाई संपन्न हो सके। आषाढ़ मास में बरसात के चलते खरीफफसल बुवाई का समय कम मिल पाता है। उमराह ट गांव के विकलांग किसान शिवपाल, पूर्व मंडल अध्यक्ष भाजपा कामता कुशवाहा जल्ला,आशा रानी पारा,माया देवी झलोखर, राम सिया जल्ला,गंगाबाई झलोखर,जागेश्वर बेरी, नरेंद व रामचंद्र बिलौटा बलिराम शीतल पुर सहित डेढ़ सैकड़ा अधिक किसानों ने बताया कि तड़के केंद्र में आ गए थे। लेकिन केंद्र प्रभारी द्वारा दोपहर तक केंद्र नही खोला गया किसान इंतजार करते करते मायूस होकर अपने घर को वापस लौट गए। किसानो ने बताया कि तिल के मिनी किट निशुल्क वितरण के लिए सरकार द्वारा भेजे गए हैं। प्रभारी द्वारा इसमें भेदभाव किया जा रहा है।

अपने चहेते लोगो को केंद्र खोलकर दिया जाता है। जब की दूर दूर गांवों से आने वाले किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन कर्मचारियों की लापरवाही व हीला हवाली के चलते किसानो को बीज नही मिल पा रहा है। किसानो ने जिला कृषि अधिकारी से इस प्रकरण की जांच कराए जाने की मांग की है। तथा खरीफ फसल की बुवाई के लिए समय से बीज वितरण कराये जाने की व्यवस्था कराई जाए। इस संबंध में केंद्र प्रभारी अनूप कुमार से जानकारी करने का प्रयास किया गया तो उनका फोन बंद मिला।

राजस्व विभाग का भयंकर भ्रष्टाचार, बांदा अधिकारियो पर जम कर बरसे भाजपा के शिक्षक विधायक बाबूलाल

बांदा। शिक्षक विधायक ने कहा जब मेरा काम नहीं हो रहा तो जनता का कैसे होता होगा काम उन्होंने एक और खुलासा किया के कृषि भूमि को आवासी में बदलने हेतु लेखपाल कानूनगो नायब तहसीलदार, तहसीलदार एसडीम बिना मिठाई के बिना कोई कार्य नहीं करते है यदि मिठाई सुविधा शुल्क मिल गई पूरा कर मात्र एक हफ्ते में कंप्लीट हो जाता है और आदेश भी हो जाता है। झांसी प्रयागराज क्षेत्र से शिक्षक विधायक हैं बाबूलाल तिवारी जी का 4 वर्ष से कृषि हम आवासीय भूमि में परिवर्तित नहीं की जा रही क्योंकि विधायक ने मिठाई और सुविधा शुल्क नहीं दी इस बात को लेकर विधायक जी काफी क्रोधित हुए और एसडीएम कार्यालय के चेंबर में जाकर काफी गुस्सा हकीकत जाहिर की कि जब मेरा कार्य नहीं हो रहा तो जनता का काम कैसे होता होगा।

संचारी रोग नियंत्रण अभियान के तहत चलाया गया साफ सफाई, झाड़ियों की कटाई, एंटी लार्वा छिड़काव अभियान

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में संचारी रोग नियंत्रण अभियान जनपद में चलाया जा रहा है, विभिन्न विभागों के समन्वय से तहसीलों, कस्बों, गांवों में साफ सफाई, झाड़ियो की कटाई, नाली, नालो की सफाई एन्टी लार्वा छिड़काव, फॉगिंग आदि गतिविधियां संचालित की जा रही है। डीएम ने संबंधित सभी विभागों को कड़े निर्देश दिए हैं कि शासन द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुरूप संचारी रोग नियंत्रण अभियान का संचालन जनपद में किया जाए, जिसके अनुपालन में सभी संबंधित विभागों द्वारा दिन प्रतिदिन कार्ययोजना के अनुरूप विभिन्न गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। आज जनपद के विकासखंड क्षेत्र मलासा के बिहारी, निगोही बरगवां तुर्की मऊ टोडरपुर, मुरलीपुर, विजईपुर, सरौटा, नगर पंचायत शिवली मूसानगर आदि में साफ सफाई, नाली . नाला सफाई, जल जमाव निकासी, कूड़ा उठान, एन्टी लार्वा छिड़काव आदि का कार्य अभियान चलाकर किया गया। कृषि विभाग द्वारा प्रीतमपुर, ग्राम पंचायत ताजपुर तरसौली, ग्राम जलिहापुर, विकासखंड मलासा, अकबरपुर विकासखंड क्षेत्र के ग्राम पातेपुर आदि में लोगों को संचारी रोग नियंत्रण अभियान के तहत चूहाध् छछूंदर नियंत्रण जागरूकता कार्यक्रम किये गए, वही जनपद में संचारी रोग नियंत्रण अभियान 1 जुलाई से 31 जुलाई तक, वही दस्तक अभियान व डायरिया रोको अभियान 11 जुलाई से 31 जुलाई के मध्य संचालित होगा।

दो गैंगस्टरों को हुई पॉच-पॉच वर्ष की सजा व अर्थदण्ड

पुलिस हिरासत में मौजूद गैंगस्टर का आरोपी।

कन्नौज। कोतवाली कन्नौज में गैंगस्टर एक्ट के तहत पंजीकृत अभियोग में न्यायालय द्वारा अभियुक्तगण को धारा 3(1) गैंगस्टर एक्ट में दोषी पाते हुये न्यायालय में 05-05 वर्ष का कठोर कारावास व पॉच-पॉच हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया। प्रभारी निरीक्षक जय प्रकाश शर्मा नें बताया कि अभियुक्तगण द्वारा संगठित गिरोह बनाकर समाज में भय व आतंक का माहौल बनाने व आर्थिक तथा भौतिक लाभ अर्जित करने के सम्बन्ध में कोतवाली कन्नौज में गैंगस्टर एक्ट के तहत अभियोग पंजीकृत हुआ था, जिसकी विवेचना सम्पादित कर अभियुक्तगण उपरोक्त के विरूद्ध आरोप पत्र न्यायालय प्रेषित किया गया। पुलिस महानिदेशक उ.प्र. लखनऊ के निर्देशन में अभियुक्तों को सजा दिलाने हेतु प्रभावी पैरवी के लिये सम्बन्धित थाना प्रभारी व पैरोकारों को अपराधियों को अधिक से अधिक सजा दिलाने हेतु निर्देशित किया गया था। पुलिस टीम एवं अभियोजन पक्ष तथा मॉनीटरिंग सेल व कोर्ट पैरोकार के द्वारा अथक प्रयास एवं प्रभावी पैरवी कराते हुये सोमवार को न्यायालय एडीजे 05 द्वारा अभियुक्तगण धरमू उर्फ धर्म सिंह पुत्र नरपत किसान ग्राम तहसीपुर, प्रकाश उर्फ राम प्रकाश पुत्र मैकू किसान निवासी ग्राम हीरापुरवा को 05-05 वर्ष का कठोर कारावास व पॉच-पॉच हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया।

आनलाइन हाजिरी के खिलाफ शिक्षकों का विरोध प्रदर्शन

● काली पट्टी बांध, सिर मुड़ाकर किया विरोध

फतेहपुर। परिषदीय प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सोमवार से ऑनलाइन हाजिरी अनिवार्य किए जाने के फैसले के खिलाफ विभिन्न शिक्षक संगठनों ने मोर्चा खोल दिया है। सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म के जरिए भी शिक्षक अपना विरोध दर्ज करा रहे हैं। सुबह स्कूल पहुंचे शिक्षक, शिक्षामित्र एवं अनुदेशकों ने हाथ में काली पटटी बांध कर काम किया। कई स्कूलों के शिक्षकों ने मुंडन कराकर भी विरोध दर्ज कराया। उसके बाद जिले भर के शिक्षक-शिक्षामित्र एवं अनुदेशक कलेक्ट्रेट पहुंचे और जमकर नारेबाजी की। बाद में डीएम को एक ज्ञापन सौंप कर अपनी समस्याओं के निदान की मांग की।

डीजी स्कूल शिक्षा ने आठ जुलाई से शिक्षकों के विद्यालय आने का समय डिजिटल उपस्थिति पंजिका में सुबह 7.45 बजे से आठ बजे तक दर्ज किए जाने के निर्देश दिए गए थे। अग्रिम आदेश तक 30 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है। शिक्षक अब सुबह 8.30 बजे तक (कारण सहित उल्लिखित करते हुए) अपनी उपस्थित दर्ज करा सकेंगे। यह सूचना सभी शिक्षकों, शिक्षामित्रों और अनुदेशकों को विभागीय व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से भी भेजी गई है। उधर, प्राथमिक शिक्षक संघ समेत अन्य विभिन्न संगठनों ने अलग-अलग तरीके से विरोध प्रदर्शन करना शुरू कर दिया है। प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला महामंत्री विजय त्रिपाठी ने बताया कि विद्यालयों में काली पट्टी बांधकर विरोध किया गया है। कहा कि अभी बारिश का मौसम चल रहा है। रास्ते कट जाते हैं। ऐसे में यदि शिक्षक फंस जाता है और एक मिनट भी देरी से पहुंचता है तो वह अनुपस्थित माना जाएगा। ऐसे ही जाड़े के दिनों में घना कोहरा होने पर स्कूलों में पहुंचने में थोड़ी देरी हो सकती है। संगठन ऑनलाइन उपस्थिति के विरोध में हाईकोर्ट की शरण में भी जा सकता है। कहा कि यह आदेश न्यायसंगत नहीं है।

काली पट्टी बांध कर किया काम: परिषदीय विद्यालयों में सोमवार से शिक्षकों, कर्मचारियों की डिजिटल अटेंडेंस (टैबलेट पर चेहरा दिखाकर उपस्थिति) लगाने की व्यवस्था का व्यापक स्तर पर विरोध शुरू हो गया है। सोमवार को काली पट्टी बांधकर काम करने के बाद जिला मुख्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया। कलेक्ट्रेट में उमड़े शिक्षकों के जन सैलाब ने एक स्वर से इस व्यवस्था का विरोध किया। श्री त्रिपाठी ने बताया कि पहले शिक्षकों की ईएल, सीएल, हाफ डे जैसी मांग पूरी की जाए। बरसात की दिक्कत को देखते हुए फ्लिहाल डिजिटल अटेंडेंस स्थगित की जाए। सभी विभागों में लागू करें यही व्यवस्था: संगठन के पदाधिकारियों ने कहा कि शासन की आंख नहीं खुलती हैं तो कार्य बहिष्कार का ऐलान किया जाएगा। विभाग पहले लंबित मुद्दों पर निर्णय ले, उसके बाद शिक्षकों के साथ सभी विभागों में डिजिटल अटेंडेंस लागू करे। डीएम को सौंपे गए ज्ञापन में कहा गया है कि शिक्षकों को ईएल, सीएल, हाफ डे, प्रतिकर अवकाश दिया जाए। साथ ही 15 से 20 मिनट देर होने पर किसी तरह की कार्रवाई न करने की मांग समेत कई बिंदुओं की मांगे शामिल रहीं। विभाग ने 30 मिनट की दी है राहत: बेसिक शिक्षा विभाग ने शिक्षकों की मांग और दिक्कत को देखते हुए शिक्षकों, कर्मचारियों की ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करने के निर्धारित समय सुबह 7.45 से 08 बजे तक राहत दी है।

क्विक न्यूज

डे-एनयूएलएम के घटक समूह गठन के कार्य हेतु इच्छुक समूह की महिलायें करें आवेदन

कानपुर देहात। वित्तीय वर्ष 2024.-25 में जनपद कानपुर देहात की नगर निकाय अकबरपुर, पुखरायां एंव झींझक में दीनदयाल अन्त्योंदय राष्टीय शहरी आजीविका मिशन डे.एनयूएलएम के घटक समूह गठन का कार्य सीआरपी द्वारा कराया जाना है। उपरोक्त के संबंध में जानकारी देते हुए प्रभारी परियोजना अधिकारी, जिला नगरीय विकास अभिकरण ने बताया कि सीआरपी हेतु मुख्य रूप से पात्रता के बिन्दू यह है कि नगरीय क्षेत्र में महिला स्वंय सहायता समूह के सदस्य हो एंव उक्त समूह में किसी भी प्रकार से डिफाल्टर न हो। तथा समूह संचालन का लगभग दो वर्ष का अनुभव हो साथ ही पंचसूत्र के पालन की प्रतिबद्धता हो। सीआरपी हेतु आयु का आधार 20.45 वर्ष के मध्य है एंव शैक्षिक योग्यता न्यूनतम हाइस्कूल की परिक्षा उत्तीर्ण की हो साथ ही मोबाइल एप चलाने में निपुणता एंव डिजिटल साक्षरता की सामान्य जानकारी होना आवश्यक है। समूह गठन के कार्य हेतु इच्छुक महिलायें अपना आधार कार्ड, बैंक पासबुक, शैक्षिक योग्यता प्रमाण पत्र की छायाप्रति एंव 02 नवीनतम पासपोर्ट साइज फोटोग्राफके साथ जिला नगरीय विकास अभिकरण प्रथम तल जिलाधिकारी कार्यालय परिसर माती कानपुर देहात में आगामी 07 कार्य दिवसों में सम्पर्क स्थापित करे। समूह गठन हेतु चयनित महिलाओं सीआरपी को सूडा मुख्यालय द्वारा निर्धारित सीमान्तर्गत समूह गठन के कार्य हेतु भुगतान भी किया जायेगा।

अवैध अतिक्रमण हटवाया गया

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में उप जिलाधिकारी भोगनीपुर व क्षेत्राधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से ग्राम मुहम्मदपुर में ताजिया जुलूस मार्ग का निरीक्षण किया गया। ग्राम मुहम्मदपुर में ताजिया जुलूस मार्ग की साफ़सफाई के निर्देश ग्राम प्रधान को दिए गए। इसी ग्राम में प्रमोद कुमार की शिकायत पर सरकारी हैंडपंप पर से अवैध रूप से बांधे गए निजी मोटर निकलवाकर सरकारी हैंडपंप को अतिक्रमण मुक्त कराकर आम जनता के लिए सुलभ कराया गया। वही ग्राम बुधेड़ा तहसील भोगनीपुर गाटा संख्या 235 विवादित चकमार्ग जिस पर उसी ग्राम के दबंगों का अवैध कब्जा विगत 10 सालों से था, उसकी पैमाइश और निशानदेही कर मौके पर से अवैध अतिक्रमण हटवा दिया गया।

करंट लगने से बिजली मैकेनिक की मौत

फर्रुखाबाद। तार जोड़ते समय अचानक करंट लगने से बिजली मैकेनिक की हालत गंभीर हो गयी, उसे गंभीर हालत में लोहिया अस्पताल लाया गया जहाँ उसे मृत घोषित कर दिया गया। थाना मऊदरवाजा क्षेत्र के मोहल्ला बजरिया गड़रियन नगला निवासी 30 वर्षीय नन्हे कठेरिया पुत्र रामसनेही बिजली मैकेनिक का कार्य करता थाद मोहल्ले के राम आसरे के घर बिजली का काम कर रहा था द्य उसी दौरान बिजली का तार जोड़ते समय करंट लग गया।जिससे नन्हे की हालत गंभीर हो गयीद्य रामआसरे ने नन्हे के परिजनों को सूचना दी।आनन.फानन में परिजन लोहिया लेकर पंहुचे । जहां ईएमओ ड्यूटी पर तैनात डॉण् वैभव यादव ने मृत घोषित कर दिया। मामले की सूचना पुलिस को दी गयी।

अज्ञात शव की शिनाख्त

फतेहपुर। राधानगर थाना क्षेत्र के अंतर्गत शाह रोड घनसेनपुर मोड़ के पास 03 दिन पूर्व अज्ञात वाहन की चपेट में आ जाने से 28 वर्षीय अज्ञात युवक की मौके पर मौत हो गई थी, जिसकी शिनाख्त मृतक के परिजनों ने सदर अस्पताल में करते हुए बताया कि मृतक कमलेश पुत्र हीरालाल निवासी सैदाबाद दुर्गा मंदिर के पीछे 05 जुलाई को निमंत्रण से वापस आते समय हादसे का शिकार हो गया था। पूछने पर भाई श्रीपाल ने बताया कि कल वह भाई की फोटो लेकर राधानगर थाने पहुंचा, जहां पुलिस ने जानकारी दिया कि सदर अस्पताल में शव रखा है, जिस पर यहां आकर शव की शिनाख्त की है।

ट्रेन की चपेट में आकर युवक की मौत

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के बहरामपुर गांव निवासी स्व. श्यामलाल का पुत्र बसंतलाल सोनकर सोमवार की सुबह आठ बजे शौचक्रिया करने गया था। वापस लौटते समय जब वह लाइन पार करने लगा तभी ट्रेन की चपेट मे आ गया जिससे उसकी घटनास्थल पर मौत हो गई। पघटना की जानकारी पोस्टमार्टम हाउस में बहनोई रामधनी ने दी है।

प्रशासन ने जलस्तर बढ़ने पर प्रभावितों को सुरक्षित स्थानो, शिविरों में कराया पुनर्स्थापित

मेडिकल चेकअप करते हुए जरूरी औषधियां प्रदान की।

लखीमपुर खीरी। बाढ़ की विभीषिका, नदियों में बढ़ने वाले जलस्तर को लेकर डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल बेहद संजीदा है। बाढ़ प्रबंधन और जन.जीवन की सुरक्षा के दृष्टिगत डीएम ने सभी उप जिलाधिकारियो को न केवल विस्तृत दिशा निर्देश दिए है, बल्कि एसडीएम से नियमित संवाद कर अनुश्रवण भी कर रही है। उनके निर्देश के क्रम में बाढ से प्रभावी ढंग से निपटने, उनके प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से सभी एसडीएम अपने अपने क्षेत्र में भ्रमणशील रहे।

पलिया। शारदा नदी में जलस्तर बढ़ने से पलिया तहसील क्षेत्र अंतर्गत खीरी.पीलीभीत बॉर्डर पर बसे गांव गोविंद नगर कॉलोनी प्रभावित होने की सूचना मिली। इसपर क्रिक रेस्पॉन्ड करते हुए प्रभावित परिवारों को एसडीएम कार्तिकेय सिंह अपने राजस्व दलबल संग सुरक्षित स्थान पर बसाने के लिए पूरे मनोयोग से जुटे दिखाई दिए। सुरक्षित स्थानों पर शिफ्ट कराया। सभी प्रभावित परिवारों के खाद्यान्नए फ्लए पेयजल सहित अन्य ज़रूरी सामग्री की व्यवस्था प्रशासन ने कराई। जो लोग अपने घरों में सुरक्षित हैंए उन्हें तहसील प्रशासन कम्युनिटी किचन के जरिए लंच पैकेट का भी वितरण कर रहा है। एसडीएम ने किसी भी आकस्मिक जरूरत की पूर्ति के लिए क्षेत्रीय प्रधानए लेखपाल को जरूरी दिशा निर्देश दिए। प्रभावितों को चिकित्सीय सुविधाएं देने के उद्देश्य से चिकित्सीय टीम ने प्रभावित परिवारों का

सदर। सदर तहसील क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र बड़ागांवए धोबियाना और सिंधिया में ट्रैक्टर और नाव पर सवार होकर पहुंचे एसडीएम सदर अश्विनी कुमार सिंह, तहसीलदार सुशील प्रताप सिंह ने पीड़ितों का दर्द जाना। ग्रामीणों से संवाद कर हर संभव मदद के लिए आश्वस्त किया। क्षेत्रीय लेखपाल को बाढ़ से प्रभावित होने वाली फसल और घर का सर्वे करने के निर्देश दिए। प्रभावित परिवारों को सभी अनुमन्न सरकारी सहायता प्रदान की जाएगी। तहसील प्रशासन पूर्णतया तैयार है। ग्रामीणों की आवागमन हेतु प्रशासन की ओर से नाव भी लगाई गई है।

बाढ़ प्रभावित गांवो में पहुंचे एसडीएम कराया लंच पैकेट का वितरण

गोला। उप जिलाधिकारी विनोद कुमार गुप्ता ने गोला तहसील क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित गांव जोहरा गुजारा, पूजा गांव मुडिया, आषाढी, बेल्हा सिकटिहा, डंबल टांडा, बजेड़ा, रेवतीपुरवा, रूरा सुल्तानपुर करसोर का स्थलीय भ्रमण कर ग्रामीणों से संवाद किया। उन्हें निकटवर्ती बाढ़ चौकिया में शिफ्ट होने का अनुरोध किया। तहसील प्रशासन द्वारा पूजा गांव के मजरा मुड़िया, करसोर, रूरा सुल्तानपुर में कम्युनिटी किचन के जरिए लंच पैकेट वितरित किया। उनके आवागमन हेतु नाव भी लगाई गई। उन्होंने कहा कि प्रभावित परिवारों की सहायता के लिए प्रशासन पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इस दौरान बाढ़ प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भी पहुंचवाया। तहसील प्रशासन की ओर से लोगों के आवागमन हेतु नाव भी लगाई गई हैं।

धौरहरा। एसडीएम राजेश कुमार ने तहसील क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित गांव कैरातीपुरवाए परसाए रामलोक और रामलोक का स्थलीय निरीक्षण कर ग्रामीणों से संवाद किया। तहसील प्रशासन की ओर से तैयार कराए गए लंच पैकेट का वितरण किया। फ्लड डिवीजन के अफसरो को स्टेशन रहकर बाढ़ निरोधी कार्यों के मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। परेशान परिवारों को सतर्क रहने और सुरक्षित जगहों पर शिफ्ट करवाया। साथ ही प्रशासन की तरफसे हर संभव मदद का भरोसा दिया।

पुलिस ने बैंकों में अभियान चलाकर की संदिग्धों की तलाश

बैंक का निरीक्षण करते कोतवाल आलोक कुमार दुबे।

गुरसहायगंज (कन्नौज)। उच्चाधिकारियों के निर्देश पर कोतवाली पुलिस द्वारा आपराधिक घटनाओं की रोकथाम के लिए नगर की बैंकों में चेकिंग अभियान चलाते हुए संदिग्धों की तलाश में मौजूद लोगों से पूछताछ की गई। जिससे बैंक के अंदर व बाहर बेवजह खड़े लोगों में हड़कंप मच गया और इधर उधर खिसकते दिखाई दिये। सोमवार को नगर के मोहल्ला रामगंज स्थित भारतीय स्टेट बैंक एसएमई शाखा में प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार दुबे ने पुलिस बल के साथ पहुंचकर सीसीटीवी कैमरों एवं आगंतुक रजिस्टर चेक करने के बाद प्रबंधक एवं बैंक गार्ड से सुरक्षा के संबंध में जानकारी ली। इसके बाद जीटी रोड स्थित बैंक ऑफ इंडिया, फतेहगढ रोड स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा, तिर्वा रोड स्थित भारतीय स्टेट बैंक, आर्यावर्त ग्रामीण बैंक, सब्जी मंडी स्थित पंजाब नेशनल बैंक में पहुंच कर बैंक में मौजूद लोगों से पूछताछ कर संदिग्धों की तलाश की। इस दौरान उन्होंने उपभोक्ताओं से संदिग्ध व्यक्ति की सूचना देकर पुलिस प्रशासन का सहयोग करने की अपील की। इस दौरान उन्होनें बताया कि यह अभियान अपराधिक घटनाओं पर लगाम लगानें एवं बैंक उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए चलाया जा रहा है। इस दौरान कांस्टेवल सतेन्द्र सिंह, गगन चौधरी, विनय कुमार सहित महिला कांस्टेवल प्रियंका, विजय सिंह आदि मौजूद रहे।

तुलादान के बाद सांसद ने कहा कि क्षेत्रीय समस्याओं को लोकसभा में उठाया जायेगा

तुलादान में भाग लेते गठबंधन के नेता

मौदहा हमीरपुर। क्षेत्र में जनसंपर्क कर सभी का आभार जता रहे सपा सांसद का दल के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने नवीन गल्ला मंडी स्थित एक निजी आढ़त में तुला दान किया। मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए सांसद ने कहा कि क्षेत्र में समस्याओं के निदान हेतु संसद भवन में समस्याओं को गंभीरता से उठाया जायेगा। सपा के टिकट पर चुनाव लड़े नवनिर्वाचित सांसद अजेंद्र सिंह राजपूत संसदीय क्षेत्र भ्रमण के दौरान सोमवार को नगर के नवीन गल्ला मंडी पहुंचे जहां व्यक्तिगत आढ़त की दुकान पर नवनिर्वाचित सांसद का तुला दान कार्यक्रम आयोजित किया गया। तराजू के एक पलड़े में दशहरी आम रखकर तुला दान किया। इस दौरान सांसद के साथ पहुंचे सपा नेता पुष्पेन्द्र यादव ने कहा कि मौदहा सपाइयों के हृदय में बसता है क्योंकि यहां के लोगों ने एकजुट होकर सपा को समर्थन देकर अपना सांसद बनाया है। पूर्व मंत्री कुंवर बादशाह सिंह ने भाजपा को मिथ्यावादी कहा। अभी कोई भी कार्यकर्ता आराम से न बैठे जब तक उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री न बना दे।

इंडिया गठबंधन से भारी संख्या में कांग्रेसी, आम आदमी पार्टी तथा सपा के कार्यकर्ता भरी दोपहरी में पसीना बहाते नजर आए। सभा में पूर्व मंत्री बादशाह सिंह, जिलाध्यक्ष इदरीस खांन, सपा महासचिव मुन्नी लाल निषाद, पूर्व जिला पंचायत सदस्य रामबाबू यादव, पूर्व जिला सचिव मोहनबाबू, पूर्व जिला उपाध्यक्ष जावेद मेजर, ओमप्रकाश सोनकर वारसी, जुम्मन निजामी, बदरूद्दीन, घनश्याम साहू, रणबहादुर यादव, प्रभात यादव, गुलाब श्रीवास, पूर्व जिलाध्यक्ष कांग्रेस ओमप्रकाश शिवहरे, शिवशरण यादव कुरारा सहित सैकड़ों की तादाद में इंडिया गठबंधन के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मंदिर की विवादित भूमि पर कब्जे का विरोध करना पड़ा महंगा

फतेहपुर। मंदिर की विवादित भूमि का मुकदमा न्यायालय में विचाराधीन होने व एसडीएम के आदेश को धता बताते हुए दबंगों ने जमीन पर अवैध कब्जे का प्रयास किया। जिस पर पीड़ित ने विरोध दर्ज कराया तो दबंगों ने उसके साथ जमकर मारपीट की। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने एनसीआर दर्ज करके मेडिकल परीक्षण के लिए जिला अस्पताल भेजा, जहां पीड़ित ने पुलिस पर समुचित कार्रवाई न किए जाने का आरोप लगाया। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के असनी गांव निवासी सुनील कुमार गुप्ता पुत्र स्व. शारदा प्रसाद ने जिला अस्पताल में मेडिकल परीक्षण कराने के उपरांत बताया कि गांव में स्थित भूमि गाटा संख्या 610 पर प्राचीन राधा-कृष्ण मंदिर स्थापित है, यह भूमि विवादित है, जिसका मुकदमा न्यायालय सिविल जज जू.डि. में विचाराधीन है। पूर्व में शिव प्रसाद, अमन, विनोद, प्रमोद आदि ने अवैध कब्जे का प्रयास किया था।

नपाप संडीला के दो तिहाई सभासद भ्रष्टाचार को लेकर उबले

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते सभासदगण

संडीला (हरदोई)। नगर पालिका परिषद कार्यालय में व्याप्त कथित भ्रष्टाचार और मनमानी तथा सभासदों की पूर्ण उपेक्षा को लेकर दो तिहाई से अधिक सभासदों ने एसडीएम से मिलकर उन्हें ज्ञापन सौंपाए जिसमें सारे मामले की निषपक्ष और कड़ी जांच कराकर दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की है। नगर पालिका परिषद कार्यालय में बीते काफ़ी समय से सरकारी धन के बंदरबाट का खेल सुनुयोजित ढंग से चल रहा है। चाहे नगर पालिका परिषद ने आउटसोर्स कर्मियों की नियुक्ति का ठेका हो या नाला सफ़ाई अथवा अन्य निर्माण कार्यों का। नगर पालिका परिषद कार्यालय में एक आध चुनिंदा चेहरे है जिनको ही यह सारा कार्य दिया जाता है। आश्चर्य का विषय है कि इन ठेकेदारों में मात्र एक ठेकेदार ही ऐसा है जो चेयरमैनए विधायक तथा सांसद सभी का एक साथ खास है। मामला बिगड़ना तब शुरू हुआ जब नगर में नाला सफ़ाई के लिए भारी भरकम धनराशि खर्च किए जाने के बावजूद न तो सही तौर पर नाले साफ़ हुए और न ही अन्य निविदागत कार्य। इसका परिणाम यह हुआ कि वर्षा के शुरू होते ही नगर में जबरदस्त जलभराव हो गया तथा वर्षा का पानी लोगों के घरों तक में घुस गया और इसका ठीकरा जनता ने सभासदों के सिर पर फ़ोड़ना शुरू कर दिया जबकि संभवत: यह उत्तर प्रदेश की एकमात्र नगर पालिका हैं जहां अघोषित तौर से सभासदों के कोई अधिकार नहीं होते। यहां तक कि छोटे छोटे कर्मचारी भी उनकी पूरी तौर पर उपेक्षा करते हैं। यही नहीं इस नगर पालिका परिषद में यदि पिछले पांच छह साल की बजट पास करने की प्रक्रिया को देखा जाए तो यह अनूठी होगी क्योंकि प्रोसीडिंग बुक पर सारी कार्रवाई पहले लिख ली जाती है और बाद में एक सादे कागज़ पर सभासदों के हस्ताक्षर कराकर प्रोसीडिंग बुक में लगा दिया जाता है।

सभासदों को घोर उपेक्षा पर कोढ़ में खाज का काम नगर पालिका परिषद ने आउटसोर्सिंग कर्मियों के लिए बिना किसी सूचना टेंडर पास करने के प्रकरण में किया और आश्चर्य का विषय है कि यह टेंडर उसी ठेकेदार के पक्ष में बताया जा रहा है। सभासद कलाम, शीबा, शमीम अहमद, हाफ़िज़ मो. सज्जाद, जुबैर अंसारी, अजय द्विवेदी, अकील अहमद, राहुल, रूपन देवी, नूर निसां, मो. नसीम, निहाल अहमद, मधुरानी, मदन गोपाल कश्यप, मो. सिराज, शीलम तथा अमन प्रताप सिंह ने एसडीएम तान्या सिंह से भेंट की और उन्हें कथित रूप से आउटसोर्स कर्मियों की नियुक्ति के प्रयास और नाला सफ़ाई में हुए भ्रष्टाचार को लेकर ज्ञापन दिया। ज्ञापन देने के बाद अमन प्रताप सिंह तथा अन्य सभासदों ने बताया कि अब पानी सभासदों के सिर से ऊपर चला गया है। सभासदों की उपेक्षा और सरकारी धन के बंदरबाट को किसी भी दशा में बर्दाशत नहीं किया जाएगा और इसके लिए सभी प्रकार की लोकतांत्रिक ढंग से लड़ी जाएगी। उन्होंनें कहा कि उनकी प्रमुख मांग है कि नगर पालिका परिषद की निविदाओं के प्रकाशन ऐसे समाचार पत्रों में कराए जाएं जिनका व्यापक प्रचार प्रसार हो और इस लूट पर अंकुश लगाया जाए। नगर पालिका परिषद पर लगाए गए आरोपों के संबंध में अधिशासी अधिकारी विजेता गुप्ता से संपर्क किया गया तो उनका फ़ोन नहीं उठा जबकि चेयरमैन मो. रईस अंसारी के फ़ोन पर बताया गया कि वे सो रहे हैंए बाद में संपर्क करें।

फिल्मों में दिव्यांगों की नकारात्मक छवि भेदभाव को बढ़ावा देती है: उच्चतम न्यायालय

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि दृश्य मीडिया (विजुअल मीडिया) और फिल्मों में दिव्यांग व्यक्तियों की नकारात्मक छवि गढ़ना (स्टीरियोटाइपिंग) भेदभाव और असमानता को बढ़ावा देता है। शीर्ष अदालत ने कहा कि ऐसी भाषा जो दिव्यांग व्यक्तियों को अपमानित करती है, उन्हें और अधिक हाशिए पर धकेलती है तथा उनकी सामाजिक भागीदारी में आने वाली बाधाओं को बढ़ाती है, उस पर सावधानी से विचार किया जाना चाहिए। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि शब्द संस्थागत भेदभाव पैदा करते हैं और दिव्यांग व्यक्तियों के बारे में सामाजिक धारणा में अपंग और मंदबुद्धि जैसे शब्द निम्न दर्जे का अर्थ रखते हैं। शीर्ष अदालत ने दृश्य मीडिया में दिव्यांग व्यक्तियों के चित्रण की रूपरेखा पर कहा कि वे नकारात्मक आत्म-छवि में योगदान करते हैं और समाज में भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण और प्रथाओं को कायम रखते हैं। उन्होंने कहा, ऐसी भाषा जो दिव्यांगता को वैयक्तिकृत करती है और अक्षम करने वाली सामाजिक बाधाओं (उदाहरण के लिए पीड़ित, पीड़ा जैसे शब्द) को नजरअंदाज करती है, उससे बचा जाना चाहिए या उसे सामाजिक मानक के विपरीत भाषा के रूप में पर्याप्त रूप से चिह्नित किया जाना चाहिए। यह फैसला निपुण मल्होत्रा द्वारा दायर याचिका पर दिया गया। मल्होत्रा ने कहा था कि हिंदी फिल्म आंख मिचौली में दिव्यांग जन के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली पीठ ने फैसला सुनाते हुए कहा, शब्द संस्थागत भेदभाव पैदा करते हैं और दिव्यांग लोगों के बारे में अपंग और मंदबुद्धि जैसे शब्द सामाजिक धारणाओं में निचले दर्जे के समझे जाते हैं। पीठ ने कई दिशानिर्देश तय करते हुए कहा कि केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) को फिल्म दिखाने की अनुमति देने से पहले विशेषज्ञों की राय लेनी चाहिए। इसमें कहा गया है, दृश्य मीडिया को दिव्यांग व्यक्तियों की विविध वास्तविकताओं को चित्रित करने का प्रयास करना चाहिए। उसे न केवल उनकी चुनौतियों, बल्कि सफलताओं, प्रतिभाओं और समाज में उनके योगदान को भी प्रदर्शित करना चाहिए। मिथकों के आधार पर न तो उनका मजाक उड़ाया जाना चाहिए और न ही उन्हें असाधारण के रूप में पेश किया जाना चाहिए।

मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों के वितरण पर राष्ट्रीय नीति तैयार करने का काम अंतिम चरण में: केंद्र

नई दिल्ली (भाषा)। केंद्र सरकार ने सोमवार को उच्चतम न्यायालय को अवगत कराया कि स्कूल जाने वाली किशोरियों को मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों के वितरण पर राष्ट्रीय नीति तैयार करने का काम अंतिम चरण में है। प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला की पीठ ने केंद्र की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) ऐश्वर्या भाटी की दलीलों का संज्ञान लिया और संबंधित नीति तैयार करने के लिए दो महीने का समय देने का उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया। शीर्ष अदालत कांग्रेस नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता जया ठाकुर की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें उन्होंने केंद्र और राज्यों को छठी से बारहवीं कक्षा की छात्राओं को मुफ्त सैनिटरी पैड उपलब्ध कराने तथा सभी सरकारी और आवासीय विद्यालयों में अलग महिला शौचालय की सुविधा सुनिश्चित करने का निर्देश देने का अनुरोध किया है। एएसजी ने कहा कि इस मुद्दे पर राष्ट्रीय नीति तैयार करने का काम अंतिम चरण में है और दो महीने का समय और दिया जा सकता है। पीठ ने कहा, हम इस मामले को सितंबर के पहले सोमवार को सूचीबद्ध करेंगे। याचिका में विद्यालयों में गरीब पृष्ठभूमि की किशोरियों के सामने आने वाली कठिनाइयों को उजागर किया गया है। केंद्र ने पहले कहा था कि वह 10 अप्रैल, 2023 और छह नवंबर, 2023 के आदेशों के अनुसार स्कूल जाने वाली लड़कियों को मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों के वितरण पर एक राष्ट्रीय नीति बनाने के लिए सभी आवश्यक तथ्यों को एकत्र करने की प्रक्रिया में है। शीर्ष अदालत ने केंद्र को देश भर के सभी सरकारी सहायता प्राप्त और आवासीय विद्यालयों में छात्राओं की संख्या के अनुरूप शौचालय बनाने के लिए एक राष्ट्रीय मॉडल तैयार करने का निर्देश दिया था। न्यायालय ने समान प्रक्रिया पर जोर देते हुए केंद्र सरकार से राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली छात्राओं को सैनिटरी पैड के वितरण के लिए तैयार की गई नीति के बारे में भी पूछा। पिछली सुनवाई के दौरान केंद्र ने शीर्ष अदालत को सूचित किया था कि स्कूल जाने वाली लड़कियों को मुफ्त में सैनिटरी पैड के वितरण के लिए एक राष्ट्रीय नीति का मसौदा तैयार किया गया है और हितधारकों से उनकी टिप्पणियां मांगी गई है। पीठ ने 10 अप्रैल को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सचिव को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के साथ समन्वय करने तथा राष्ट्रीय नीति तैयार करने के लिए प्रासंगिक आंकड़े एकत्र करने के वास्ते नोडल अधिकारी नियुक्त किया था। याचिका में कहा गया है कि 11 से 18 वर्ष की आयु के बीच की गरीब पृष्ठभूमि की लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जबकि शिक्षा का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21ए के तहत एक संवैधानिक अधिकार है।

घर खरीदारों केसाथ धोखाधड़ी हो रही, समान खरीदार-बिल्डर समझौते की जरूरत : न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि देश में घर खरीदारों के साथ हो रही धोखाधड़ी को लेकर बिल्डर-खरीदार के बीच समझौतों में एकरूपता लाने की आवश्यकता है। न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा, खरीदारों के साथ बिल्डर धोखाधड़ी कर रहे हैं और यही कारण है कि अब एकरूपता लाने की जरूरत है। शीर्ष अदालत, वकील अश्विनी उपाध्याय द्वारा 2021 में दायर एक जनहित याचिका पर सुनवाई कर रही है। याचिका में कहा गया है कि पारदर्शिता एवं निष्पक्षता लाने तथा बिल्डरों और एजेंटों को अनुचित एवं गलत कारोबारी गतिविधियों में संलिप्त होने से रोकने के लिए एक मॉडल समझौता की जरूरत है। न्यायमित्र के रूप में न्यायालय को सहयोग कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता देवाशीष भरूखा ने पीठ से कहा कि मसौदा बिल्डर-खरीदार समझौतों के साथ एक अंतिम स्थिति रिपोर्ट रिकॉर्ड पर लाया गया है। यह भी दलील दी गई कि राज्यों के सुझाव हासिल हुए और उन्हें सम्मिलित किया गया।

रिश्वत लेने के आरोप में मंडल रेल प्रबंधक सहित पांच रेलवे अधिकारी पकड़े गए

नई दिल्ली (भाषा)। भारतीय रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों ने रिश्वतखोरी के आरोप में दक्षिण मध्य रेलवे के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) समेत पांच रेलवे अधिकारियों की गिरफ्तारी के कुछ दिनों बाद सोमवार को इस घटना को शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण बताया। सीबीआई ने आरोपियों को पांच जुलाई, 2024 को गिरफ्तार किया। इन पर विभिन्न निविदाओं के आवंटन, आवंटित कार्यों के निष्पादन और बिल के शीघ्र निस्तारण के लिए कथित रूप से भारी रिश्वत लेने का आरोप था। दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी (सीपीआरओ) ने बताया कि मामले की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) कर रही है। डीआरएम विनीत सिंह के अलावा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों, वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक कुंडा प्रदीप बाबू और वरिष्ठ मंडल इंजीनियर यू अक्की रेड्डी को भी गिरफ्तार किया गया। सीबीआई ने एक बयान मे बताया कि संघीय एजेंसी ने एक गुप्त सूचना के आधार पर सिंह द्वारा रिश्वत के रूप में लिए गए आभूषणों की सूची तैयार की और चार जुलाई तथा पांच जुलाई, 2024 को उनके आवासीय परिसर में तलाशी ली। इसमें एक हीरे जड़ित हार और हीरे जड़ित एक जोड़ी कर्णफूल बरामद किए गए। बयान के मुताबिक अन्य वस्तुओं के बारे में पूछे जाने पर, विनीत सिंह ने बताया कि उन्होंने उक्त वस्तु को मुख्य शयनकक्ष से सटे एक कमरे से जुड़े शौचालय के वॉशबेसिन पेडस्टल के एक हिस्से के पीछे छिपाकर रखा और उन्होंने वह स्थान सभी उपस्थित लोगों को दिखाया, जहां उन्होंने वह वस्तु छिपाई थी। अधिकारियों ने बरामद वस्तुओं को जब्त कर लिया। मौजूदा समय में एक मंडल में पदस्थापित डीआरएम ने कहा, डीआरएम स्तर का एक रेलवे अधिकारी मंडल में कई करोड़ रुपए की परियोजनाओं को संभालता है। इसके अलावा, उन्हें बहुत अच्छा वेतन और भत्ते मिलते हैं। मैं यह समझने में असफल रहा कि उसे इस तरह के भ्रष्ट आचरण में लिप्त होने के लिए किस बात ने मजबूर किया। एक अन्य डीआरएम ने बताया, रेलवे के इतिहास में ऐसा कम ही होता है कि डीआरएम को ठेके देने के लिए रिश्वत मांगने के आरोप में गिरफ्तार किया गया हो। मैं इसे शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण कहूंगा। इस बीच, जनवरी 2024 में सिंह के संबलपुर रेल मंडल से गुंटुकुल में अचानक तबादले पर रेलवे कर्मचारी संघ हतप्रभ हैं। नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन रेलवेमैन (एनएफआईआर) के महासचिव एम राघवैया ने कहा, गिरफ्तार डीआरएम विनीत सिंह को जनवरी 2024 में संबलपुर रेल मंडल (ईस्ट कोस्ट ज़ोन) से गुंटकल मंडल (दक्षिण मध्य रेलवे) में स्थानांतरित कर दिया गया था। यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि सिंह ने मनीष अग्रवाल की जगह ली, जिन्होंने गुंटकल में केवल छह महीने पूरे किए थे। उन्होंने एक साल भी पूरा नहीं किया था। मुझे नहीं पता कि इस अचानक स्थानांतरण के लिए क्या मजबूरी थी?

कोली को बरी करने के आदेश के खिलाफ सीबीआई की याचिका सुनेगा न्यायालय

नई दिल्ली (भाषा) उच्चतम न्यायालय ने 2006 के सनसनीखेज निठारी हत्याकांड में सुरेंद्र कोली को बरी करने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती देने वाली सीबीआई की याचिका पर सुनवाई के लिए सोमवार को सहमति जताई। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ ने उच्च न्यायालय के 16 अक्टूबर, 2023 के फैसले के खिलाफ केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की अलग-अलग याचिकाओं पर कोली से जवाब मांगा। शीर्ष अदालत ने मामले में कोली को बरी करने के उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाले एक पीड़ित के पिता की याचिका पर सुनवाई के लिए मई में सहमति जताई थी। इस मामले में मोहिंदर सिंह पंढेर को सत्र अदालत ने बरी कर दिया था जबकि कोली को 28 सितंबर 2010 को मौत की सजा सुनाई गई थी। पीठ ने सोमवार को कहा कि सीबीआई की याचिकाएं पीड़ित के पिता की उक्त याचिका के साथ सुनवाई के लिए आएंगी। सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सीबीआई की ओर से कहा कि कोली सीरियल किलर है जिसने छोटी बच्चियों को फुसलाया और उनकी हत्या कर दी। घटना को जघन्य करार देते हुए मेहता ने कहा कि मामले में बहशीपन के आरोप हैं। उच्च न्यायालय ने कोली और उसके मालिक पंढेर को बरी करते हुए कहा कि अभियोजन पक्ष संदेह से परे मामले में दोष साबित करने में विफल रहा।पंढेर और कोली पर बच्चियों के साथ दुष्कर्म करने और उनकी हत्या करने के आरोप था। उन्हें मौत की सजा सुनाई गई थी लेकिन उच्च न्यायालय ने उन्हें बरी कर दिया था।पंढेर और कोली के खिलाफ 2007 में कुल 19 मामले दर्ज किए गए थे। राष्ट्रीय राजधानी से लगे नोएडा के निठारी में 29 दिसंबर, 2006 को एक घर के पीछे नाले से आठ बच्चों के कंकाल के अवशेष मिलने से सनसनी फैल गई थी। घर के आसपास इलाके में नालों की और खुदाई तथा तलाशी में और कंकाल मिले। इनमें से अधिकतर कंकाल उन गरीब बच्चों और लड़कियों के थे जो इलाके से लापता थे। सीबीआई ने 10 दिन के अंदर मामले में जांच संभाली थी और उसकी तलाशी में और कंकाल बरामद हुए थे।

बब्बर खालसा के सदस्य ने पुलिस से भागने की कोशिश की, गोली लगने से हुआ घायल

चंडीगढ़ (भाषा)। प्रतिबंधित खालिस्तानी संगठन खालसा इंटरनेशनल का एक संदिग्ध सदस्य जालंधर में हिरासत से भागने की कोशिश के दौरान पुलिस की गोलीबारी में घायल हो गया। पंजाब के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने सोमवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सिमरनजीत सिंह उर्फ बबलू तीन अप्रैल को एसबीएस नगर में पूर्व आतंकवादी रत्तनदीप सिंह की हत्या में आरोपी है। उसे जालंधर की देओल नगर कॉलोनी में रविवार देर रात एक विशेष जांच के दौरान गिरफ्तार किया गया था। बबलू की गिरफ्तारी के कुछ घंटे बाद एक पुलिस दल उसे जालंधर-नकोदर मार्ग पर वडाला के निकट एक जगह लेकर जा रहा था जहां उसने रत्तनदीप सिंह की हत्या में इस्तेमाल संदिग्ध पिस्तौल को छिपाने का दावा किया था। डीजीपी ने कहा, वहां पहुंचने पर आरोपी ने एक पुलिस अधिकारी को धक्का देकर भागने की कोशिश जिसके बाद पुलिस दल ने गोली चलाई और आरोपी घायल हो गया। उन्होंने कहा कि आरोपी को पास के अस्पताल ले जाया गया। बबलू के दोनों पैरों में गोली लगी है। पुलिस ने बबलू के पास से दो अत्याधुनिक हथियार बरामद किए हैं। यादव के अनुसार प्रारंभिक जांच से पता चला है कि बबलू पाकिस्तानी आतंकवादी हरविंदर रिंदा और अमेरिकी नागरिक गोपी नवनशहरिया के निर्देश पर काम कर रहा था और उन्होंने उसे तथा जसप्रीत सिंह उर्फ जस्सी कुलाम नामक एक अन्य हमलावर को रत्तनदीप सिंह की हत्या का काम सौंपा था। जस्सी अपराध को अंजाम देने के बाद विदेश भागने में सफल रहा। पुलिस ने कहा कि बबलू खूंखार अपराधी है और उसके खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास के अनेक मामले दर्ज हैं। वह अमृतसर में कथित रूप से एक सहायक उप-निरीक्षक की हत्या में शामिल था।

पंजाब के बटाला में दो समूहों के बीच गोलीबारी में चार लोगों की मौत

चंडीगढ़। पंजाब के गुरदासपुर जिले में दो समूहों के बीच पुरानी रंजिश के चलते हुई गोलीबारी में चार लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि घटना रविवार रात बटाला के श्री हरगोबिंदपुर के लिधांवाला चौक पर हुई। दोनों समूहों में कुल 13 लोग थे और सभी विठवान गांव के रहने वाले है। बटाला के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) अश्विनी गोटयाल ने बताया कि गोलीबारी में दोनों समूहों के दो-दो लोगों की मौत हुई है। उन्होंने बताया कि मृतकों की पहचान बलराज सिंह, शमशेर सिंह, बलजीत सिंह और निर्मल सिंह के तौर पर हुई है। पुलिस ने बताया कि घटना में आठ लोग घायल हुए है और उन्हे अमृतसर के एक अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। पुलिस के मुताबिक सभी घायल खतरे से बाहर है। पुलिस ने बताया कि घटना के दौरान कई राउंड गोलियां चलाई गईं और मौके से 30 कारतूस और खोखे मिले है।

पुलिस ने अदालत में कहा-पिता ने बेटे को भागने को कहा

बीएमडब्ल्यू हिट-एंड-रन मामला

मुंबई (भाषा)। मुंबई पुलिस ने सोमवार को कहा कि बीएमडब्ल्यू हिट-एंड-रन मामले में फरार मुख्य आरोपी मिहिर शाह के पिता राजेश शाह ने दुर्घटना के बाद उसे मौके से भागने को कहा था। इस हादसे में एक महिला की मौत हो गई और उसका पति घायल हो गया।

पुलिस ने अदालत में कहा कि राजेश ने अपने ड्राइवर राजऋषि बिदावत को घटना की जिम्मेदारी लेने को कहा जो हादसे के समय कार में था।

पुलिस ने अदालत में सीसीटीवी फुटेज भी पेश किए जिनमें कार से कावेरी नखवा को डेढ़ किलोमीटर तक घसीटते हुए देखा गया। इन तस्वीरों में मिहिर शाह और सह-आरोपी राजऋषि बिदावत को बोनट से महिला को खींचकर हटाते, उसे सड़क पर रखते और गाड़ी को उलटी दिशा में चलाते समय उसे कुचलते हुए देखा जा सकता है। कावेरी रविवार सुबह करीब साढ़े पांच बजे एनी बेसेंट रोड पर अपने पति प्रदीप के साथ दुपहिया वाहन से जा रही थीं, तभी बीएमडब्ल्यू कार के चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया और उन्हें पीछे से टक्कर मार दी। हादसे के बाद आरोपी बांद्रा-वर्ली सी लिंक की ओर भागने लगे। उन्होंने कार को बांद्रा के काला नगर के पास छोड़ा और वहां से भाग गए। पालघर जिले के शिवसेना नेता राजेश शाह और उनके चालक बिदावत को रविवार को गिरफ्तार कर लिया गया। बिदावत घटना के समय कार में ही था। मुख्य आरोपी मिहिर शाह के साथ ही राजेश शाह और बिदावत पर गैर इरादतन हत्या समेत अनेक प्रावधानों के तहत आरोप हैं।राजेश शाह और बिदावत को मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट (सीवरी) एसपी भोसले की अदालत में पेश किया गया जिन्होंने राजेश शाह को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया और बिदावत को एक दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। अदालत ने कहा कि भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 105 (गैर इरादतन हत्या) राजेश शाह पर लागू नहीं होती। इसके बाद उन्हें न्यायिक हिरासत में भेजा गया। सुनवाई के दौरान पुलिस ने अदालत में कहा कि मिहिर शाह ने घटना के बाद अपने पिता को फोन किया और राजेश शाह ने बेटे को भाग जाने को कहा। पुलिस ने अदालत से कहा कि राजेश शाह ने मिहिर शाह से यह भी कहा कि बिदावत को ड्राइवर सीट पर बैठने के लिए कहे। पुलिस ने रिमांड सुनवाई में कहा कि राजेश अपने बेटे के ठिकाने के बारे में जानते हैं और इसलिए उनसे पूछताछ जरूरी है। बचाव पक्ष की ओर से वकील सुधीर भारद्वाज ने कहा कि पुलिस के पास सीसीटीवी फुटेज हैं लेकिन रिमांड में इसका उल्लेख नहीं किया गया। भारद्वाज ने दलील दी कि यदि बेटा लापता है तो क्या पिता को गिरफ्तार किया जा सकता है? बचाव पक्ष ने कहा कि किसी बेटे के लिए दहशत की स्थिति में अपने पिता को फोन करना सामान्य नहीं है। भारद्वाज ने कहा कि राजेश के मामले में गैर इरादतन हत्या का आरोप लागू नहीं होता क्योंकि वह कार नहीं चला रहे थे और ना ही मौके पर मौजूद थे। उन्होंने यह भी कहा कि बिदावत की हिरासत जरूरी नहीं है क्योंकि उसके पास से कुछ नहीं मिला। राजेश शाह को न्यायिक हिरासत में भेजे जाने के बाद उनके वकील ने जमानत के लिए आवेदन किया, जिसे अदालत ने मंजूर कर लिया। इस बीच,पुलिस ने मिहिर शाह को गिरफ्तार करने के लिए कई दल बनाए हैं। मुख्य आरोपी मिहिर को विदेश भागने से रोकने के लिए लुक आउट सर्कुलर (एलओसी) भी जारी किया गया है।

पेज 1 का शेष

परीक्षा की...

तक पता लगाई गई उनकी संख्या के बारे में भी जानकारी मांगी। नीट-यूजी की शुचिता सुनिश्चित करने पर चिंता व्यक्त करते हुए सर्वोच्च अदालत ने कहा कि सरकार के लिए जानेमाने विशेषज्ञों की एक बहु-विषयक टीम गठित करने पर विचार करना आवश्यक होगा ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। पीठ ने सुनवाई के दौरान कहा कि यदि मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी 2024 की शुचिता नष्ट हो गई है और यदि इसके लीक प्रश्नपत्र को सोशल मीडिया के जरिए प्रसारित किया गया है तो दोबारा परीक्षा कराने का आदेश देना होगा। उसने कहा कि यदि प्रश्नपत्र लीक टेलीग्राम, व्हाट्सऐप और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से हो रहा है, तो यह जंगल में आग की तरह फैलेगा। पीठ ने कहा, यदि परीक्षा की शुचिता नष्ट हो जाती है, तो दोबारा परीक्षा का आदेश देना होगा। यदि हम दोषियों की पहचान करने में असमर्थ हैं, तो दोबारा परीक्षा का आदेश देना होगा। पीठ ने कहा, जो हुआ, हमें उसे नकारना नहीं चाहिए। साथ ही पीठ ने कहा, यह मान लें कि सरकार परीक्षा रद्द नहीं करेगी, तो वह प्रश्नपत्र लीक के लाभार्थियों की पहचान करने के लिए क्या करेगी? उच्चतम न्यायालय विवादों से घिरी मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी 2024 से संबंधित 30 से अधिक याचिकाओं पर सोमवार को सुनवाई कर रहा था। इनमें पांच मई को हुई परीक्षा में अनियमितताओं और कदाचार का आरोप लगाने वाली और परीक्षा नए सिरे से आयोजित करने का निर्देश देने के अनुरोध वाली याचिकाएं भी शामिल हैं। पीठ ने कहा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रश्नपत्र लीक हुआ है। हम लीक की सीमा का पता लगा रहे हैं। पीठ ने कहा कि इसमें कुछ चेतावनी के संकेत हैं क्योंकि 67 उम्मीदवारों ने 720 में से 720 अंक प्राप्त किए हैं। पीठ ने कहा, पिछले वर्षों में यह अनुपात बहुत कम था। शीर्ष अदालत ने कहा कि वह जानना चाहती है कि प्रश्नपत्र लीक से कितने लोगों को लाभ हुआ और केंद्र ने उनके खिलाफ क्या कार्रवाई की। पीठ ने सवाल किया, गलत काम करने वाले कितने लोगों के परिणाम रोके गए हैं और हम ऐसे लाभार्थियों का भौगोलिक वितरण जानना चाहते हैं। पीठ राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातक (नीट-यूजी) में सफल गुजरात के 50 से अधिक अभ्यर्थियों की एक अलग याचिका पर भी सुनवाई कर रही है, जिसमें केंद्र और राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी को विवादित परीक्षा रद्द करने से रोकने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। एक याचिकाकर्ता का प्रतिनिधित्व करने वाले वकीलों ने दलीलें शुरू करते हुए कहा कि वे पेपर लीक, ओएमआर शीट में हेरफेर, अभ्यर्थी की जगह किसी अन्य के परीक्षा देने और धोखाधड़ी जैसे आधारों पर परीक्षा रद्द करने का अनुरोध कर रहे हैं। केंद्र और राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी ने हाल में न्यायालय में कहा था कि गोपनीयता भंग होने के किसी साक्ष्य के बिना इस परीक्षा को रद्द करने का बेहद प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा क्योंकि इससे लाखों ईमानदार अभ्यर्थियों पर गंभीर असर पड़ सकता है। एनटीए और केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय पांच मई को आयोजित परीक्षा में प्रश्नपत्र लीक से लेकर अभ्यर्थी की जगह किसी अन्य के परीक्षा देने तक बड़े पैमाने पर कथित अनियमितताओं को लेकर मीडिया में बहस और छात्रों और राजनीतिक दलों के विरोध के केंद्र में रहे हैं। देश भर के सरकारी और निजी संस्थानों में एमबीबीएस, बीडीएस, आयुष और अन्य संबंधित पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए एनटीए द्वारा नीट-यूजी परीक्षा आयोजित की जाती है। पेपर लीक सहित अनियमितताओं के आरोपों के कारण कई शहरों में विरोध प्रदर्शन हुए और प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक दलों के बीच तकरार हुई। नीट-यूजी 2024 में कुल 67 छात्रों ने 720 अंक प्राप्त किए, जो एनटीए के इतिहास में अभूतपूर्व है। इस सूची में हरियाणा के एक केंद्र के छह छात्र शामिल हैं, जहां परीक्षा में अनियमितताओं को लेकर संदेह उत्पन्न हुआ। यह आरोप लगाया गया है कि कृपांक के चलते 67 छात्रों को शीर्ष रैंक प्राप्त करने में मदद मिली। एनटीए द्वारा एक जुलाई को संशोधित परिणाम घोषित किए जाने के बाद, नीट-यूजी में शीर्ष रैंक वाले अभ्यर्थियों की संख्या 67 से घटकर 61 हो गई।

मोदी-पुतिन...

के लिए निजी रात्रिभोज देंगे। मोदी यहां राष्ट्रपति पुतिन के साथ 22वें भारत-रूस वार्षिक सम्मेलन की सह-अध्यक्षता करेंगे और भारतीय समुदायों के सदस्यों के साथ संवाद भी करेंगे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्स पर लिखा, प्रधानमंत्री दोनों देशों के बीच विशेष साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ महत्वपूर्ण बातचीत करेंगे। वह रूस में भारतीय समुदाय के साथ भी संवाद करेंगे। मॉस्को पहुंचने पर भारतीय प्रधानमंत्री को हवाई अड्डे पर गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। शहर में कार्लटन होटल में भारतीय मूल के लोगों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और कुछ रूसी कलाकारों ने हिंदी गीतों की धुन पर नृत्य कर उनका स्वागत किया। मोदी ने भारत से रवाना होने से पहले अपने बयान में कहा कि भारत एक शांतिपूर्ण और स्थिर क्षेत्र के लिए सहायक की भूमिका निभाना चाहता है। रूस में नौ जुलाई को अपनी यात्रा पूरी करने के बाद मोदी ऑस्ट्रिया के लिए रवाना होंगे। यह, विगत 40 साल से अधिक समय में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की वहां की पहली यात्रा होगी। मोदी और पुतिन मंगलवार को 22वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन में व्यापार, ऊर्जा और रक्षा सहित विविध क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को और विस्तार देने के तरीकों पर विचार-विमर्श कर सकते हैं। मोदी-पुतिन की शिखर वार्ता में यूक्रेन संघर्ष भी प्रमुख मुद्दा रह सकता है। मोदी ने रूस रवाना होने से पहले एक बयान में कहा, भारत और रूस के बीच विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी पिछले 10 वर्षों में और बढ़ी है, जिसमें ऊर्जा, सुरक्षा, व्यापार, निवेश, स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृति, पर्यटन और लोगों से लोगों का संपर्क आदि क्षेत्र शामिल हैं। उन्होंने कहा, मैं, मेरे मित्र राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ द्विपक्षीय सहयोग के सभी पहलुओं की समीक्षा करने और विभिन्न क्षेत्रीय एवं वैश्विक मामलों पर दृष्टिकोण साझा करने को लेकर आशान्वित हूं। उन्होंने कहा, हम शांतिपूर्ण एवं स्थिर क्षेत्र के लिए सहयोगात्मक भूमिका निभाना चाहते हैं। रूस के साथ अपनी विशिष्ट रणनीतिक साझेदारी का भारत पुरजोर बचाव करता रहा है और यूक्रेन संघर्ष के बावजूद संबंधों में गर्मजोशी बनी रही है। रूस के साथ अपनी मजबूत दोस्ती को इंगित करते हुए भारत ने अभी तक यूक्रेन पर रूस के आक्रमण की निंदा नहीं की है। भारत यह कहता रहा है कि संकट को कूटनीति और बातचीत के माध्यम से हल किया जाना चाहिए। मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, अगले तीन दिन, मैं रूस और ऑस्ट्रिया में रहूंगा। ये दौरे इन देशों के साथ संबंधों को गहरा करने का एक शानदार अवसर होंगे, जिनके साथ भारत की दोस्ती समय की कसौटी पर खरी उतरी है। मोदी की मॉस्को यात्रा से पहले रूस के प्रवक्ता दमित्री पेस्कोव ने कहा कि एजेंडा व्यापक होगा। उन्होंने कहा, यह एक आधिकारिक यात्रा होगी और हमें उम्मीद है कि दोनों राष्ट्र प्रमुख अनौपचारिक रूप से भी बातचीत कर पाएंगे। बातचीत में मोदी आग्रह कर सकते हैं कि रूस अपनी सेना के सहायता कर्मी के तौर पर भारतीयों की भर्ती करना बंद करे और अब भी रूस की सेना में काम कर रहे लोगों की वापसी सुनिश्चित करे।

मुंबई पर...

मद्देनजर बीएमसी ने लोगों से अफवाहों पर ध्यान नहीं देने और आपातकालीन मदद के लिए उसके हेल्पलाइन नंबर पर फोन करने की अपील की है। उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विधानसभा में कहा कि जब भारी बारिश के साथ-साथ ज्वार (समुद्र में ऊंची लहरें उठना) आता है तो मुंबई में बाढ़ आ जाती है। अधिकारियों के मुताबिक, दक्षिण मुंबई में छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) और पड़ोसी ठाणे के बीच मध्य रेलवे (सीआर) के मुख्य गलियारे की फास्ट लाइन पर विभिन्न स्थानों पर जलभराव के कारण कुछ घंटों के लिए ट्रेन सेवाएं निलंबित कर दी गईं।

संदेशखालि...

गिरफ्तारियां कब की गईं? उसने कहा, किसी को बचाने में राज्य की रूचि क्यों होनी चाहिए? उसने कहा कि पिछली सुनवाई में जब शीर्ष अदालत ने यह विशेष प्रश्न पूछा था तो राज्य सरकार के वकील ने कहा था कि मामले को स्थगित किया जाए। पीठ ने राज्य सरकार द्वारा दायर याचिका खारिज कर दी और स्पष्ट किया कि उच्च न्यायालय के आदेश में की गई कोई टिप्पणी जांच में सीबीआई को प्रभावित नहीं करेगी। पीठ ने कहा, धन्यवाद। याचिका खारिज की जाती है। शीर्ष अदालत, कलकत्ता उच्च न्यायालय के 10 अप्रैल के आदेश को चुनौती देने वाली राज्य सरकार की याचिका पर सुनवाई कर रही थी।

राष्ट्रपति ने पर्यावरण संरक्षण पर बल दिया

भाषा। पुरी (ओडिशा)

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने देश में हाल में भीषण गर्मी पड़ने और दुनिया भर में मौसम के चरम पर रहने की लगातार हो रही घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए लोगों से पर्यावरण की रक्षा के लिए छोटे और स्थानीय स्तर पर कदम उठाने का सोमवार को आग्रह किया ताकि भविष्य को बेहतर बनाया जा सके। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी एक बयान में कहा गया कि वार्षिक रथ यात्रा में शामिल होने के एक दिन बाद मुर्मू ने पवित्र शहर पुरी के समुद्र तट पर कुछ समय बिताया। उन्होंने बाद में प्रकृति के साथ निकटता के अनुभव के बारे में अपने विचार लिखे मुर्मू ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि प्रदूषण के कारण महासागरों और वनस्पतियों एवं जीवों की समृद्ध विविधता को भारी नुकसान हुआ है, लेकिन प्रकृति की गोद में रहने वाले लोगों ने उन परंपराओं को कायम रखा है जो हमारा मार्गदर्शन कर सकती हैं। उन्होंने पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के उपाय सुझाते हुए कहा, उदाहरण के लिए, तटीय इलाकों में रहने वाले लोग समुद्र की लहरों और हवाओं की भाषा समझते हैं। वे अपने पूर्वजों का अनुसरण करते हुए समुद्र को भगवान के रूप में पूजते हैं। राष्ट्रपति छह जुलाई को चार दिवसीय दौरे पर ओडिशा आईं। उन्होंने कहा, ऐसे स्थान हैं जो हमें जीवन के तत्व के करीब लाते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि हम प्रकृति का हिस्सा हैं। पहाड़, जंगल, नदियां और समुद्र तट हमारे भीतर की किसी गहरी चीज को आकर्षित करते हैं। मैं आज जब समुद्र के किनारे टहल रही थी तो मुझे आसपास के वातावरण- हल्के हल्के बहती हवा, लहरों के शोर और पानी के विशाल विस्तार के साथ एक जुड़ाव महसूस हुआ। यह ध्यान करने जैसा अनुभव था। मुर्मू ने कहा कि इससे मुझे गहन आंतरिक शांति मिली, जो मुझे कल महाप्रभु श्री जगन्नाथजी के दर्शन करने पर भी महसूस हुई थी। ....और मैं अकेली नहीं हूं जिसे ऐसा एहसास हुआ है। जब हम किसी ऐसी चीज से रू-ब-रू होते हैं जो हमसे बहुत विशाल हो, जो हमारे जीवन को बरकरार रखने में मदद करे और जो हमारे जीवन को अर्थपूर्ण बनाएं तो हम सब इसी तरह महसूस कर सकते हैं। राष्ट्रपति ने समुद्र तट पर टहलते हुए अपनी तस्वीरें साझा की तथा कहा कि रोजमर्रा की भागदौड़ में लोग प्रकृति के साथ अपना संबंध खो देते हैं। मुर्मू ने कहा, मानव जाति का मानना है कि उसने प्रकृति पर कब्जा कर लिया है और वह अपने अल्पकालिक लाभों के लिए इसका दोहन कर रही है। इसका नतीजा सबके सामने है। इस गर्मी में भारत के कई हिस्सों को भीषण लू का सामना करना पड़ा। हाल के वर्षों में दुनिया भर में मौसम के चरम पर रहने की घटनाएं अधिक हो गई हैं। आने वाले दशकों में स्थिति और भी बदतर होने की आशंका है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी की सतह का 70 प्रतिशत से अधिक हिस्सा महासागरों से बना है और ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, जिससे तटीय क्षेत्रों के डूबने का खतरा है। राष्ट्रपति ने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण की चुनौती से निपटने के दो तरीके हैं। उन्होंने कहा, सरकारें और अंतरराष्ट्रीय संगठन व्यापक कदम उठा सकते हैं और नागरिकों के रूप में हम छोटे एवं स्थानीय कदम उठा सकते हैं। मुर्मू ने कहा, निस्संदेह, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। बेहतर कल के लिए व्यक्तिगत रूप से, स्थानीय स्तर पर - हम जो कुछ भी कर सकते हैं, आइए, उसे करने का संकल्प लें। अपने बच्चों के लिए ऐसा करना हमारी जिम्मेदारी है।

सरकार किसान उत्पादक संगठनों की समीक्षा करेगी

भाषा। नई दिल्ली

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को कहा कि सरकार किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के प्रदर्शन की समीक्षा करेगी। इन संस्थाओं के लिए, तीन साल की समर्थन अवधि समाप्त हो रही है, इसको देखते हुए यह निर्णय किया गया है। चौहान ने यहां दिल्ली हाट आईएनए में आयोजित मेले में अपने उत्पाद प्रदर्शित करने वाले 55 एफपीओ से मिलने के बाद यह बयान दिया। एफपीओ योजना 2020 में शुरू की गई थी। इसका लक्ष्य 6,865 करोड़ रुपए के बजटीय प्रावधान के साथ 2024 तक 10,000 नए एफपीओ बनाने और उन्हें बढ़ावा देने का है। सरकार ने कार्यक्रम के तहत तीन साल के लिए प्रति एफपीओ 18 लाख रुपए की वित्तीय सहायता प्रदान की। साथ ही इतना ही इक्विटी अनुदान और क्रेडिट गारंटी सुविधा भी दी। हालांकि, मंत्री ने कहा कि एफपीओ के लिए परिणाम अलग-अलग रहे हैं। कुछ एफपीओ ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की है जबकि अन्य को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। चौहान ने संवाददाताओं से कहा, तीन साल में कुछ एफपीओ अपने पैर पर खड़े हो गए जबकि कुछ संघर्ष कर रहे हैं। हम उनकी प्रगति को समझने और उन कमियों की पहचान के लिए सभी एफपीओ की गहन समीक्षा करेंगे और यह पता लगाएंगे कि क्या उन्हें अतिरिक्त समर्थन की आवश्यकता है। सरकार द्वारा नियुक्त क्रियान्वयन एजेंसियां समीक्षा प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। उन्हें पांच साल तक नए एफपीओ को सहायता और समर्थन प्रदान करने का काम सौंपा गया है। चौहान ने कहा, हमारा लक्ष्य है कि सभी एफपीओ आत्मनिर्भर बनें और किसानों के समग्र सशक्तिकरण में योगदान दें। कृषि मंत्री ने कहा कि देशभर में अबतक लगभग 8,875 एफपीओ स्थापित हो चुके हैं, जबकि लक्ष्य 10,000 का था। कुछ एफपीओ ने एक करोड़ रुपए तक का कारोबार हासिल किया है और ऑनलाइन ऑर्डर प्राप्त कर रहे हैं।

बिजली मंत्री का उपभोक्ताओं के लिए खुद से मीटर रीडिंग का सुझाव

नई दिल्ली। केंद्रीय बिजली मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने सोमवार को बिजली उपभोक्ताओं के लिए खुद से मीटर रीडिंग और मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से बिल सृजित करने का सुझाव दिया। बिजली मंत्रालय के बयान के अनुसार, खट्टर ने अरुणाचल प्रदेश में बिजली क्षेत्र की योजनाओं और परियोजनाओं पर ईटानगर में समीक्षा के दौरान यह सुझाव दिया। इसमें कहा गया है कि मंत्री ने उपभोक्ताओं को हर दो महीने में एक बार स्वयं मीटर रीडिंग और एक मोबाइल ऐप के माध्यम से बिल बनाने का विकल्प उपलब्ध कराने का सुझाव दिया है। बैठक में अरुणाचल के मुख्यमंत्री पेमा खांडू और केंद्रीय बिजली सचिव पंकज अग्रवाल भी मौजूद थे मंत्री ने कहा, केंद्र सरकार देश के पूर्वोत्तर राज्यो के समग्र विकास के लिए लगातार प्रयास कर रही है।

आईआईटी मद्रास तेल अवीव विवि की साझेदारी में जल गुणवत्ता पर पाठ्यक्रम पेश करेगा

चेन्नई। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास, इजराइल के तेल अवीव विश्वविद्यालय और कोयंबटूर के केएमसीएच रिसर्च फाउंडेशन (केएमसीएच-आरएफ) की साझेदारी में जल गुणवत्ता को लेकर पाठ्यक्रम की पेशकश करेगा ताकि नागरिकों को जल के प्रति साक्षर बनाया जा सके। संस्थान ने सोमवार को यह जानकारी दी। आईआईटी, मद्रास के मुताबिक यह चार महीने का पाठ्यक्रम होगा और हाइब्रिड माध्यम से एनपीटीईएल ऑनलाइन मंच के जरिए मुहैया कराया जाएगा। यह विज्ञान और इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियो और तकनीकी पृष्ठभूमि वाले उन लोगों के लिए आदर्श होगा जिनकी रुचि जल गुणवत्ता में है। संस्थान ने विज्ञप्ति में बताया कि पाठ्यक्रम के संयोजक विद्यार्थियो के लिए भारत और दुनिया का जल मानचित्र बनाने का काम कर रहे है जिससे जल साक्षरता बढ़ाने में मदद मिलेगी।

हाईटेक पाइप्स को भामाशाह पुरस्कार

नई दिल्ली। हाईटेक पाइप्स लिमिटेड भारत की लीडिंग स्टील पाइप्स कंपनियों में से एक यह घोषणा करते हुए गर्व महसूस कर रही है कि इसे डिपार्टमेंट ऑफ कमर्शियल टैक्सेस उत्तर प्रदेश द्वारा डिस्ट्रिक्ट बुलन्दशहर में फ इनेंशियल ईयर 2023-24 के लिए हाईएस्ट टैक्स पेअर,भामा शाह अवॉर्ड के रूप में मान्यता दी गई है। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार टैक्सेस करों के समय पर और ट्रांसपेरेंट पेमेंट के द्वारा देश की अर्थव्यवस्था में हाईटेक पाइप्स के योगदान को स्वीकार करता है। अनुपालन और एथिकल बिज़नेस प्रैक्टिसेस के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता ने यह विशिष्ट मान्यता अर्जित की है।

बीएमडब्ल्यू से टक्कर मामले में पुलिस ने आरोपी को पकड़ने के लिए 11 टीम बनाई

भाषा। मुंबई

मुंबई पुलिस ने वर्ली इलाके में बीएमडब्ल्यू कार की टक्कर से एक महिला की मौत के मामले में सत्तारूढ़ शिवसेना के नेता के बेटे को पकड़ने के लिए 11 टीम गठित करने के साथ अपराध शाखा को भी जांच में शामिल किया है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। शिवसेना नेता राजेश शाह का 24 वर्षीय बेटा मिहिर शाह उस बीएमडब्ल्यू कार को चला रहा था, जिसने एक स्कूटर को टक्कर मार दी थी। घटना में स्कूटर सवार एक महिला की मौत हो गई थी और उसका पति घायल हो गया। अधिकारी ने सोमवार को बताया कि मिहिर शाह के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर (एलओसी) भी जारी किया गया है। पुलिस द्वारा अदालत में प्रस्तुत किए गए सीसीटीवी फुटेज में कावेरी नखवा को कार द्वारा डेढ़ किलोमीटर तक घसीटते देखा गया। फुटेज में मिहिर शाह और सह-आरोपी राजऋषि बिदावत को महिला को बोनट से उतारते हुए, उसे सड़क पर डालते हुए और फिर गाड़ी को पीछे कर उसे फिर से कुचलते हुए देखा गया। पुलिस के अनुसार, मिहिर शाह कार को बांद्रा के कलानगर ले गया, वहां बिदावत की मौजूदगी में वाहन को छोड़ दिया, दूसरी कार ली और महानगर के उत्तरी छोर बोरीवली की ओर भाग गया। एक पुलिस अधिकारी ने बताया, वह (मिहिर) अपनी महिला मित्र के घर गया था और तब से उसका पता नहीं चला है। उसने बोरीवली इलाके में अपना मोबाइल फोन बंद कर दिया था। उसके महाराष्ट्र से भागने की आशंका के मद्देनजर पुलिस की टीम गुजरात समेत आसपास के राज्यों में भेजी गई हैं। अधिकारी ने बताया कि पुलिस पालघर स्थित मिहिर के आवास पर भी गई, लेकिन वहां ताला लगा हुआ था। अब तक की जांच के अनुसार, मिहिर ने रविवार तड़के तक जुहू के एक बार में अपने चार दोस्तों के साथ पार्टी की थी, जिसके बाद वह और उसका ड्राइवर दक्षिण मुंबई की ओर चले गए। पुलिस ने बार का 18,000 रुपए का बिल भी बरामद कर लिया है और उसकी जांच कर रही है। बार के सीसीटीवी फुटेज की भी जांच की जा रही है। अधिकारी ने कहा, दुर्घटना के बाद मिहिर का पिता और सह-आरोपी राजेश शाह डेढ़ घंटे के भीतर घटनास्थल पर पहुंच गया। वह सुबह पौने सात बजे घटनास्थल पर पहुंचा था। टक्कर मारने की घटना सुबह साढ़े पांच बजे हुई। राजेश शाह पर कथित तौर पर गलत सूचना देने और सबूत नष्ट करने का मामला दर्ज किया गया है। मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट (सिवरी) एस पी भोसले की अदालत ने राजेश शाह को सोमवार को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। बाद में राजेश को जमानत दे दी गई।

भाजपा नेता जाखड़ ने कहा : ध्वस्त हो गई है पंजाब में कानून-व्यवस्था

भाषा। चंडीगढ़

पंजाब के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रमुख सुनील जाखड़ ने सोमवार को चंडीगढ़ के राजभवन में राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित से मुलाकात के बाद कहा कि राज्य में भय का माहौल है और कानून-व्यवस्था ध्वस्त हो गई है। जाखड़ ने शिवसेना (पंजाब) नेता संदीप थापर पर हमला, बठिंडा में धारदार हथियारों से हमला करके एक व्यक्ति की हत्या और बटाला में दो समूहों के बीच गोलीबारी की घटना में चार लोगों की मौत का जिक्र किया। राज्यपाल से मुलाकात के बाद पत्रकारों से बात करते हुए जाखड़ ने कहा कि पंजाब में भय का माहौल है। जाखड़ ने कहा, लुधियाना (शिवसेना नेता पर हमले की घटना), मौर मंडी (बठिंडा) और बटाला (गोलीबारी की घटना में चार मौतें) को देखिए... सरकार कानून-व्यवस्था बनाए रखने में पूरी तरह विफल रही है। जाखड़ ने इसे शिष्टाचार मुलाकात बताते हुए कहा कि उन्होंने राज्यपाल के साथ कानून-व्यवस्था की स्थिति पर चर्चा की। जाखड़ ने दावा किया, आज कानून-व्यवस्था की स्थिति चिंताजनक है और उन्होंने (राज्यपाल ने) भी इसे स्वीकार किया है। इससे पहले जाखड़ ने एक वीडियो संदेश में कहा था कि पूरा पंजाब असुरक्षित महसूस कर रहा है।

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने मणिपुर में राहत शिविरों का दौरा किया

● जातीय हिंसा के पीड़ितों से बातचीत की

भाषा। इंफाल

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सोमवार को मणिपुर के जिरीबाम और चुराचांदपुर जिलों में राहत शिविरों का दौरा किया और वहां रह रहे लोगों से बातचीत की। राज्य में पिछले साल मई में मेइती और कुकी समुदाय के लोगों के बीच जातीय हिंसा शुरू हुई थी। इसमें 200 से अधिक लोगों की मौत हुई है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के साथ पहुंचे गांधी ने राहत शिविरों में रह रहे लोगों से बात की और उनकी समस्याएं सुनीं। कांग्रेस द्वारा राज्य की दोनों लोकसभा सीटें जीतने के बाद राहुल गांधी पहली बार यहां आए हैं। कांग्रेस ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, हिंसा के बाद मणिपुर की उनकी (राहुल गांधी की) तीसरी यात्रा लोगों के मुद्दों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है। पिछले साल तीन मई को मणिपुर में जातीय हिंसा भड़कने के कुछ हफ्ते बाद गांधी ने पहली बार मणिपुर का दौरा किया था। उन्होंने जनवरी 2024 में राज्य से अपनी भारत जोड़ो न्याय यात्रा भी शुरू की थी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने सबसे पहले जिरीबाम उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्थापित राहत शिविर का दौरा किया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के. मेघचंद्र ने संवाददाताओं को बताया कि जिरीबाम के लोगों ने गांधी को अपने अनुभवों के बारे में बताया। मेघचंद्र ने कहा, उन्होंने यह भी पूछा कि उन्हें किस चीज की जरूरत है। एक लड़की ने राहुल गांधी से कहा कि न तो प्रधानमंत्री और न ही मुख्यमंत्री उनसे मिलने आए हैं। उसने गांधी से यह मामला संसद में उठाने का भी आग्रह किया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि जिरीबाम में हजारों की संख्या में लोग गांधी का स्वागत करने आए और उनमें से कई लोग उनसे बात करते हुए रो पड़े।

2022-23 में 27 क्षेत्रों में रोजगार 3.31 प्रतिशत बढ़ा: आरबीआई आंकडे

भाषा। मुंबई

कृषि, व्यापार और वित्तीय सेवाओं सहित 27 क्षेत्रों में कार्यरत लोगों की संख्या 2022-23 में सालाना आधार पर 3.31 प्रतिशत बढ़कर 59.66 करोड़ हो गई। सोमवार को प्रकाशित भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों में यह जानकारी दी गई। इससे पहले 2021-22 के दौरान इन 27 क्षेत्रों में रोजगार 57.75 करोड़ था। आरबीआई ने अपनी वेबसाइट पर उद्योग स्तर पर उत्पादकता मापन - भारत केएलईएमएस आंकड़े शीर्षक के तहत ए आंकड़े प्रकाशित किए हैं। यहां केएलईएमएस का आशय पूंजी (के), श्रम (एल), ऊर्जा (ई) सामग्री (एम) और सेवा (एस) से है। आंकड़ों में संपूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था के 27 उद्योगों को शामिल किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक कृषि, शिकार, वानिकी और मछली क्षेत्र ने 25.3 करोड़ व्यक्तियों को रोजगार दिया था। यह आंकड़ा 2021-22 में 24.82 करोड़ था। इसके अलावा उल्लेखीय रोजगार देने वाले क्षेत्रों में निर्माण, व्यापार तथा परिवहन और भंडारण शामिल थे। आरबीआई ने कहा कि दस्तावेज भारत केएलईएमएस डेटाबेस संस्करण-2024 को आर्थिक वृद्धि और इसके प्रमुख क्षेत्रों में शोध को बढ़ावा देने के लिए तैयार किया गया है।

मराठवाड़ा में छह महीने में 430 किसानों ने आत्महत्या की

छत्रपति संभाजीनगर। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में 2024 के पहले छह महीने में कुल 430 किसानों ने आत्महत्या की है। एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। इनमें सबसे अधिक 101 मौतें बीड जिले में हुई हैं। बीड राज्य के कृषि मंत्री और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) नेता धनंजय मुंडे का गृह क्षेत्र है। अधिकारी ने कहा, "जून में बीड में 30 किसानों ने आत्महत्या की। बीड में आत्महत्या के 101 मामलों में से 46 मामले एक लाख रुपए की अनुग्रह राशि के पात्र थे, पांच मामले अयोग्य घोषित किए गए और 50 मामलों में विचार किया जा रहा है।

सुरक्षा बलों पर हमले की साजिश के आरोपी ने की सिमी कार्यकर्ताओं के परिवारों की मदद : एटीएस

भोपाल (मप्र)। सुरक्षा बलों पर अकेले हमला करने की साजिश रचने के आरोप में खंडवा से गिरफ्तार एक मोटर मैकेनिक वर्ष 2016 में पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारे गए प्रतिबंधित स्टूडेंट इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) के आठ कार्यकर्ताओं के परिवारों की कथित रूप से मदद कर रहा था। मध्यप्रदेश पुलिस के आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी।एटीएस ने इंडियन मुजाहिदीन (आईएम) और इस्लामिक स्टेट (आईएस) की कट्टरपंथी विचारधारा से कथित तौर पर बेहद प्रभावित फैजान शेख को खंडवा से पिछले हफ्ते गिरफ्तार किया था।सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील शहर का रहने वाला शेख पेशे से मोटर मैकेनिक है। एटीएस के महानिरीक्षक डॉ. आशीष ने पीटीआई-भाषा को बताया, "शेख, पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारे गए सिमी कार्यकर्ताओं के परिवारों को एकजुट कर रहा था और उनकी मदद कर रहा था।

क्विक न्यूज

उपराष्ट्रपति ने रक्षा भूमि प्रबंधन में उन्नत प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जोर दिया

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को रक्षा भूमि प्रबंधन में तत्परता एवं प्रौद्योगिकी एकीकरण के महत्व को रेखांकित करते हुए इस बात पर जोर दिया कि रक्षा का सबसे अच्छा तरीका, युद्ध के लिए हमेशा तैयार रहना है। उपराष्ट्रपति एन्क्लेव में भारतीय रक्षा संपदा सेवा के 2023 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों को संबोधित करते हुए धनखड़ ने रक्षा भूमि के प्रभावी प्रबंधन के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अतिक्रमण और कानूनी विवादों सहित रक्षा भूमि के प्रबंधन में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला और आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके सक्रिय दृष्टिकोण अपनाने की वकालत की। धनखड़ ने कहा कि प्रौद्योगिकी रक्षा भूमि की निगरानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जिससे किसी भी घुसपैठ की त्वरित पहचान और समाधान संभव हो सकेगा। उपराष्ट्रपति ने संबोधित करते हुए कहा, रक्षा का सबसे अच्छा तरीका, युद्ध के लिए हमेशा तैयार रहना है। रक्षा भूमि के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने से आप किसी भी घुसपैठ की निगरानी कर सकेंगे और त्वरित उपचारात्मक कार्रवाई कर सकेंगे।

जम्मू-कश्मीर में एक व्यक्ति को बिटकॉइन के जरिए आंतकवाद का वित्तपोषण करते पाया गया : एसआईए

जम्मू।आतंकवाद का वित्तपोषण करने के मामलों की जांच कर रही राज्य अन्वेषण एजेंसी (एसआईए) ने एक व्यक्ति को बिटाकॉइन के जरिए आतंकवादी संगठनों को जम्मू-कश्मीर में बड़े पैमाने में हिंसा करने और आतंकवादी गतिविधियों के लिए धन मुहैया कराने की गतिविधि में संलिप्त पाया है। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। एसआईए ने इलाके में आतंकवाद के वित्तपोषण में संलिप्त व्यक्ति की पहचान के लिए सार्वजनिक पुलिस अनुरोध जारी किया है। एसआईए के एक अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया कि जांच के दौरान, एसआईए को जानकारी मिली कि उक्त व्यक्ति बिटकॉइन व्यापार के माध्यम से आतंकवादी संगठनों तक धन पहुंचा रहा हैअ इसका इस्तेमाल बड़े पैमाने पर हिंसा और आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने में किया जा रहा था। उन्होंने बताया कि आतंकवाद के वित्तपोषण के मामले में एसआईए ने 2022 में कश्मीर घाटी में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। अधिकारी ने बताया कि एसआईए ने आरोपी की पहचान करने में जनता की मदद लेने के वास्ते सार्वजनिक नोटिस जारी किया है और उसकी तस्वीर जारी किया है। उन्होंने कहा कि जनता से आरोपी की पहचान करने में मददगार कोई भी जानकारी होने पर उसे साझा करने की अपील की गई है। अधिकारी ने कहा, दी जाने वाली कोई भी जानकारी आरोपी की पहचान करने में मददगार साबित हो सकती है। जानकारी देने वाले की पहचान गुप्त रखी जाएगी। उन्होने कहा कि आरोपी की पहचान एवं गिरफ्तारी में मदद करने वाली जानकारी देने वाले को उचित पुरस्कार दिया जाएगा। एसआईए जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के वित्तपोषण से जुड़े कई मामलों की जांच कर रही है।

रूपौली विधानसभा सीट पर उपचुनाव में राजद उम्मीदवार को पप्पू यादव का समर्थन

पटना। निर्दलीय सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने रूपौली विधानसभा सीट पर उपचुनाव में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की उम्मीदवार बीमा भारती को पूर्ण समर्थन देने की सोमवार को घोषणा की।यादव ने हाल में ही संपन्न लोकसभा चुनाव में भारती को हराया था। यादव ने एक्स पर कहा, विचारधारा बड़ी चीज है, राजनीति में आज यह विलुप्त हो रही है। लेकिन मैं विचारधारा की राजनीति का वाहक हूं, मैं कांग्रेस विचारधारा के साथ हूं। इसलिए मेरे प्रति तमाम निजी नफरत को खारिज करते हुए रूपौली विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस समर्थित उम्मीदवार को मेरा पूर्ण समर्थन है। पप्पू यादव ने लोकसभा चुनाव से पहले अपनी जन अधिकार पार्टी का कांग्रेस में विलय कर पार्टी टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ने की इच्छा जताई थी लेकिन राजद द्वारा बीमा भारती को चुनावी मैदान में उतारने के बाद यादव ने निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा था।लोकसभा चुनाव में पराजय का सामना करने के बाद भारती फिर से राजद उम्मीदवार के तौर पर चुनावी मैदान में है।मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जनता दल यूनाइटेड (जदयू) को छोड़कर कुछ महीने पहले राजद में शामिल होने वाली भारती ने विधानसभा सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था।

नर्चरग्रिटेल किसानों को आधुनिकरण की देगा जानकारी

बेंगलुरु। भारत के प्रमुख बी2बी एग्रीइनपुट मार्केटप्लेस नर्चरग्रिटेल ने कृषि उपकरणों के क्षेत्र में अपने विस्तार की घोषणा की है। इस महत्वपूर्ण कदम के तहत कंपनी ने दो बेहद सम्मानिक ब्राण्ड्स नेपच?्न और पासुरा के साथ भागीदारी की है। सभी भागीदार मिलकर कृषि विक्रेताओं को उच्च गुणवत्ता के स्प्रे पम्प प्रदान करेंगे। कृषि विक्रताओं के बीच खेती के लिये बेहतरीन मशीनरी की मांग लगातार बढ़ रही हैए इसके मद्देनजर नर्चरग्रिटेल ऑनलाइन खरीदारी की प्रक्रिया को बढ़ावा देना चाहता है। यह कृषि विक्रेताओं को नेपच्यून और पासुरा के स्प्रे पम्प की ऑनलाइन बिक्री करेगा। टिकाऊ निर्माण और आधुनिक टेक्नोलॉजी इन पम्प की खूबियां हैं और इन्हें इस्तेमाल करना बेहद आसान है। फसलों के विकास के लिए यह पम्प स्प्रे करने की बेहतर क्षमता प्रदान करेंगे। इस अवसर पर बोलते हुए नर्चरग्रिटेल के प्रमुख अंकित लड्ढा ने कहा कि कृषि उपकरण में हमारा विस्तार कृषि समुदाय को सशक्त बनाने की हमारी यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह कदम आधुनिकीकरण और सुविधा के माध्यम से भारतीय कृषि व्यवसाय में उत्पादकता और स्थिरता बढ़ाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को स्पष्ट करता है।

उत्कर्ष बैंक ने मेरठ में खोला शाखा

मेरठ। उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक लिमिटेड-उत्कर्ष एसएफबीएल, ने आज उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में अपनी नई शाखा की शुरूआत की। यह शाखा श्रीराम पैलेस नवीन मंडीए मेरठ दिल्ली जीएसटी रोड मेरठ 250002 में खोली गई है। इस नई शाखा की शुरूआत के साथ ही मेरठ में कुल शाखाओं की संख्या तीन और उत्तर प्रदेश में 195 शाखाएं और देश भर के 26 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कुल संख्या 914 तक पहुंच गई है। इस नई शाखा के उद्घाटन के अवसर पर बोलते हुए उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक लिमिटेड के एमडी और सीईओ गोविंद सिंह ने कहा कि हमें इस बात की खुशी है कि हमारा बैंकिंग नेटवर्क उत्तर प्रदेश में विस्तार ले रहा है। इस नई शाखा के साथ ही हमारी पहुंच उत्तर प्रदेश में बढ़ी है। मेरठ अपनी ऐतिहासिकता और शानदार आर्थिक शहर के रूप में मशहूर है और यहां विकास के सभी अवसर उपलब्ध हैं। इस नई शाखा के कारण स्थानीय लोगों को हमारी बैंकिंग सेवाओं का पूरा सहयोग मिलेगा साथ ही आर्थिक विकास में मजबूती आएगी जिसका लाभ जिले के आसपास के सभी वर्गों को मिलेगा। बैंक के द्वारा अपने ग्राहकों को तमाम तरह के वित्तीय उत्पाद और सेवाएं प्रदान कराई जाती हैं जिनमें सेविंग और करेंट अकाउंट्सए फिक्स्ड डिपाजिट और रेकरिंग डिपाजिट जैसी सेवाएं शामिल हैं।

एडब्लूएस इंडिया का पहला स्पेस एक्सेलरेटर प्रोग्राम 24 स्टार्टअप्स को सपोर्ट करेगा

चेन्नई। थूट्टुकुडी तमिलनाडु से लॉन्च वैहिकल और सस्टेनेबल सैटेलाइट स्टार्टअप। पोर्ट ब्लेयर अंडमान एवं निकोबार आईलैंड्स से एडवांस्ड जियोस्पैशल एनालिसिस स्टार्टअप। अहमदाबाद, गुजरात से सैटेलाइट टेक्नोलॉजी पर आधारित प्रेसिज़न फार्मिंग स्टार्टअप। ये उन 24 स्टार्टअप्स की सूची में हैं जो स्पेस टेक्नोलॉजी पर केंद्रित स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाईन किए गए टेक्निकलए बिज़नेसए और मेंटरशिप कार्यक्रमए एडब्लूएस स्पेस एक्सेलरेटर: इंडिया में हिस्सा ले रहे हैं। यह 14 हफ्ते का प्रोग्राम भारत में एडब्लूएस का पहला स्पेस एक्सेलरेटर प्रोग्राम हैए जिसका उद्देश्य अंतरिक्ष क्षेत्र और टेक्निकल विशेषज्ञों द्वारा समर्पित टेक्निकल विशेषज्ञता, विशेषज्ञ एडब्लूएस प्रशिक्षण और मेंटरिंग प्रदान करना है।

सीयूईटी-यूजी: कई अभ्यर्थियों ने उत्तर कुंजी में खामी का आरोप लगाया

भाषा। नई दिल्ली

संयुक्त विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा-स्नातक (सीयूईटी-यूजी) में शामिल कई अभ्यर्थियों ने सोमवार को आरोप लगाया कि राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा घोषित उत्तर कुंजी में उत्तर गलत हैं। एनटीए द्वारा उत्तर कुंजी की घोषणा के एक दिन बाद ए दावे सामने आए। एजेंसी ने यह भी कहा कि अगर परीक्षा के संचालन के बारे में उनके द्वारा उठाई गई कोई शिकायत सही पाई जाती है तो वह 15 से 19 जुलाई तक सीयूईटी-यूजी के अभ्यर्थियों के लिए दोबारा परीक्षा आयोजित करेगी। उम्मीदवार अब 200 रुपए प्रति उत्तर का भुगतान करके नौ जुलाई शाम पांच बजे तक उत्तरों को ऑनलाइन चुनौती दे सकते हैं। एक अभ्यर्थी ऋषभ ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, सर, मुझे सीयूईटी-यूजी उत्तर कुंजी में कई त्रुटियां मिलीं और मुझे पता है कि अगर मैं सभी त्रुटियों को चुनौती देता हूं (मुझे लगता है कि वे त्रुटियां हैं) तो इसका खर्च मेरे सीयूईटी आवेदन से कहीं अधिक होगा। एक अन्य अभ्यर्थी बिशाल भौमिक ने कहा, जब मैंने सीयूईटी-यूजी की उत्तर कुंजी के साथ अपनी भूगोल की ओएमआर शीट की जांच की, तो मैं चौंक गया। उत्तर कुंजी का 80 प्रतिशत हिस्सा गलत था। जब मैंने एनटीए द्वारा प्रदान की गई गलत उत्तर कुंजी के अनुरूप प्राप्त होने वाले अंक की गणना की, तो मुझे केवल 26 अंक मिले लेकिन वास्तव में मुझे 122 अंक मिलेंगे। एक अन्य उपयोगकर्ता ने एक्स पर लिखा, एनटीए की कुंजी

धनखड़ ने फिर साधा चिदंबरम पर निशाना

● कहा : सदन में आपका नहीं बोलना आपकी सहमति के समान

भाषा। नई दिल्ली

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने तीन आपराधिक न्याय कानूनों पर टिप्पणियों को लेकर सोमवार को पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम पर नए सिरे से हमला किया और कहा कि कोई संसद सदस्य किसी विधेयक पर चर्चा में भाग नहीं लेकर सहमति जताता है। शनिवार के बाद से यह दूसरी बार है जब धनखड़ ने एक जुलाई को लागू हुए तीन आपराधिक न्याय कानूनों - भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम पर टिप्पणियों को लेकर चिदंबरम पर निशाना साधा है। यहां राज्यसभा प्रशिक्षुओं के एक समूह को संबोधित करते हुए, धनखड़ ने चिदंबरम का नाम लिए बिना कहा, उन्होंने सदन (राज्यसभा) में कुछ नहीं कहा। वह समिति (गृह संबंधी स्थाई संसदीय समिति) के सदस्य थे। धनखड़ ने कहा कि यदि कोई सदस्य समिति का हिस्सा है, समिति के समक्ष अपनी बात रखता है, समिति बहुमत के साथ विपरीत राय रखती है, तो उस सदस्य के पास सदन की कार्यवाही में भाग लेने और अपनी बात बताने और दूसरों को तर्क आदि से समझाने का बहुत अच्छा अवसर होता है। उपराष्ट्रपति ने कहा, अगर आप अपना संवैधानिक कर्तव्य अदा नहीं करते, यदि आप चर्चा में भाग नहीं लेते, अगर आप अपनी राय नहीं रखते। और फिर आप बाहर कुछ कहते हैं तो आपके पास बहुमूल्य अवसर था, संवैधानिक मंच था, एक दुर्लभ अवसर था जो केवल संसद सदस्यों के लिए उपलब्ध है, आप उस अवसर का लाभ उठाने में विफल रहते हैं, एक तरह से आप अपना अधिकार खो देते हैं। धनखड़ ने कहा, आप भाग नहीं लेकर, चुप्पी साधकर अपनी सहमति जताते हैं। उन्होंने कहा कि सदन की कार्यवाही में भाग नहीं लेना और बाहर बयान देना सही नहीं है। धनखड़ ने शनिवार को कांग्रेस नेता चिदंबरम पर उनकी इस टिप्पणी के लिए निशाना साधा था कि तीन नए आपराधिक कानून अकुशल लोगों ने तैयार किए। धनखड़ ने इसे अक्षम्य करार दिया और कांग्रेस नेता से इस आपत्तिजनक और मानहानिकारक कथन को वापस लेने का अनुरोध किया।

कीव में रूस ने दागी मिसाइलें, 31 लोगों की मौत

भाषा। कीव

रूस ने राजधानी कीव समेत यूक्रेन के विभिन्न स्थानों पर मिसाइल हमले किए, जिनमें कम से कम 31 लोगों की मौत हो गई और 154 लोग घायल हुए हैं। रूसी हमले में बच्चों के एक अस्पताल की इमारत को भी व्यापक रूप से नुकसान पहुंचा। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने सोशल मीडिया पोस्ट पर एक बयान में कहा कि रूसी बमबारी ने पांच यूक्रेनी शहरों को विभिन्न प्रकार की 40 से अधिक मिसाइलों से निशाना बनाया, जिससे रिहाइशी इमारतें और सार्वजनिक बुनियादी ढांचे नष्ट हो गए। क्रीवीं रीह में नगर प्रशासन के प्रमुख ओलेक्सांद्र विल्कुल ने कहा कि यह एक बड़े पैमाने पर किया गया मिसाइल हमला था, जिसमें 10 लोगों की मौत हो गई और 47 अन्य लोग घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों ने यूक्रेन के मध्य द्निप्रोपेट्रोव्स्क क्षेत्र में भी विस्फोट की सूचना दी है। अधिकारियों ने बताया कि राहतकर्मी कीव के ओखमाटडिट बाल अस्पताल की आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त इमारत के मलबे से लोगों की तलाश में जुटे हैं। मेयर विटाली क्लिट्स्को ने बताया कि कम से कम 16 लोग घायल हुए हैं, जिनमें सात बच्चे शामिल हैं। अधिकारियों ने बताया कि बच्चों के अस्पताल की दो मंजिला इमारत आंशिक रूप से नष्ट हो गई। अस्पताल की मुख्य 10 मंजिला इमारत की खिड़कियां और दरवाजे उखड़ गए और दीवारें काली पड़ गईं। जेलेंस्की ने सोशल मीडिया पर कहा, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि दुनिया अब इस बारे में चुप न रहे और सभी को यह देखना चाहिए कि रूस क्या कर रहा है। यह हमला अमेरिका में तीन दिवसीय नाटो शिखर सम्मेलन की पूर्व संध्या पर हुआ है। सम्मेलन में इस बात पर विचार किया जाएगा कि किस प्रकार यूक्रेन को गठबंधन के अटूट समर्थन का भरोसा दिलाया जाए तथा यूक्रेनवासियों को यह आशा प्रदान की जाए कि उनका देश द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप के सबसे बड़े संघर्ष से उबर सकता है। यह पिछले कई महीनों में कीव पर सबसे बड़े बमबारी थी। यूक्रेनी वायु सेना ने कहा कि दिन के उजाले में किए गए हमलों में किंजल हाइपरसोनिक प्रक्षेपास्त्र शामिल थे, जो सबसे उन्नत रूसी हथियारों में से एक है। किंजल ध्वनि की गति से 10 गुना अधिक रफ्तार से उड़ता है, जिससे इसे रोकना मुश्किल हो जाता है। विस्फोटों से शहर की इमारतें हिल गईं। यूक्रेन की सुरक्षा सेवा ने कहा कि उसे घटनास्थल पर रूसी केएच-101 क्रूज मिसाइल का मलबा मिला है और उसने युद्ध अपराध के आरोपों पर कार्रवाई शुरू कर दी है। यूक्रेन ने कहा कि उसने सोमवार को दागी गईं 13 एच-101 मिसाइलों में से 11 को नष्ट कर दिया।

विदेशी अनुसंधान पोतों से प्रतिबंध हटाने का कोई निर्णय नहीं: श्रीलंका के विदेश मंत्री

कोलंबो। श्रीलंका के विदेश मंत्री अली साबरी ने सोमवार को कहा कि श्रीलंका सरकार ने द्वीप राष्ट्र के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में विदेशी वैज्ञानिक अनुसंधान सर्वेक्षण पोतों को प्रवेश देने पर रोक को समाप्त करने का निर्णय नहीं लिया है। मंत्री का स्पष्टीकरण जापानी मीडिया की उन खबरों के बाद आया है जिनमें कहा गया था कि श्रीलंका ने अगले वर्ष से विदेशी अनुसंधान जहाजों पर प्रतिबंध हटाने का निर्णय लिया है। यह प्रतिबंध उन्नत तकनीक वाले चीनी निगरानी जहाजों के बार-बार लंगर डालने के अनुरोधों के बाद भारत और अमेरिका द्वारा सुरक्षा संबंधी गंभीर चिंता जताए जाने के बाद लगाया गया था। खबर में कहा गया है कि दौरे पर आए श्रीलंका के विदेश मंत्री साबरी ने एनएचके वर्ल्ड जापान को स्थिति में बदलाव की जानकारी दी। अखबार द मॉर्निंग के मुताबिक, साबरी ने सोमवार को इन खबरों का खंडन किया और कहा कि श्रीलंका द्वारा द्वीप राष्ट्र के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में विदेशी वैज्ञानिक अनुसंधान सर्वेक्षण पोतों को अनुमति देने पर लगा प्रतिबंध हटाने की खबर को गलत तरीके से पेश किया गया है। श्रीलंका ने 2024 में यह प्रतिबंध लागू किया है मंत्री ने कहा, "हम साल के अंत में स्थिति का आकलन करेंगे और फिर तय करेंगे कि स्थगन जारी रखना है या इसे हटाना है। हिंद महासागर में चीनी अनुसंधान जहाजों की बढ़ती आवाजाही पर नई दिल्ली ने चिंता व्यक्त करते हुए इनके जासूसी जहाज होने का अंदेशा जताया था और कोलंबो से आग्रह किया था कि वह ऐसे जहाजों को अपने बंदरगाहों पर न आने दे। भारत द्वारा चिंता जताए जाने के बाद श्रीलंका ने जनवरी में अपने बंदरगाह पर विदेशी अनुसंधान जहाजों के लंगर डालने पर प्रतिबंध लगा दिया था। इस साल की शुरुआत में एक चीनी जहाज के लिए हालांकि छूट दी गई थी।

बाइडन का राष्ट्रपति पद की दावेदारी छोड़ने से इनकार, डेमोक्रेट नाटक समाप्त करे

भाषा। वाशिंगटन

राष्ट्रपति जो बाइडन ने डेमोक्रेट सांसदों को लिखे एक पत्र में राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी छोड़ने से इनकार किया। साथ ही पार्टी के भीतर चल रहे उस नाटक को समाप्त करने का आह्वान किया, जिसने डेमोक्रेट नेताओं को इस बात पर विभाजित कर दिया है कि बाइडन को दौड़ में बने रहना चाहिए या नहीं। बाइडन ने सोमवार को दो पन्नों के पत्र में लिखा, आगे कैसे बढ़ना है, यह सवाल पिछले एक सप्ताह से खूब चर्चा में है और अब इसे खत्म करने का समय आ गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पार्टी का एक ही काम है कि नवंबर में रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रपति पद के संभावित उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप को हराया जाए। बाइडन ने पत्र में कहा कि आम चुनाव में 119 दिन बाकी हैं। उन्होंने कहा, कमजोर संकल्प या आगे के अभियान के बारे में स्पष्टता की कमी से सिर्फ ट्रंप को मदद मिलेगी और हमें नुकसान होगा। अब समय आ गया है कि हम एकसाथ आएं, एक एकीकृत पार्टी के तौर पर आगे बढ़ें और डोनाल्ड ट्रंप को हराएं। राष्ट्रपति जो बाइडन की उम्मीदवारी को लेकर डेमोक्रेटिक पार्टी में मतभेद गहरे हो रहे हैं तथा इस बात को लेकर कई सांसद मुखर हो रहे हैं कि बाइडन को राष्ट्रपति उम्मीदवार की दौड़ से हट जाना चाहिए। दूसरी तरफ, बाइडन के कुछ सबसे कट्टर समर्थक इस बात पर जोर दे रहे हैं कि ट्रंप को हराने के लिए बाइडन से बेहतर कोई अन्य उम्मीदवार नहीं है।

इजराइली सैनिकों ने गाजा सिटी में अपना अभियान तेज किया

भाषा। दीर-अल-बलाह (गाजा पट्टी)

इजराइली सैनिकों ने गाजा पट्टी के सबसे बड़े शहर में अपना अभियान तेज कर दिया, जिसका मकसद चरमपंथियों का सफाया करना बताया जा रहा है। इजराइली सैनिकों द्वारा गाजा सिटी में अभियान में तेजी लाए जाने के चलते सोमवार को हजारों फलस्तीनी उस इलाके से पलायन कर रहे हैं, जिसने हफ्ते की शुरूआत में हमलों को झेला था। नौ माह से जारी युद्ध के कारण गाजा सिटी पहले ही तबाह हो चुका है। इजराइली सेना ने कहा कि इस इलाके पर उसने महीनों पहले कब्जा कर लिया था लेकिन वहां के कुछ हिस्सों में चरमपंथी फिर से सिर उठा रहे हैं। युद्ध के दौरान गोलाबारी होने के बावजूद हजारों लोग इलाके में अब भी रह रहे हैं। गाजा सिटी के पड़ोस में स्थित दराज में अपने रिश्तेदार के घर तीन बच्चों के साथ रह रही सैयदा अब्देल-बाकी ने कहा, भारी गोलाबारी के बीच रात के अंधेरे में हम भाग निकले। मैं पांचवीं बार विस्थापित होने पर यहां पहुंची हूं। स्थानीय बाशिंदों के अनुसार, इलाके में गोलाबारी और हवाई हमले हुए। हालांकि, गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने हताहतों की संख्या अभी नहीं बताई है। हमास संचालित सिविल डिफेंस ने भी अभी हताहतों की संख्या नहीं बताई और कहा कि तेज झड़पें होने के चलते इलाके में पहुंच पाना मुश्किल है। नौ महीनों से जारी युद्ध खत्म करने के लिए राजनयिक प्रयास बढ़ाए जाने के बीच गाजा में लोगों को अपनी स्थिति में सुधार आने की कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही। इजराइली सेना ने कहा कि उसने हमास और इस्लामी जिहादी समूहों की इलाके में मौजूदगी की खुफिया जानकारी मिलने के बाद हमले शुरू किए हैं।

मैक्रों ने चुनाव के बाद देश की स्थिरता के लिए प्रधानमंत्री को बरकरार रखा

भाषा। पेरिस

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने चुनाव परिणाम के बाद सोमवार को प्रधानमंत्री गैब्रियल अटल के इस्तीफे से इनकार करते हुए उन्हें अस्थाई रूप से सरकार के प्रमुख के रूप में बने रहने के लिए कहा। इस चुनाव परिणाम के बाद सरकार का भविष्य अधर में है। फ्रांस में कोई भी पार्टी (वाम, मध्यमार्ग या दक्षिणपंथ समर्थक) सरकार बनाने के लिए जरूरी बहुमत के नजदीक भी नहीं पहुंच पाई है। रविवार को हुए मतदान के नतीजों से यूरोपीय संघ की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के ठप होने का खतरा बढ़ गया है। मैक्रों ने दांव खेला कि समय पूर्व चुनाव कराने के उनके फैसले से फ्रांस को एक स्पष्ट दिशा मिलेगी, लेकिन परिणाम बिल्कुल विपरीत आया। पेरिस ओलंपिक के शुरू होने में तीन हफ्ते से कम समय बचा है जब पूरा देश अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में रहेगा। फ्रांस की संसद का कार्यकाल 2027 में खत्म होना था, लेकिन यूरोपीय संघ में नौ जून को बड़ी हार मिलने के बाद राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने समय से पहले संसद भंग कर दी। फ्रांस का मुख्य शेयर सूचकांक गिरावट के साथ खुला पर जल्द ही इसमें सुधार दिखा, यह संभवतः बाजार के इस डर के कारण था कि वाम या दक्षिणपंथी गठबंधन की निर्णायक जीत हो सकती है। प्रधानमंत्री गैब्रियल अटल ने कहा था कि अगर जरूरत पड़ी तो वह पद पर बने रहेंगे लेकिन सोमवार सुबह उन्होंने अपने इस्तीफे की पेशकश की, लेकिन मैक्रों ने तुरंत उनसे देश की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए पद पर बने रहने के लिए कहा। मैक्रों के शीर्ष राजनीतिक सहयोगी राष्ट्रपति भवन में अटल के साथ बैठक में शामिल हुए। अटल ने रविवार को स्पष्ट किया कि वह अचानक चुनाव कराने के मैक्रों के फैसले से असहमत थे। दो दौर के मतदान के बाद आए नतीजों में पहले स्थान पर रहे वामपंथी गठबंधन, दूसरे स्थान पर रहे मैक्रों के मध्यमार्गी गठबंधन या धुर दक्षिणपंथी गठबंधन में से किसी को भी सरकार बनाने का कोई स्पष्ट जनादेश नहीं मिला है। गंभीरता से बातचीत शुरू करने के लिए नेशनल असेंबली में नवनिर्वाचित और सीट बरकरार रखने वाले सांसदों के एकत्र होने की उम्मीद थी। मैक्रों स्वयं इस सप्ताह के अंत में वाशिंगटन में नाटो शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए रवाना होंगे। फ्रांस में राजनीतिक गतिरोध का यूक्रेन में युद्ध, वैश्विक कूटनीति और यूरोप की आर्थिक स्थिरता पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकता है।

पाक के पूर्व विदेश मंत्री कुरैशी लाहौर जेल स्थानांतरित किए गए, अदालत में पेश होंगे

लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के करीबी सहयोगी एवं विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी को सोमवार को रावलपिंडी की अडियाला जेल से लाहौर की कोट लखपत जेल भेज दिया गया। सोमवार को मीडिया में आई एक खबर में यह जानकारी दी गई है। कुरैशी को पिछले साल नौ मई को हुए दंगों के सिलसिले में आतंकवाद रोधी अदालत (एटीसी) में पेश किया जाना है। जेल में बंद खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के वरिष्ठ नेता कुरैशी के खिलाफ नौ मई की हिंसा से जुड़े कई मामले लाहौर में दर्ज हैं। जियो न्यूज ने जेल सूत्रों के हवाले से बताया कि कुरैशी (68) को सोमवार सुबह कड़ी सुरक्षा के बीच लाहौर स्थानांतरित किया गया, जहां उन्हें कोट लखपत जेल में गठित आतंकवाद रोधी अदालत में पेश किया जाएगा। वकील तैमूर मलिक ने इस बात की पुष्टि की है कि एटीसी लाहौर के न्यायाधीश कोट लखपत जेल में नौ मई के मामलों की सुनवाई करेंगे और खान की पार्टी के नेता कुरैशी सोमवार को अदालत में पेश होंगे। देश के शासकीय गोपनीयता कानून का उल्लंघन करने को लेकर खान और पूर्व विदेश मंत्री को पाकिस्तान की एक अदालत द्वारा 10 साल जेल की सजा सुनाए जाने के बाद से कुरैशी जेल में हैं। शासकीय गोपनीयता कानून के उल्लंघन का यह मामला खान के सत्ता में रहने के दौरान का है। हालांकि, इस्लामाबाद उच्च न्यायालय ने तीन जून को खान और कुरैशी को इस मामले में बरी कर दिया और उनकी 10 साल जेल की सजा निलंबित कर दी।

अमेरिका : कैलिफोर्निया की डेथ वैली में पारा 53 डिग्री सेल्सियस के पार, पर्यटक की मौत

लॉस एंजिलिस। अमेरिका में कैलिफोर्निया स्थित डेथ वैली नेशनल पार्क में रविवार को तापमान 53.3 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। भीषण गर्मी के कारण डेथ वैली पहुंचे एक पर्यटक की मौत हो गई, जबकि एक अन्य को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।पार्क प्रबंधन ने एक बयान जारी कर बताया कि दोनों पर्यटक छह युवकों के एक समूह का हिस्सा थे, जो मोटरसाइकिल से बैडवाटर बेसिन क्षेत्र से गुजर रहा था। बयान में कहा गया है, मृतक की पहचान नहीं हो पाई है। दूसरे मोटरसाइकिल चालक को गंभीर तापघात के कारण लास वेगास के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बयान के मुताबिक, समूह के चार अन्य सदस्यों का मौके ही इलाज किया गया।पार्क के अधिकारी माइक रेनॉल्ड्स ने कहा, इस तरह की भीषण गर्मी आपके स्वास्थ्य के लिए वाकई खतरा पैदा कर सकती है। भीषण गर्मी से मौत का यह मामला ऐसे समय में सामने आया है, जब अमेरिका में तापमान ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं।

लोगों को एक दिन स्वस्थ बच्चा पैदा करने में मदद कर सकता है

भाषा। सिडनी

माइटोकॉन्ड्रिया कोशिकाओं में छोटी संरचनाएं होती हैं, जो हमारे द्वारा खाए गए भोजन को हमारी कोशिकाओं को कार्य करने के लिए आवश्यक ऊर्जा में परिवर्तित करती हैं। माइटोकॉन्ड्रियल रोग (या संक्षेप में माइटो) में ऐसी स्थितियां होती है, जो अंगों को ठीक से काम करने के लिए जरूरी ऊर्जा को उत्पन्न करने की क्षमता को प्रभावित करता है। माइटो के कई अलग-अलग रूप हैं और रूप के आधार पर, यह एक या अधिक अंगों को बाधित कर सकता है और अंग विफलता का कारण बन सकता है।माइटो का कोई इलाज नहीं है. लेकिन माइटोकॉन्ड्रियल डोनेशन नामक आईवीएफ प्रक्रिया अब माइटो के कुछ रूपों से प्रभावित परिवारों को आशा प्रदान करती है कि वे आनुवंशिक रूप से संगद्ध माइटो से मुक्त बच्चे पैदा कर सकते हैं।2022 में ऑस्ट्रेलिया में माइटोकॉन्ड्रियल दान की अनुमति देने वाला कानून पारित होने के बाद, वैज्ञानिक अब यह देखने के लिए नैदानिक परीक्षण की तैयारी कर रहे हैं कि क्या माइटोकॉन्ड्रियल दान सुरक्षित है और काम करता है।माइटोकॉन्ड्रियल रोग क्या है?-माइटोकॉन्ड्रियल रोग दो प्रकार के होते हैं।एक परमाणु डीएनए में दोषपूर्ण जीन के कारण होता है, वह डीएनए जो हमें अपने माता-पिता दोनों से विरासत में मिलता है और जो हमें बनाता है कि हम कौन हैं।दूसरा माइटोकॉन्ड्रिया के स्वयं के डीएनए में दोषपूर्ण जीन के कारण होता है। दोषपूर्ण माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए के कारण होने वाला माइटो माँ के माध्यम से पारित हो जाता है। लेकिन बीमारी का खतरा अप्रत्याशित है, इसलिए जो मां केवल मामूली रूप से प्रभावित होती है उसके बच्चे में गंभीर बीमारी के लक्षण विकसित हो सकते हैं।माइटोकॉन्ड्रियल रोग विरासत में मिलने वाली चयापचय की सबसे आम स्थिति है जो 5,000 लोगों में से एक को प्रभावित करती है।कुछ लोगों में हल्के लक्षण होते हैं जो धीरे-धीरे बढ़ते हैं, जबकि अन्य में गंभीर लक्षण होते हैं जो तेजी से बढ़ते हैं। माइटो किसी भी अंग को प्रभावित कर सकता है, लेकिन जिन अंगों को बहुत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है जैसे मस्तिष्क, मांसपेशियां और हृदय, वे अन्य अंगों की तुलना में अधिक प्रभावित होते हैं।बचपन में प्रकट होने वाला माइटो अक्सर कई अंगों को शामिल करता है, तेजी से प्रगति करता है और इसके परिणाम खराब होते हैं।

वर्ल्ड स्किन हेल्थ डे : त्वचा को दें अंदर से पोषण

अपनी त्वचा को सेहमतंद बनाये रखने के लिये सिर्फबाहरी देखभाल ही काफी नहीं है, बल्कि हर दिन स्वच्छ एवं संतुलित आहार लेना आवश्यक है, जिसमें बादाम जैसे पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ भी मौजूद होने चाहिये। 15 जरूरी पोषक तत्वों से भरपूर बादाम हमारी त्वचा पर जादुई असर दिखाता है। रोजाना बादाम खाने से त्वचा की संरचना एवं टोन बेहतर होती जाती है। रोजाना सिर्फमुट्ठी भर बादाम को अपनी डेली रूटीन में शामिल करने से कई फायदे मिल सकते हैंए जिनमें हमारी त्वचा में निखार आना और उनमें सेहतमंद सुधार होना शामिल है। हर साल 8 जुलाई को वर्ल्ड स्किन हेल्थ डे मनाया जाता है। इस बार इस महत्वपूर्ण अवसर पर आईये त्वचा की बाहरी देखभान से आगे बढ़कर स्किन हेल्थ को अंदर से पोषित करने पर ध्यान केन्द्रित करें। स्किन एक्सपर्ट और कॉस्मेटोलॉजिस्ट गीतिका मित्तल गुप्ता ने कहा कि वर्ल्ड स्किन हेल्थ डे पर,आईये हमारे शरीर के प्राथमिक सुरक्षा कवच के रूप में त्वचा की महत्वपूर्ण भूमिका को सम्मान दें। पर्याप्त नींद लेना, सेहतमंद आहार, सनब्लॉक का इस्तेमाल और ऐक्टिव बने रहने जैसी सामान्य आदतों को अपनायें और त्वचा की सेहत सुधारें। मेरा मानना है कि प्रोटीन, हेल्दी फैट्स और विटामिन से भरपूर एक बैलेंस्ड डाइट को अपनाना बेहद जरूरी है ताकि त्वचा की सेहत को बरकरार रखा जा सके। अपने दैनिक आहार में बादाम को शामिल करें। क्योंकि इनमें प्रोटीनए विटामिन ई जिंक और कॉपर जैसे पोषक तत्व पाये जाते हैं, स्किन अच्छी सेहत के लिये जरूरी हैं। वास्तव मेंए बादाम का नियमित सेवन त्वचा को न्टठ किरणों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाने और त्वचा की बनावट में सुधार करने में भी मदद कर सकता है।

भारतीय मूल की नौ वर्षीय लड़की ने गायन से अमेरिकी दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया

न्यूयॉर्क। भारतीय मूल की नौ वर्षीय लड़की अपनी गायन प्रतिभा से अमेरिकी दर्शकों को प्रभावित कर रही है और एक लोकप्रिय कार्यक्रम मे बेहतरीन प्रदर्शन के लिए उसकी काफी प्रशंसा हो रही है। फ्लोरिडा की प्रनिस्का मिश्रा ने पिछले सप्ताह टीवी कार्यक्रम अमेरिकाज गॉट टैलेंट में टीना टर्नर का क्लासिक गाना 'रिवर डीप, माउंटेन हाई' गाकर तहलका मचा दिया। इस गाने की दमदार प्रस्तुति ने शो के जज साइमन कॉवेल और हेदी क्लम को बेहद प्रभावित किया। बिलबोर्ड डॉट कॉम की एक रिपोर्ट में कहा गया कि मंत्रमुग्ध कर देने वाले प्रदर्शन के लिए मिश्रा को प्रतिष्ठित गोल्डन बजर से सम्मानित किया गया। मिश्रा के हवाले से रिपोर्ट मे कहा गया हैमुझे हमेशा से ही गाना पसंद है। इससे मुझे खुशी मिलती है।

वीवो दुनिया में वाई सीरीज पर करेगा फोकस

ग्लोबल। इनोवेटिव ग्लोबल स्मार्टफोन ब्रांड वीवो ने भारत में वाई28एस और वाई28ई लॉन्च कर अपनी वाई सीरीज के पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। शानदार डिजाइन के साथ सेंसिबिलिटी को लाते हुए स्मार्टफोन मीडिया टेक डिमनसिटी 6100 5जी प्रोसेसर और 5000 एमएएच की दमदार बैटरी से लैस हैं जो यूज़र को निर्बाध उपयोग और एक शानदार अनुभव प्रदान करते हैं। वीवो इंडिया की कॉर्पोरेट स्ट्रेटेजी हेड गीताज चन्नाना ने कहा कि हमें अपनी वाई सीरीज लाइनअप में लेटेस्ट एडिशन वाई28एस और वाई28इ स्मार्टफोन किए जाने की घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है। लू सीरीज अपने शानदार डिजाइन और असाधारण कैमरा प्रदर्शन के लिए जानी जाती हैए जिसे युवा और तकनीक.प्रेमी उपयोगकर्ताओं के लिए तैयार किया गया है। ये दोनों स्मार्टफोन ग्राहक के इनोवेशन को आगे बढ़ाने की हमारी प्रतिबद्धता के प्रमाण हैं। बेहतर कैमरा प्रदर्शनए शानदार डिजाइन और टॉप परफॉर्मेंस के साथए हमें विश्वास है कि वाई28एस और वाई28इ हमारे यूजर्स की मूलभूत जरूरतों को पूरा करेंगे। इनकी कीमत 10 हजार उपर है।

मुहर्रम के दौरान पूरे पाकिस्तान में होगी सेना की तैनाती

इस्लामाबाद। पाकिस्तान सरकार ने शिया रैलियों पर आतंकवादी समूहों के हमलों की आशंका के बीच मुहर्म के दौरान कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए पूरे देश मे सेना तैनात करने का सोमवार को फैसला किया। इस्लामी कैलेंडर का पहला महीना मुहर्म सोमवार से शुरू हो गया। शिया मुसलमान इस्लाम के पैगंबर के नाती हुसैन इब्न अली की शहादत की याद मे महीने के पहले दस दिनो के दौरान जुलूस निकालते है। पाकिस्तान के आंतरिक मंत्रालय ने प्रांतो के अनुरोध के बाद नियमित सेना की टुकड़ियों को तैनात करने का फैसला किया। मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, सेना की तैनाती अनिश्चितकाल तक लागू रहेगी और इसका विवरण गिलगित बाल्टिस्तान, पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर और इस्लामाबाद सहित संबंधित प्रांतो के अधिकारियो के साथ अंतिम रूप दिया जाएगा।

इंडोनेशिया में सोने की अवैध खदान में भूस्खलन के कारण 12 लोगों की मौत

जकार्ता। इंडोनेशिया के सुलावेसी द्वीप पर मूसलाधार बारिश के कारण सोने की एक अवैध खदान के ढहने से कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। गोरोंटालो प्रांत के खोज एवं बचाव एजेंसी के प्रमुख हेरियांतो ने बताया कि इस प्रांत के दूरस्थ बोन बोलांगो मे एक सोने की खदान मे रविवार को करीब 100 ग्रामीण खुदाई कर रहे थे तभी आसपास की पहाड़ियों से कई टन मिट्टी गिरी जिससे उनके अस्थाई शिविर दब गए। उन्होंने बताया कि मलबे से 44 लोग किसी तरह से बाहर निकल आए तथा कुछ को बचावकर्ताओं ने जीवित बाहर निकाल लिया जिनमे छह घायल शामिल है।

ब्रिटेन के चुनाव में हार के बाद ऋषि सुनक ने पूर्व सांसदों से खेद जताया

लंदन। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री ने पिछले सप्ताह हुए आम चुनाव मे कंजर्वेटिव पार्टी के पराजित उम्मीदवारों को सप्ताहांत पर कॉल कर पार्टी के खराब प्रदर्शन के लिए खेद जताया। कंजर्वेटिव पार्टी हाउस कॉमन्स मे सिर्फ 121 सीट जीत सकी है। कई पूर्व सांसदो ने द डेली टेलीग्राफ को ब्रिटिश भारतीय सांसद से आए 'बहुत सहानुभूतिपूर्ण कॉल' के बारे में बताया। सुनक ने यॉर्कशायर में रिचमंड और नॉर्थलेरटन की अपनी सीट जीती है और पार्टी द्वारा उनके उत्तराधिकारी का चयन किए जाने तक वह विपक्ष के नेता बने रहेंगे।पार्टी के एक पराजित उम्मीदवार ने कहा, उन्होंने शनिवार की रात मुझे फोन करने के लिए समय निकाला और मुझे लगता है कि उन्होंने अन्य सांसदों को भी फोन करने के लिए समय निकाला है। वह यह कहने के लिए फोन कर रहे थे कि उन्हें बेहद खेद है कि मै अपनी सीट हार गया हूं। सुनक ने पिछले सप्ताह अपने भाषण मे कहा कि कंजर्वेटिव उम्मीदवारो और प्रचारको ने अथक परिश्रम किया लेकिन उन्हें सफलता नही मिली। उन्होंने कहा, मुझे खेद है कि हम आपके प्रयासो के अनुरूप परिणाम नही दे सके। इस बीच, नए प्रधानमंत्री कीअर स्टॉर्मर ने अपने कार्यकाल का पहला सप्ताहांत ब्रिटेन के विभिन्न हिस्सो की यात्रा मे बिताया।

न्यायालय ने पाकिस्तान के अटॉर्नी जनरल को कैदियों के परिवारों की शिकायतें दूर करने को कहा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को अटॉर्नी जनरल मंसूर अवान को आदेश दिया कि वह नौ मई को हुए दंगों के संदिग्धों के परिवारों की चिंताओं और शिकायतों को दूर करें जिन्होंने कहा है कि वे कैदियो से नही मिल पा रहे है। जियो न्यूज की खब के अनुसार, सात सदस्ईय पीठ का यह आदेश पिछले साल नौ मई की हिंसा मे शामिल नागरिकों की सैन्य अदालतों में सुनवाई के खिलाफ दायर अंतर-अदालती याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान आया। वर्ष 2023 मे 9-10 मई की घटनाओं से आशय कथित भ्रष्टाचार के मामले मे पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद देश के विभिन्न हिस्सों में हुए हिंसक विरोध प्रदर्शन से है। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के संस्थापक खान की गिरफ्तारी के बाद उनके समर्थकों ने सरकारी और सैन्य प्रतिष्ठानो पर हमला किया और तोड़फोड़ की। इसके बाद, सैन्य अदालतो मे दंगाइयों से जुड़े मुकदमों की सुनवाई शुरू हुई। आदेश में कहा गया, परिवारों ने कहा है कि वे कैदियो से नही मिल पा रहे है। अटॉर्नी जनरल को इन शिकायतों का समाधान करना चाहिए। इसके बाद अदालत ने सुनवाई 11 जुलाई तक के लिए स्थगित कर दी। छह सदस्ईय पीठ के खिलाफ आपत्ति जताए जाने के बाद शीर्ष अदालत ने मई में मामले को पीठ के पुनर्गठन के लिए प्रक्रिया समिति के पास भेज दिया था।

प्रतिबंधित जमात-उद-दावा की नई शाखा ने पाकिस्तान में राजनीतिक गतिविधियां फिर शुरू की

लाहौर। मुंबई आतंकवादी हमलो के मास्टरमाइंड हाफिज सईद के प्रतिबंधित संगठन जमात-उद-दावा (जेयूडी) की राजनीतिक शाखा ने करीब पांच महीने के अंतराल के बाद यहां पंजाब प्रांत में प्रदर्शन कर पाकिस्तान मे अपनी राजनीतिक गतिविधियां फिर से शुरू कर दी है। सईद के प्रतिबंधित समूहो का नया चेहरा माने जाने वाले पाकिस्तान मरकजी मुस्लिम लीग (पीएमएमएल) ने शुक्रवार को लाहौर में पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) सरकार के खिलाफ महंगाई और बिजली व रसोई गैस की कीमतों में वृद्धि के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शन को तबियाह कय्यूम और मुजम्मिल इकबाल हाशमी ने संबोधित किया, जिन्हे 2018 में अमेरिका ने वैश्विक आतंकवादियो की सूची में शामिल किया था। इस बीच, पंजाब मे मरयम नवाज के नेतृत्व वाली सरकार ने लाहौर में शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए धारा 144 के तहत चार या अधिक लोगो के इकट्ठा होने पर प्रतिबंध लगा दिया है। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ को जेल में बंद अपने नेता (खान) की रिहाई के लिए कोई विरोध प्रदर्शन करने से रोकने के लिए निषेधाज्ञा लागू की गई है। माना जा रहा है कि पीएमएमएल, जेल मे बंद हाफिज सईद के प्रतिबंधित समूहो का नया चेहरा है। इस संगठन ने फरवरी 2024 के आम चुनावो मे हिस्सा लिया था। पाकिस्तान के विभिन्न शहरो से इस संगठन द्वारा नामित कुछ उम्मीदवार या तो सईद के रिश्तेदार है या अतीत मे प्रतिबंधित लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी), जमात-उद-दावा (जेयूडी) या मिल्ली मुस्लिम लीग (एमएमएल) से जुड़े रहे है।

स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री हमले के बाद पहली बार राजधानी से बाहर निकले

ब्रातिस्लावा (स्लोवाकिया)। स्लोवाकिया के लोकप्रिय प्रधानमंत्री रॉबर्ट फिको ने उन पर हुए विफल हमले और अपना कार्यभार संभालने के बाद सोमवार को पहली बार राजधानी से बाहर यात्रा की। फिको ने कृषि मंत्री रिचर्ड ताकाक के साथ राजधानी ब्रातिस्लावा के उत्तर-पूर्व मे स्लोवेन्स्का नोवा वेस मे एक खेत का दौरा किया और फसल का निरीक्षण किया। वह छड़ी का सहारा लेकर चल रहे थे और उन्होने मीडिया के किसी सवाल पर कोई प्रतिक्रिया नही दी।15 मई को हुए हमले से उबरने के बाद यह राजधानी के बाहर उनकी पहली आधिकारिक यात्रा थी। राजधानी से 140 किलोमीटर उत्तर-पूर्व मे हण्डलोवा शहर मे समर्थकों का अभिवादन करते समय उनके पेट मे गोली मारी गई थी।हत्या के प्रयास के बाद फीको पहली बार शुक्रवार को सार्वजनिक रूप से सामने आए थे और उन्होने राष्ट्रीय अवकाश के दिन भाषण दिया था।

सिंगापुर ने 16 कीड़ों को मानव भोजन के रूप में इस्तेमाल करने की मंजूरी दी

सिंगापुर। सिंगापुर के खाद्य नियामक ने मनुष्यों के भोजन के रूप मे झीगुर, टिड्डे और टिड्डियों जैसे कीड़ों की लगभग 16 प्रजातियो के इस्तेमाल की मंजूरी दे दी है। द स्ट्रेट्स टाइम्स समाचार पत्र की रिपोर्ट के अनुसार, यह बहुप्रतीक्षित घोषणा उद्योग जगत के उन कारोबारियो के लिए खुशखबरी है जो चीन, थाईलैंड और वियतनाम मे मिलने वाले कीड़ों की सिंगापुर में आपूर्ति और खानपान का कारोबार करते है। भोजन के लिए स्वीकृत कीड़ो मे झीगुर, टिड्डे, टिड्डियां, मीलवर्म (भोजनकृमि) और रेशमकीट की विभिन्न प्रजातियां शामिल है। सिंगापुर खाद्य एजेंसी (एसएफए) ने कहा कि जो लोग मानव उपभोग या पशुधन के चारे के लिए कीड़ों का आयात या पालन करना चाहते है, उन्हें एसएफए के दिशानिर्देशो का पालन करना होगा। इन दिशानिर्देशो के तहत, इस बात का दस्तावेजी सबूत मुहैया कराना अनिवार्य है कि आयातित कीड़ों का खाद्य सुरक्षा नियंत्रण से संबंधित विनियमित प्रतिष्ठानो में पालन किया गया और इन्हें जंगलों से नही लाया गया। एजेंसी ने कहा कि जो कीड़े एसएफए की 16 कीटो की सूची मे नही है, उन्हे यह सुनिश्चित करने के लिए आकलन से गुजरना होगा कि वे उपभोग के लिए सुरक्षित है।

चिनफिंग ने रूस, यूक्रेन के बीच सीधा संवाद शुरू कराने में मदद का आह्वान किया

बीजिंग। चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने सोमवार को हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओरबान से मुलाकात के दौरान वैश्विक महाशक्तियो से सीधा संवाद बहाल करने मे रूस और यूक्रेन की मदद करने का आह्वान किया। सरकारी प्रसारणकर्ता सीसीटीवी ने यह जानकारी दी।ओरबान पिछले सप्ताह रूस और यूक्रेन की यात्रा करने के बाद अचानक चीन पहुंचे। वह यूक्रेन मे शांति समझौते की संभावनाओ पर चर्चा करने के लिए ए यात्राएं कर रहे है।सीसीटीवी के अनुसार, ओरबान ने शांति के लिए चीन की पहल की तारीफ करते हुए उसे सकारात्मक और महत्वपूर्ण बताया तथा उसे वैश्विक उथल-पुथल के बीच स्थिरता लाने वाली ताकत करार दिया।ओरबान ने फेसबुक पर एक पोस्ट में कहा कि रूस और यूक्रेन के अलावा युद्ध खत्म होना तीन वैश्विक महाशक्तियों... अमेरिका, यूरोपीय संघ और चीन के निर्णय पर निर्भर करता है। उन्होंने शी चिनफिंग से हाथ मिलाते हुए अपनी एक तस्वीर भी साझा की।शी से ओरबान की दो महीने पहले भी मुलाकात हुई थी जब चीन के राष्ट्रपति यूरोप के तीन देशो की अपनी यात्रा के दौरान हंगरी पहुंचे थे।

पेरिस ओलंपिक में भारत के मिशन प्रमुख होंगे नारंग

● सिंधु महिला ध्वजवाहक

भाषा। नई दिल्ली

लंदन ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता निशानेबाज गगन नारंग ने सोमवार को पेरिस ओलंपिक के लिए भारत के मिशन प्रमुख के रूप में मुक्केबाज मेरीकोम की जगह ली। पेरिस खेलों के उद्घाटन समारोह में दिग्गज बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु भारत की महिला ध्वजवाहक होंगी।भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की अध्यक्ष पीटी उषा ने बताया कि मेरीकोम के इस्तीफे के बाद उप मिशन प्रमुख नारंग को मिशन प्रमुख बनाया जाना स्वत: पसंद थी। उषा ने विज्ञप्ति में कहा, मैं अपने दल की अगुआई के लिए ओलंपिक पदक विजेता को ढूंढ रही थी और मेरे युवा साथी मेरीकोम के उपयुक्त विकल्प हैं। पीटीआई ने इससे पहले खबर दी थी कि नारंग भारतीय दल का मिशन प्रमुख बनने की दौड़ में शामिल हैं। उषा ने कहा, मुझे यह घोषणा करते हुए भी खुशी हो रही है कि दो ओलंपिक पदक जीतने वाली भारत की एकमात्र महिला खिलाड़ी पीवी सिंधु उद्घाटन समारोह में टेबल टेनिस खिलाड़ी ए शरत कमल के साथ महिला ध्वजवाहक होंगी। उन्होंने कहा, मुझे विश्वास है कि हमारे खिलाड़ी पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों में भारत के लिए सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने के लिए अच्छी तरह तैयार हैं। छह बार की विश्व चैम्पियन मेरीकोम ने अप्रैल में पद से यह कहकर इस्तीफा दे दिया था कि निजी कारणों से उनके पास इसके अलावा कोई चारा नहीं है। मिशन प्रमुख महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद है। मिशन प्रमुख खिलाड़ियों की जरूरतों का ध्यान रखने के साथ आयोजन समिति के साथ संपर्क सूत्र का भी काम करता है। सिंधु उद्घाटन समारोह में टेबल टेनिस खिलाड़ी अचंत शरत कमल के साथ भारत की ध्वजवाहक होंगी। आईओसी ने 2020 में प्रोटोकॉल में बदलाव करके एक देश से एक महिला और एक पुरूष खिलाड़ी को संयुक्त रूप से ध्वजवाहक बनने की अनुमति दी थी। तोक्यो ओलंपिक में मेरीकोम और भारतीय हॉकी कप्तान मनप्रीत सिंह ध्वजवाहक थे।

हार नहीं माननी है और अंत तक लड़ना है, टी20 विश्व कप जीत बनी हॉकी दिग्गज श्रीजेश की प्रेरणा

बेंगलुरू अंत तक हार नहीं माननी है और लड़ते रहना है , भारतीय क्रिकेट टीम की टी20 विश्व कप में खिताबी जीत ने अपना चौथा ओलंपिक खेलने जा रहे भारतीय हॉकी के महान गोलकीपर पी आर श्रीजेश को भी प्रेरित किया है जो इसे पेरिस में याद रखेंगे। भारत ने दक्षिण अफ्रीका को टी20 विश्व कप के रोमांचक फाइनल में हार की कगार पर पहुंचने के बाद हराया और 11 साल बाद आईसीसी खिताब जीता। श्रीजेश ने भाषा को दिए इंटरव्यू में कहा , मैने फाइनल मैच देखा था। मैने इससे सबसे बड़ी सीख ली है कि आखिरी गेंद से पहले जश्न नहीं मनाना है। दक्षिण अफ्रीका 15वें ओवर तक आसानी से जीत रहा था लेकिन भारतीय टीम ने उम्मीद नहीं छोड़ी और हार की कगार पर पहुंचकर जीत दर्ज की। भारत के लिए 328 मैच खेल चुके 36 वर्ष के इस दिग्गज ने कहा , इससे हमें ही नहीं बल्कि ओलंपिक जाने वाले हर खिलाड़ी को सीखना चाहिए। हार नहीं माननी है, इंतजार करना है और अंतिम समय तक डटे रहना है, जीत जरूर मिलेगी। मैं इसे ओलंपिक में याद रखूंगा।

ओलंपिक से पहले स्विटजरलैंड रवाना भारतीय हॉकी टीम

बेंगलुरू भारतीय पुरूष हॉकी टीम पेरिस ओलंपिक से पहले स्विटजरलैंड में मशहूर माइक हार्न्स बेस के लिए रवाना हो गई जिसके बाद नीदरलैंड में एक अभ्यास शिविर में भाग लेगी। स्विटजरलैंड में तीन दिवसीय शिविर खिलाड़ियों को मानसिक रूप से मजबूत बनाने के लिए लगाया गया है। इसके बाद टीम नीदरलैंड में अभ्यास मैच खेलेगी और फिर पेरिस रवाना होगी। कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा कि ओलंपिक से पहले आगामी अनुभव टीम को मानसिक और शारीरिकरूप से सर्वश्रेष्ठ स्थिति में रखने के लिए काफी उपयोगी होंगे। उन्होंने कहा , हमने अभी बेंगलुरू में दो सप्ताह का शिविर खत्म किया है। अब स्विटजरलैंड में माइक हॉर्न जा रहे है जो साहसिक गतिविधियों का केंद्र है। इसके बाद टीम नीदरलैंड और मलेशिया से अभ्यास मैच खेलेगी। भारतीय टीम 20 जुलाई को पेरिस पहुंचेगी।

मौजूदा दौर के खिलाड़ी कमजोर दिल के नहीं हैः बिंद्रा

भाषा। नई दिल्ली

भारत के पहले व्यक्तिगत स्पर्धा के ओलंपिक चैंपियन अभिनव बिंद्रा का मानना है कि खिलाड़ियों की मौजूदा पीढ़ी उनके समय के कमजोर दिल वाले खिलाड़ियों की तुलना में अधिक मजबूत है।बीजिंग ओलंपिक (2008) में निशानेबाजी में स्वर्ण पदक जीतने वाले बिंद्रा ने 26 जुलाई से शुरू होने वाले ओलंपिक खेलों के लिए देश की तैयारियों पर फ्रांस के दूतावास और इंडो-फ्रेंच चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (आईएफसीसीआई) के साथ आयोजित एक पैनल चर्चा के दौरान भारतीय दल को सलाह दी कि वे अतीत या भविष्य के बारे में सोचने की गलती न करें। भारत के लगभग 125 खिलाड़ियों ने इन खेलों के लिए क्वालीफाई कर लिया है, जो देश के इतिहास में सबसे ज्यादा है। मैं एक ऐसी पीढ़ी से आया हूँ जो स्वभाव से कमजोर दिल वाली थी। आज के दौर के खिलाड़ियों का आत्मविश्वास कहीं अधिक है। वे इन खेलों में सिर्फ हिस्सा लेना नहीं बल्कि पदक जीतना चाहते है। एक खिलाड़ी कोई और पदक नहीं बल्कि स्वर्ण पदक जीतना चाहते है। यह हमारे समाज का प्रतिबिंब है कि पिछले कुछ वर्षों में यह कैसे विकसित हुआ है। इस 41 वर्षीय खिलाड़ी ने कहा कि खेलों को देखने और उसके बारे में बात करने का तरीका बदल गया है लेकिन जिस चीज में बदलाव नहीं आया है वह है एथलीटों को मिलने वाली कड़ी प्रतिस्पर्धा। बिंद्रा ने कहा, अब अलग तरह से बातचीत होती है। उन्होंने कहा, हालांकि कई समानताएं है, उन्हें पेरिस में अपना दमखम दिखाना होगा और उस विशेष दिन पर प्रदर्शन करना होगा। यह किसी भी तरह से आसान नहीं होने वाला है। उन्हें दबाव झेलना सीखना होगा। वर्षों से सीखी गई प्रक्रिया, अपने कौशल को खेल में उतारने पर ध्यान केंद्रित करना होगा। उन्होंने कहा, एथलीटों की सबसे बड़ी गलती यह है कि वे या तो अतीत में जीते हैं या भविष्य के बारे में सोच रहे हैं। वे इस वास्तविकता के बारे में भूल जाते हैं मौजूदा समय की अहमियत सबसे ज्यादा है। भारत में फ्रांस के राजदूत थिएरी माथौ ने कहा कि पेरिस असाधारण खेल आयोजित करने के लिए तैयार है।

ह्यूस्टन स्क्वाश के फाइनल में हारे चोटरानी

नई दिल्ली। भारत के वीर चोटरानी ह्यूस्टन में 9000 डॉलर इनामी पीएसए चैलेंजर टूर प्रतियोगिता कान्सो ओपन स्क्वाश के फाइनल में पाकिस्तान के मुहम्मद अशाब इरफान से पांच गेम तक चले रोमांचक मुकाबले में 2-3 से हार गए। विश्व में 106वें स्थान पर काबिज और यहां चौथे वरीय चोटरानी ने दो बार वापसी करके बराबरी की लेकिन तीसरी वरीयता प्राप्त इरफान ने रविवार को खेले गए फाइनल में निर्णायक गेम अपने नाम करके खिताब जीता। पाकिस्तान के खिलाड़ी में 80 मिनट तक चले इस मैच में 11-7 8-11 12-10 8-11 11-8 से जीत दर्ज की।

लीप जिम्नास्टिक के युवाओं ने ओलंपियन दीपा करमाकर से सीखे गुर

मुंबई। रियो ओलंपिक में चौथे स्थान पर रही भारतीय जिम्नास्ट दीपा करमाकर ने जेएसडब्ल्यू समूह की पहल लीप जिम्नास्टिक में युवा खिलाड़ियों के साथ अपने अनुभव साझा किए। दीपा ने यहां परिसर का दौरा करके युवाओं को शीर्ष स्तर पर कामयाब होने के लिए कई उपयोगी टिप्स दिए। संस्था द्वारा जारी विज्ञप्ति में दीपा ने कहा , मुझे लगता है कि भारतीय जिम्नास्टिक की अगली पीढी को बढावा देने के लिए इस तरह की पहल जरूरी है। इस तरह से उन्हे विश्व स्तर पर चमकने के लिए मौके और मंच मिलेगा।

ओडिशा के दो खिलाड़ियों को 15 लाख देने की घोषणा

भुवनेश्वर। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने सोमवार को हॉकी खिलाड़ी अमित रोहिदास और दिग्गज भाला फेंक खिलाड़ी किशोर जेना के लिए 15-15 लाख रुपए की प्रोत्साहन राशि की घोषणा की। ए दोनों पेरिस ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। एक आधिकारिक बयान के अनुसार माझी ने उम्मीद जताई कि प्रोत्साहन राशि ओडिशा के दो खिलाड़ियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन करने और देश को गौरवांवित करने के लिए प्रेरित करेगी। माझी ने कहा कि जेना और रोहिदास ने पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करके अपने गृह नगरों के साथ-साथ पूरे राज्य को गौरवांवित किया है।

मालदीव ने टी20 विश्व विजेता भारतीय टीम को आमंत्रित किया

माले। मालदीव के पर्यटन संघ और उसके विपणन एवं जनसंपर्क निगम ने हाल ही में टी20 विश्व चैंपियन बनी भारतीय क्रिकेट टीम को जीत का जश्न मनाने के लिए अपने देश आमंत्रित किया है। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली भारतीय टीम ने बारबडोस में 29 जून को फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को सात रन से हराकर ट्रॉफी जीती थी। दोनों निकायों ने एक संयुक्त बयान में कहा, मालदीव मार्केटिंग एंड पब्लिक रिलेशंस कॉरपोरेशन (एमएमपीआरसी विजिट मालदीव) ने मालदीव एसोसिएशन ऑफ टूरिज्म इंडस्ट्री (एमएटीआई) के सहयोग से भारतीय राष्ट्रीय क्रिकेट टीम को एक विशेष और खुला निमंत्रण दिया है।

रेहान थॉमस अपने दूसरे पेशेवर टूर्नामेंट में ही शीर्ष 10 में शामिल रहे

रबात (मोरक्को)। भारत के रेहान थॉमस ने 20 लाख डालर इनामी इंटरनेशनल सीरीज मोरक्को गोल्फ टूर्नामेंट में शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए अपनी दूसरी पेशेवर प्रतियोगिता में ही शीर्ष 10 में जगह बनाई। दुबई में रहने वाले इस भारतीय खिलाड़ी ने चार दौर में 69-73-69-72 का स्कोर बनाया। उनका कुल योग नौ अंडर रहा जिससे वह संयुक्त आठवें स्थान पर रहे।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अंतिम महिला टी-20 में भारत को करनी होगी बेहतर गेंदबाजी

चेन्नई। भारतीय महिला टीम तीन मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में मंगलवार को यहां आखिरी मैच में जब दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मैदान में उतरेगी तक उसके सामने जीत दर्ज कर इसे।-। से बराबर करने की चुनौती होगी। इसके लिए हालांकि भारतीय गेंदबाजों को अपने प्रदर्शन के स्तर को उंचा उठाना होगा जिसके खिलाफ दक्षिण अफ्रीका ने पहले मैच में नौ विकेट पर 189 रन बनाकर 12 रन से जीत दर्ज की। दूसरे मैच में बारिश के कारण भारत को बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला लेकिन गेंदबाजों ने इस मुकाबले में भी छह विकेट पर 177 रन लुटाए थे। तीसरे टी20 में पर भी खराब मौसम का खतरा मंडरा रहा है क्योंकि मंगलवार को भी बारिश की 30 से 40 प्रतिशत संभावना है। दोनों मैचों में दो-दो विकेट लेने वाली पूजा वस्त्राकर और स्पिनर दीप्ति शर्मा को छोड़कर, अधिकांश भारतीय गेंदबाज प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहे है। रेणुका सिंह के पहले मैच में असरहीन रहने के बाद दूसरे मुकाबले में सजीवन सजना को मौका मिला लेकिन इससे भी टीम को कोई फायदा नहीं हुआ। श्रेयंका पाटिल और राधा यादव ने रविवार को एक-एक विकेट लिया लेकिन यह दोनों गेंदबाज भी रन रोकने में नाकाम रहे। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर चाहेंगी कि श्रृंखला दांव पर होने के कारण उनके गेंदबाज कड़ी मेहनत करें। बल्लेबाजी के मोर्चे पर पहले मैच में भारतीयों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। जेमिमा रोड्रिग्स (नाबाद 53), स्मृति मंधाना (46), हरमनप्रीत (35), शेफाली वर्मा (18) और दयालन हेमलता (14) ने बल्ले से अच्छा योगदान दिया। टी20 में रविवार को पदार्पण करने वाली विकेटकीपर उमा छेत्री के टीम में बने रहने की संभावना है। टीम प्रबंधन बल्ले से उनके योगदान को देखना चाहेगा। दूसरी ओर दक्षिण अफ्रीका के लिए तजमिन ब्रिट्स ने लगातार दो अर्धशतक लगाकर शानदार लय में होने का सबूत दिया है।

श्रीलंका के खिलाफ वनडे से बाहर रह सकते हैं रोहित, विराट और बुमराह

भाषा। नई दिल्ली

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा और चैम्पियन बल्लेबाज विराट कोहली को अगस्त में श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की वनडे श्रृंखला से आराम दिया जा सकता है और केएल राहुल या हार्दिक पंड्या इस प्रारूप में कप्तानी कर सकते हैं। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को भी वनडे श्रृंखला से ब्रेक दिया जा सकता है। समझा जाता है कि रोहित और विराट ने बीसीसीआई से लंबा ब्रेक मांगा है चूंकि दोनों आईपीएल की शुरूआत से लगातार खेल रहे हैं। सैतीस बरस के रोहित ने छह महीने से ब्रेक नहीं लिया है। उन्होंने दिसंबर जनवरी में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला से लगातार खेला है। उसके बाद अफगानिस्तान के खिलाफ टी20, इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला, आईपीएल और टी20 विश्व कप शामिल है। बोर्ड के एक सूत्र ने बताया , चैम्पियंस ट्रॉफी से पहले इंग्लैंड के खिलाफ तीन वनडे तैयारी के लिए काफी है। इसके बाद अगले कुछ महीने दोनों टेस्ट को प्राथमिकता देंगे क्योंकि भारत को सितंबर से जनवरी के बीच दस टेस्ट खेलने हैं।

क्विक न्यूज

रोजारियो, मूसा पुरुष फुटबॉल टीम के मुख्य कोच के लिए आवेदन करने वालों में शामिल

नई दिल्ली। मोहन बागान और ईस्ट बंगाल के पूर्व कोच स्टेनली रोजारियो और नॉर्थईस्ट यूनाईटेड के मौजूदा सहायक कोच नौशाद मूसा उन भारतीयों में शामिल है जिन्होंने राष्ट्रीय पुरुष टीम के मुख्य कोच के पद के लिए आवेदन किया है। यह पद इगोर स्टिमक को बर्खास्त किए जाने के बाद से खाली पड़ा है।अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) को दुनिया भर से कुल मिलाकर 291 आवेदन मिले है। इनमें से 100 आवेदनकर्ता यूएफा प्रो लाइसेंस डिप्लोमा धारक है जबकि 20 के पास एएफसी प्रो लाइसेंस डिप्लोमा है। तीन के पास कोनमेबोल (दक्षिण अमेरिका फुटबॉल परिसंघ) लाइसेंस है। रोजारियो और मूसा एएफसी प्रो लाइसेंस डिप्लोमा धारक है। मोहन बागान सुपर जाइंट्स को 2023-24 आईएसएल लीग शील्ड जिताने में मदद करने वाले एंटोनियो लोपेज हबास ने भी आवेदन किया है। एआईएफएफ अधिकारी ने नाम गोपनीय रखने की शर्त पर पीटीआई को बताया, स्टेनली रोजारियो और नौशाद मूसा उन भारतीयों में शामिल है जिन्होंने आवेदन किया है और एएफसी प्रो लाइसेंस धारक है। एंटोनियो हबास ने भी आवेदन किया है। पता चला है कि छांटे गए उम्मीदवारों के नाम 20 जुलाई को एआईएफएफ कार्यकारी समिति की बैठक में रखे जाएंगे।

यूरो 2024 : सेमीफाइनल में स्पेन का सामना काइलियान एमबाप्पे की फ्रांस से

म्युनिख। स्पेन और फ्रांस यूरोपीय फुटबॉल चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में मंगलवार को आमने सामने होंगे जिसमें टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा गोल करने वाली टीम का सामना सबसे कम गोल करने वाली टीम से होगा जिसके स्टार खिलाड़ी काइलियान एमबाप्पे भी फॉर्म में नही है। इस मैच के विजेता का सामना रविवार को बर्लिन में फाइनल में इंग्लैड या नीदरलैंड से होगा। इंग्लैड और नीदरलैंड का सेमीफाइनल बुधवार को खेला जाएगा। स्पेन और फ्रांस दोनों के क्वार्टर फाइनल अतिरिक्त समय तक खिंचे। स्पेन ने अतिरिक्त समय के आखिरी मिनट में सब्स्टीट्यूट मिकेल मेरिनो के गोल के दम पर मेजबान जर्मनी को 2-1 से हराया जबकि फ्रांस ने पेनल्टी शूटआउट में पुर्तगाल को हराया। फ्रांस का कोई खिलाड़ी ओपन प्ले में यूरो 2024 में गोल नही कर सका। फ्रांस को दो आत्मघाती गोलों और पेनल्टी में एमबाप्पे के एक गोल का फायदा मिला। स्पेन ने टूर्नामेंट में 11 गोल किए। एमबाप्पे का सामना रीयाल मैड्रिड के अपने कई साथी खिलाड़ियों से होगा। आस्ट्रिया के खिलाफ पहले मैच में नाक टूटने के बाद वह फिर रक्षात्मक मास्क पहनकर खेलेंगे।

सीएमएफबाय नथिंग स्पोर्ट्स मोड को देगा बढ़ावा

नई दिल्ली। लंदन की टेक्नोलॉजी कंपनी नथिंग के उपब्रांड सीएमएफ ने तीन नए प्रोडक्ट सीएमएफ फोन 1, सीएमएफ वॉच प्रो 2 और सीएमएफबड्स प्रो 2 को पेश कर दिया है। यह एक वर्सटाइल और स्टाइलिश स्मार्टवॉच है, इसमें एक इंटरचेंजेबल बेज़ल डिज़ाइन 1.32, एमोलेड ऑलवेजऑन डिस्प्ले है जो हाई रिज़ॉल्यूशन प्रदान करता है। इसके साथ ही इसमें 100 से अधिक वॉच फेस कस्टमाइज़ेबल विकल्प भी दिए गए हैं। यह 120 से ज्यादा स्पोर्ट्स मोड और 5 स्पोर्ट के ऑटोमेटिक रिकॉग्निशन को सपोर्ट करता है। इसमें चौबीसों घंटे हेल्थ मॉनीटरिंग, ब्लूटूथ कॉल, म्यूजिक कंट्रोल और नोटिफिकेशन एवं रिमोट कैमरा कंट्रोल जैसे इंटेलिजेंट फीचर्स भी दिए गए हैं। सीएमएफ फ़ोन 1 दो मॉडल में उपलब्ध होगा 6जी बी . 128 जी बी वैरिएंट की कीमत 15,999 है और 8 जी बी . 128 जी बी वैरिएंट की कीमत 17,999 है। डे 1 सेल के मौके पर सीमित अवधि के लिएए ग्राहक खास बैंक ऑफ़र का लाभ उठा सकते हैं। जिससे वे 6 जी बी, 128 जी बी वैरिएंट को 14,999 और 8 जी बी . 128 जी बी वैरिएंट को 16,999 में खरीद सकते हैं। सीएमएफ फ़ोन 1 के लिए एक्सेसरीज़ में 1499 का केस 799 का स्टैंड 799 का लैनयार्ड और 799 का कार्ड केस शामिल है। इसके दमदार कैमरा सिस्टम में सटीक बोकेह इफ़ेक्ट के लिए एक डेडिकेटेड पोर्ट्रेट सेंसर के साथ सोनी 50 एम पी रियर कैमरा और 16 एमपी फ्रंट कैमरा दिया गया है। सहज इंटरेक्शन के लिए चमकदार 6.67 इंच सुपर एमोलेड डिस्प्ले में एक अल्ट्रा.स्मूथ 120 हर्ट्ज एडेप्टिव रिफ़्रेश रेट दी गई है।

भारतीय महिला टीम अंतरराष्ट्रीय मैत्री मैच में म्यांमा पर पहली जीत दर्ज करने उतरेगी

नई दिल्ली।भारतीय महिला फुटबॉल टीम मंगलवार को यांगून में होने वाले दोस्ताना मैच मे अपने से ऊंची रैंकिंग वाली म्यांमा टीम पर जीत दर्ज करने के इरादे से उतरेगी। विश्व रैंकिंग मे 67वे स्थान पर काबिज भारत ने 54वी रैंकिंग वाली म्यांमा के खिलाफ अब तक पांच मे से एक भी मैच नही जीता है। चार मैच हारे और एक ड्रॉ रहा। दोनो टीमो के बीच आखिरी मुकाबला 2019 मे एएफसी महिला ओलंपिक क्वालीफायर में हुआ था जो 3-3 से ड्रॉ रहा। संध्या रंगनाथन, संजू और एन रतनबाला देवी सभी उस टीम का हिस्सा थी और मौजूदा टीम मे भी है। इन्होने उस मैच में गोल दागे थे। इससे पहले भारतीय टीम चार बार एएफसी महिला एशियाई कप क्वालीफायर में म्यांमा से हारी है।

भारत के खिलाफ श्रृंखला से पूर्व जयसूर्या श्रीलंका के अंतरिम कोच नियुक्त

कोलंबो। श्रीलंका के पूर्व कप्तान सनत जयसूर्या को इस महीने के अंत मे भारत के खिलाफ होने वाली सीमित ओवरो की घरेलू श्रृंखला से पहले टीम का अंतरिम मुख्य कोच नामित किया गया है। देश के क्रिकेट बोर्ड का कहना है कि अगले कुछ महीनो में स्थाई समाधान मिलने तक वह टीम का मार्गदर्शन करने के लिए उपयुक्त व्यक्ति है। भारतीय टीम 27 जुलाई से शुरू होने वाले तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय और इतने ही वनडे मैचो के लिए श्रीलंका का दौरा करेगी। श्रीलंका क्रिकेट (एसएलसी) ने यहां जारी बयान मे कहा, श्रीलंका क्रिकेट सनत जयसूर्या को राष्ट्रीय टीम के अंतरिम प्रमुख कोच के रूप मे नियुक्त करने की घोषणा करता है। वह सितंबर 2024 मे श्रीलंका के इंग्लैंड दौरे के पूरा होने तक इस पद पर कार्य करेंगे। आक्रामक बल्लेबाजी के साथ स्पिन गेंदबाजी करने वाले 55 साल के पूर्व वामहस्त खिलाड़ी जयसूर्या इंग्लैंड के क्रिस सिल्वरवुड की जगह अंतरिम आधार पर टीम की जिम्मेदारी संभालेगे। सिल्वरवुड ने टी20 विश्व कप मे टीम टीम के खराब प्रदर्शन के बाद इस्तीफा दे दिया था।

मुंबई सिटी ने भारतीय स्ट्राइकर डेनियल लालहलिमपुइया को अपने साथ जोड़ा

मुंबई। मुंबई सिटी एफसी ने भारतीय स्ट्राइकर डेनियल लालहलिमपुइया को इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) फुटबॉल टूर्नामेंट के आगामी सत्र के लिए फ्री ट्रांसफर पर अपने साथ जोड़ा है। मिजोरम के रहने वाले 26 साल के लालहलिमपुइया पिछले दो सत्र मे पंजाब एफसी की टीम का हिस्सा थे। वह पिछले सत्र मे आईएसएल के तीन मैचों में खेले लेकिन गोल करने में नाकाम रहे। वह पिछले सत्र मे सभी टूर्नामेंट मे नौ मैच खेले लेकिन कोई गोल नही कर पाए। चंडीगढ़ फुटबॉल अकादमी के साथ अपने युवा करियर की शुरुआत करने के बाद लालहलिमपुइया एआईएफएफ एलीट अकादमी से जुड़े।

अश्विन ने ग्लोबल चेस लीग में टीम खरीदी

नई दिल्ली। भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन अमेरिकन गैम्बिट्स टीम के सह मालिक बन गए हैं जो ग्लोबल चेस लीग (जीसीएल) के दूसरे सत्र में हिस्सा लेने वाली नई टीम है। जीसीएल टेक महिंद्रा और अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ के संयुक्त स्वामित्व वाली लीग है। लंदन में तीन से 12 अक्टूबर तक होने दूसरे सत्र के लिए लीग ने सोमवार को छह फ्रेंचाइजी को पेश किया। जाने माने व्यवसाई प्रचुर पीपी, वेंकट के नारायण और अश्विन के स्वामित्व वाली अमेरिकन गैम्बिट्स टूर्नामेंट में चिंगारी गल्फ टाइटंस की जगह लेगी। हम अमेरिका गैम्बिट्स को शतरंज जगत के सामने पेश करके रोमांचित हैं।

इटली के तीन खिलाड़ी क्वार्टर फाइनल में

● विबलडन टेनिस

● रिबाकिना और स्वितोलिना भी जीती

भाषा। लंदन

इटली के लोरेंजो मुसेत्ती ने पांच फुट आठ इंच लंबे फ्रांस के जियोवान्नी एमपेत्सी को हराकर पहली बार किसी ग्रैंडस्लैम क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। मुसेत्ती ने 21 वर्ष के प्रतिद्वंद्वी को विम्बलडन प्री क्वार्टर फाइनल में 4- 6, 6- 3, 6-3, 6 -2 से मात दी। इससे पहले ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन यानिक सिनर और महिला वर्ग में सातवीं रैंकिंग वाली जैसमीन पाओलिनी ने भी अंतिम आठ में जगह बना ली। यह पहली बार हुआ है कि इटली के तीन खिलाड़ी किसी ग्रैंडस्लैम के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे हों।सिनर ने 14वीं वरीयता प्राप्त बेन शेल्टन के खिलाफ 6-2, 6-4, 7-6 (9) से जीत दर्ज की। उनका अगला मुकाबला दानिल मेदवेदेव से होगा। एक अन्य क्वार्टर फाइनल मैच कार्लोस अल्काराज और टॉमी पॉल के बीच खेला जाएगा। गत चैंपियन अल्काराज ने 16वें वरीय उगो हम्बर्ट को 6-3, 6-4, ।-6, 7-5 से पराजित किया। मुसेत्ती का सामना अलेक्जेंडर ज्वेरेव या टेलर फ्रिट्ज से होगा। दुनिया के नौवें नंबर के खिलाड़ी एलेक्स डि मिनौर ने फ्रांस के आर्थर फिल्स को 6- 2, 6-4, 4-6, 6-3 से हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। अब उनका सामना सात बार के चैम्पियन नोवाक जोकोविच या होल्गर रूने से होगा। पॉल ने रॉबर्टो बॉतिस्ता अगुट को 6-2, 7-6 (3), 6-2 से हरा कर पहली बार विंबलडन के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। मेदवेदेव ने ग्रिगोर दिमित्रोव के पहले सेट में पांव पर चोट लग जाने के कारण बाहर हो जाने से अंतिम आठ में प्रवेश किया। महिला वर्ग में मेडिसन कीज के तीसरे सेट में 5-5 के स्कोर पर हट जाने के कारण जैस्मीन पाओलिनी ने क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। पाओलिनी का अगला मुकाबला एम्मा नवारो से होगा, जिन्होंने मौजूदा अमेरिकी ओपन चैंपियन कोको गॉफ को 6-4, 6-3 से हराया। क्वालीफायर लुलु सन भी क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई है ।

पिछले कुछ दिनों से सपनों में जी रहा हूंः बुमराह

भाषा नई दिल्ली

भारतीय खिलाड़ियों के टी20 विश्व कप का चैंपियन बनने के बाद स्वदेश में मिले शानदार स्वागत के लिए आभार व्यक्त करने की कड़ी में गेंदबाजी के अगुआ जसप्रीत बुमराह ने कहा कि वह पिछले कुछ दिनों से सपनों में जी रहे हैं। इस 30 वर्षीय तेज गेंदबाज ने अमेरिका और वेस्टइंडीज की संयुक्त मेजबानी में खेले गए टूर्नामेंट में 15 विकेट लिए। बुमराह ने टी20 विश्व कप में भारत की 17 साल बाद खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाई। उन्हें टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। बुमराह ने एक्स पर पोस्ट किया, मैं पिछले कुछ दिनों से बहुत आभारी हूं। मैं सपनों में जी रहा हूं और इसने मुझे खुशी और कृतज्ञता से भर दिया है। इस तेज गेंदबाज ने इसके साथ एक वीडियो भी पोस्ट किया है जिसमें स्वदेश लौटने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ नाश्ते और मुंबई में लाखों प्रशंसकों के साथ विजय परेड के अंश शामिल हैं। 42 सेकंड की इस क्लिप में गुरुवार को परेड के बाद सम्मान समारोह के दौरान विराट कोहली के भाषण का ऑडियो भी शामिल है जिसमें वह बुमराह के योगदान की प्रशंसा कर रहे हैं। बुमराह ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ फाइनल में हार्दिक पांड्या के साथ मिलकर भारत को शानदार वापसी दिलाई थी। दक्षिण अफ्रीका को एक समय 30 गेंद पर 30 रन चाहिए थे लेकिन इन दोनों ने मिलकर उसकी बल्लेबाजी को थर्रा दिया और भारत सात रन से जीत दर्ज करने में सफल रहा। कोहली ने वानखेड़े स्टेडियम में सम्मान समारोह के दौरान कहा था कि बुमराह जैसा खिलाड़ी कई पीढ़ियों में एक बार जन्म लेता है। इसके बाद स्टेडियम में बुमराह के नाम की गूंज सुनाई देने लगी।विश्व कप के बाद टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले कोहली ने कहा था, मैं चाहता हूं कि सभी उस खिलाड़ी की प्रशंसा करें जिसने हमेशा हमें बार-बार वापसी दिलाई है। यह अद्भुत प्रदर्शन था। उस जैसा गेंदबाज कई पीढ़ियों में एक बार जन्म लेता है। मुझे खुशी है कि वह हमारे लिए खेलता है। बुमराह का हाल में अहमदाबाद अपने घर पहुंचने पर फूलों से स्वागत किया गया था।

जब मैं शून्य पर आउट हुआ तो युवराज काफी खुश थे, अब उन्हें गर्व होगाः अभिषेक शर्मा

हरारे। भारत के सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने खुलासा किया कि जिंबॉब्वे के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण मैच में जब वह शून्य पर आउट हो गए थे तो उनके मेंटर (मार्गदर्शक) युवराज सिंह काफी खुश थे क्योंकि इस पूर्व ऑलराउंडर का मानना था कि यह अच्छी शुरुआत है। अभिषेक भारत की तरफ से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करते हुए खाता नहीं खोल पाए थे। जिंबॉब्वे ने यह मैच 13 रन से जीता। अभिषेक ने हालांकि शानदार वापसी करके दूसरे मैच में 47 गेंद पर 100 रन बनाए जिससे भारत यह मैच 100 रन से जीतने में सफल रहा। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने एक वीडियो पोस्ट किया है जिसमें अभिषेक ने कहा, मैंने कल (शनिवार) को उनसे (युवराज) बात की और मैं नहीं जानता कि जब मैं शून्य पर आउट हुआ तो वह क्यों बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि यह अच्छी शुरुआत है लेकिन अब वह मेरे परिवार की तरह खुश होंगे और उन्हें मुझ पर गर्व होगा। अभिषेक ने न सिर्फ क्रिकेट मैदान पर उनका कौशल सुधारने बल्कि मैदान के बाहर भी उनका समर्थन करने के लिए भारत की 2011 की विश्व कप की जीत के नायक युवराज का आभार व्यक्त किया।उन्होंने कहा, मैं आज जो भी हूं उसमें उनकी काफी अहम भूमिका रही है। उन्होंने मुझे यहां तक पहुंचाने में कड़ी मेहनत की। उन्होंने न सिर्फ क्रिकेट मैदान पर मेरा कौशल निखारा बल्कि मैदान के बाहर की जिंदगी में भी मेरी मदद की। रविवार को खेले गए मैच के बाद अभिषेक ने युवराज से बात की और वह इस युवा बल्लेबाज के प्रदर्शन से काफी खुश थे। युवराज ने कहा, शाबास, मुझे तुम पर गर्व है। तुम इसके हकदार थे। यह तो अभी शुरुआत है। आगे अभी इस तरह की कई पारियां खेलोगे।

अभिषेक के लिए फिर शुभ साबित हुआ शुभमन का बल्ला

हरारे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने पदार्पण मैच में शून्य पर आउट होने के बाद भारत के युवा बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने जिंबॉब्वे के खिलाफ दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में जिस बल्ले से शतक जड़ा, वह उन्होंने कप्तान शुभमन गिल से लिया था, जो जूनियर क्रिकेट के दिनों की तरह यहां भी उनके लिए शुभ साबित हुआ। अभिषेक ने 47 गेंद पर 100 रन की तूफानी पारी खेली जिससे भारत ने यह मैच 100 रन से जीत कर तीन मैच की श्रृंखला।-। से बराबर की। अभिषेक ने मैच के बाद गिल का विशेष आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, शुभमन का विशेष आभार जो उन्होंने सही समय पर मुझे अपना बल्ला दिया। मेरे लिए और टीम के लिए इस पारी की सख्त जरूरत थी। अभिषेक ने कहा, ऐसा अंडर-14 के दिनों से हो रहा है। मैं जब भी उनके बल्ले से खेला मैंने अच्छा प्रदर्शन किया और आज भी ऐसा हुआ। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा, मैं केवल उनके बल्ले से खेला जो मुझे काफी मिन्नत करने के बाद मिला। वह अपना बल्ला आसानी से नहीं देते हैं। जब मुझे लगता है कि वापसी के लिए मुझे उनके बल्ले से खेलना होगा, तब यह मेरे लिए अंतिम विकल्प की तरह होता है।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।